श्रद्धाञ्जलि

परम श्रद्धेय गुरुदेव अब इस असार संसार में नहीं रहे। सं० २०१० के माघ कृष्ण चतुर्दशी की रजनी में (सरदारपुरा जोधपुर) में उनका एकाएक देहावसान हो गया।

आपका जीवन एक उदात्त और महनीय जीवन था,। जिसका मूल्यांकन एवं चित्रांकन मेरे जैसे साधारण प्राणी के लिए कठिन ही नहीं किन्तु असंभव भी है। आपने मुझे एक नव-जीवन दिया, नयी दिशा और प्रेरणा दी तथा मेरे लौकिक भावों को मोड़ कर उसे यावत्संभव सुसंस्कृत और लोकोत्तर बनाया। इस प्रकार आपने मेरे जीवन मे जो क्रान्तिकारी परिवर्तन एवं अमित उपकार किया है, वह इस जन्म में तो क्या, जन्मान्तर में भी कभी भुलाया नहीं जा सकता। कहा भी है:—

अज्ञान तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

मुझे यह कहने में कुछ भी हिचक नहीं है कि आपके ही अनुपम सहयोग और सदुपदेश से इस तुच्छ पशुतुल्य जीवन में यत् किंचत् मानवता का मधुर-स्पर्श संभव हो सका। शास्त्रों में कहा गया है कि केवल जन्म दाता ही पिता नहीं होते, वरन् संस्कारदाता भी पिता कहे जाते हैं। इस दृष्टि से आप मेरे धर्म पिता ही नहीं किन्तु जीवन निर्माता भी थे। क्योंकि आपके ही संस्कार वल से इस जीवन का निर्माण हो पाया।

वि० सं० १९७९ से २०१० तक सिर्फ १९८४ के चातुर्मास को छोड़कर मुझे सदैव गुरुदेव की सन्निधि में रहने का सुन्दर व सुखद संयोग प्राप्त होता रहा। काल के इस अन्तराल में गुरुदेव ने मेरे बाल मानस को सदुपदेश रस से सींच यथा संभव विशाल या विराट् बनाने का जो एकान्त प्रयत्न किया, उसे मैं कभी भूल नहीं सकूंगा।

गुरुदेव के दिवंगत होने के बाद वि० सं० २०११ का चातुर्मास स्वनाम धन्य पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री हस्तीमलजी म० के साथ इसी जयपुर नगर में हुआ। गुरुदेव के संस्मरण उनदिनों मानस में बिल्कुल स्पष्ट और ताजे थे, जिन्हें लिपिवद्ध करने का विचार हुआ और यहीं इस शुभ कार्य का प्रारम्भ श्री प्रकाशचन्द्र जी बोथरा के द्वारा किया गया, जो मेरे लेखों के लिखने में सदा सहायक रहे हैं। वि० सं० २०१४ का चातुर्मास अजमेर में हुआ जहां छोटी सादड़ी के विद्यार्थी राजमलजी दक के द्वारा यह जीवन वृत्त संकलित कराया गया। जो कुछ संकलन में शेष रहा वह २०१५ के कांधला (उत्तर प्रदेश) के चातुर्मास में सत्येन्द्रकुमार जैन (ओवरसीयर) जो अब दिवंगत हो गए, के द्वारा लिखाया गया। इस प्रकार चिर प्रत्याशित गुरुदेव की इस जीवनी की पांडुलिपि तैयार हुई।

गुरुदेव के महान् आध्यात्मिक जीवन का यथार्थ चित्रण तो असंभव ही है फिर भी उनके वे संस्मरण जो मेरे स्मरण पथ में यथासंभव आ पाए, इसमें यथास्थान रखने का प्रयास कराया

है। वस्तुतः इस संस्मरण की समीक्षा या मीमांसा के सम्यक् अधिकारी तो पाठक ही हैं किन्तु इतना स्पष्ट कर देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं कि यह सारा प्रयास गुरुदेव के उपकारों के प्रति एक भाव भरी श्रद्धाञ्जलि के रूप में प्रदर्शित किया गया है। मैं इसके सिवा गुरुचरण में और अर्पित कर ही क्या सकता था? बस इतना ही कि "त्वदीयंवस्तु गोविन्द-तुभ्यमेव समर्पये।"

लक्ष्मीचन्द्र मुनि

सरलता के अमर राही

(जैन धर्म दिवाकर साहित्य रत्न आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज)

विक्रम सम्वत् १९८९ का चातुर्मास जोधपुर में था। उस समय स्वर्गीय श्रद्धेय मुनिराज श्री सुजानमलजी म० से मधुर मिलन हुआ था। उसी चातुर्मास के कारण इस तपोमूर्ति अनगारवर्य के पावन चरणों में कुछ अधिक १२० दिन व्यतीत करने का सुअवसर मिला था। यह सत्य है कि उस मधुर मिलन को आज लगभग २८ वर्ष समाप्त होने जा रहे हैं, तथापि वह मेरे लिए आज भी वैसा ही अनुभव में आ रहा है। उसी के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि हमारे श्रद्धेय मुनिराज जप, तप, त्याग, वैराग्य, सरलता एवं दया आदि सद्गुणों की सजीव मूर्ति थे। उनका जीवनोद्यान जपतप आदि के पुष्पों के सौरभ से सदा सुरभित रहा करता था। आत्मार्थी साधकों में इस महापुरुष को एक उच्च विशिष्ट और आदरास्पद स्थान प्राप्त था।

महामान्य श्री सुजानमलजी म० सरलता के तो भण्डार ही थे। उनका कण-कण सरलता के मधुर रस से व्याप्त था। मन वाणी और काय की त्रिवेणी में सरलता का प्रवाह सदा प्रवाहित रहा करता था। उस महापुरुष के जीवन में मैंने कभी बनावट नहीं देखी। कृत्रिमता से ये सदा दूर रहा करते थे। इनके हृदय में जो कुछ होता था रसना द्वारा वही बाहर आता था। हृदय

और रसना में विभेद नहीं था। दोनों में अद्वैतवाद के दर्शन होते थे। अद्वैतवादियों का अद्वैतवाद तो संभव है, सैद्धान्तिक या मौखिक ही रहता हो, किन्तु इस महामहिम योगीराज की मनवाणी में कभी द्वैतवाद नहीं देखा गया। हृदय की विचारणा से विपरीत उनकी रसना ने कभी कुछ नहीं कहा। मैं तो उन्हें सदा सरलता के अमर राही के रूप में देखता रहा हूं। जैन दर्शन का विश्वास है—

"सोही उज्जूभूयस्स" अर्थ स्पष्ट है। सरल जीवन ही शुद्धि को प्राप्त किया करता है। शुद्धि का अर्थ है आत्मिक पवित्रता। हमारे सम्माननीय श्री सुजानमलजी म० सर्वथा पवित्र आत्मा थे। उनका अन्तर्जगत् सर्वथा स्वच्छ था, निर्विकार था और निर्मल था। उसमें विकारों की गन्ध भी नहीं थी। सरलता के दिव्य प्रकाश से वह सदा जगमगाता रहता था। महामहिम महाराज श्री का जीवनोद्यान साधुगुणों के सुगन्धित पुष्पों से परिपूर्ण था। जहां वे सरलताप्रिय थे वहां स्पष्टवादिता निर्भयता लोकप्रियता आदि मानवीय गुणों से भी सम्पन्न थे। साम्प्रदायिकता के उस विषैले युग में भी वे सर्वप्रिय बने हुऐ थे। उनके व्यक्तित्व को सभी आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते थे। जोधपुर के चातुर्मास में मेरे साथ तथा मेरी शिष्य मण्डली के साथ उन्होंने जो सौहार्द्र और शिष्टतापूर्ण मधुर व्यवहार किया था, उसकी मधुर स्मृतियां आज भी मेरे मानसपटल पर अंकित हैं और अंकित रहेंगी।

स्वामीजी श्री सुजानमलजी महाराज

श्रद्धेय मुनिवर श्री सुजानमलजी महाराज वस्तुतः सुजान ही थे। उनकी धर्म चेतना सतत सजग एवं सक्रिय रही। अन्तर्मन में जो एकबार वैराग्य की ज्योति जली, तो वह जलती ही रही। न बुझी और न कभी धुंधली ही पड़ी।

मैंने उन्हें निकट से देखा है, देखा ही नहीं परखा भी है। जीवन के उत्तरार्ध में तन अवश्य ढल चुका था, किन्तु मन फिर भी अटल, अचल एवं सबल था। मुख मण्डल पर सर्वतः स्फुरित प्रसन्नता में वस्तुतः उनके अन्दर की आध्यात्मिक प्रसन्नता प्रतिबिम्बित होती थी।

पुराण पुरुष होते हुए भी विचारों में सहज उदारता थी और थी अद्भुत सजीवता। मैं और नहीं तो, अपनी ही बात कह सकता हूं। उनका स्नेह मुझे मुक्तभाव से मिला है, जो कभी भी विस्मृत नहीं हो सकेगा। जब भी कभी सेवा में पहुंचा, शीघ्रता होते हुए भी शीघ्र न लौट सका। उनका स्नेह रस धारा से आप्लावित वातावरण ही कुछ ऐसा था।

सत्पुरुषों का जीवन एक उपवन होता है। जिसमें विभिन्न सद्गुणों के पुष्प सदा सुरभित और विकसित रहते हैं। महापुरुषों का यह जीवन उपवन जन जन के मन को पुलकित करने के लिए सदा अनावृत द्वार रहा है, और रहेगा। आत्मनिष्ठ

साधु पुरुषों की जीवन गाथा, संसार के लिए अमृत रसायन है। वह अपनी सहज प्रेरणा से जनचेतना को असत से सत् की ओर एवं तमस से प्रकाश की ओर ले जाती रही है, लेजाती रहेगी। श्रद्धेय स्वामीजी की जीवन गाथा का अंकन इसी भाव को लेकर किया गया है।

एतदर्थ श्रीयुत् झाजी धन्यावादार्थ हैं। आशा है, आपकी कलम की कला कुछ और भी जीवन झांकियां इसी प्रकार प्रस्तुत करती रहेगी और करती रहेगी यथावसर मुमुक्षु जनता को लाभान्वित।

(दीपावली) उपाध्याय अमरमुनि

लोहामन्डी (आगरा)

स्वामीजी श्री सुजानमलजी महाराज

स्वामीजी सुजानमलजी म० जो बाबाजी म० के नाम से भी प्रसिद्ध थे, हमारी सम्प्रदायक के एक भव्य भूषण थे। वर्षों हमारा और आपका अतिशय निकट सम्पर्क रहा। मैंने आप को बहुत नजदीक से देखा एवं जाना है। आप दीक्षा और वय से बड़े होकर भी पद की दृष्टि से मेरा बड़ा सम्मान और स्नेह रखते थे। जैन सन्त की उज्ज्वल साधना के साथ आप में कुछ विलक्षणता भी थी। आप बड़े जपी, तपी और स्पष्टवादी सन्त थे। चाहे किसी को भला या बुरा जो भी लगे, मगर बाबाजी अपने मन की बात कहे बिना नहीं रहते थे। "मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्" की आदर्श उक्ति आप में पूर्णतः चरितार्थ होती थी।

यद्यपि बाबाजी म० आज हमारे सम्मुख नहीं हैं, फिर भी उनकी चहकती मुख मुद्रा और महदाचरणों से महकता उनका सुरभित साधु जीवन अभी भी स्मृति पटल पर अपना अमिट असर जमाए हुए है। आपका सरल हृदय उन तीखे स्पष्ट वचनों को भी मृदु और मधुर बना देता था, जिनका कि कभी २ आप भक्त समुदाय के लिए प्रयोग किया करते थे। आपका व्याख्यान जोशीला, प्रेरणाप्रद एवं स्फूर्तिदायी होता था। आप की वाणी में ओज, गांभीर्य एवं परिणाम की मधुरिमा ओतप्रोत रहती थी। जवांनी की तो बात ही क्या? ७० वर्ष के ऊपर का जीवन काल पाकर भी आप में तरुणों का सा उत्साह और शौर्य दमकता

दिखाई देता था। कभी निरस वातावरण आपको पसन्द नहीं आता। आप सदा प्रसन्नता और चहलपहल भरे वातावरण में रहना पसन्द करतेथे। जीवन के अन्तिम दिनों में जबकि आप सरदारपुरा (कांकरिया भवन) में स्थिरवास विराजमान थे, श्रोताओं की संख्या नगण्य होते हुए भी सदा व्याख्यान चालू रखते थे। आप का सिद्धान्त था कि अच्छी बातें कहने में कभी श्रोताओं की संख्या पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

जीवन के अन्तिम दिनों में उनकी हार्दिक इच्छा थी कि पूज्य जी मेरे पास रहें। ऐसा न हो कि मेरे महाप्रयाण की घड़ी में ये कहीं दूर चले जांय। संयोग से उनकी भावना के अनुकूल ही हुआ, क्योंकि महापुरुषों की भावना कभी खाली नहीं जाती।

पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी म० ने परिश्रम पूर्वक बाबाजी म० की जीवन झांकी प्रस्तुत करा अपनी आदर्श गुरुभक्ति का परिचय दिया है, जो सर्वथा श्लाघनीय एवं अनुकरणीय है। आज के श्रमण स्वामीजी म० के इस आदर्श जीवनवृत्त से कुछ प्रेरणा और ज्ञान प्राप्त कर जीवन को जाग्रत एवं ज्योतिपूर्ण बनायें, यही कामना है।

(दीपावली) उपाध्याय हस्तीमलजी म०

लालभवन जयपुर

सम्पादक के दो शब्द

"मुक्ति के पथ पर" नामक इस जीवनी के चरित्र नायक, श्रमण संघीय महास्थविर-स्वर्गीय श्री सुजानमल जी म० की पुनीत सेवा में, मैंने जीवन के कतिपय वर्ष व्यतीत किए। सामीप्य के उन सुखद दिनों में, मैंने जहाँतक भी उन्हें जाना और समझा, उससे अनुभव किया कि स्वामीजी एक महान् परमहंस और सदय हृदय संत थे। एक मनोरम रंगीन वातावरण में जन्म लेकर भी रंगीनियों से मनको सदा के लिए मोड़लेना, कोई साधारण और सरल बात नहीं है किन्तु आपने अपने दृढ़ संयमाराधन के द्वारा इस असंभव भाव को हस्तामलक वत् संभव करके दिखा दिया और दिखा दिया कि लगन शील आत्मान्वेषी के पथ के शूल भी निश्चय ही मनोरम फूल बन जाते हैं।

सन्त महात्माओं का जीवन वृत्त सद् गुणों और सदाचरणों का एक जीता जागता आदर्श प्रतीक अथवा मार्ग दर्शक महा मशाल होता है। उनकी प्रत्येक क्रिया और प्रवचनों में आत्म कल्याण के संग लोक हित की अनन्त भावनाएं ओतप्रोत रहती हैं, जो मुमुक्षु जीवों के साधना पथ में सम्बल और सहायक सिद्ध होती हैं। स्वामीजी ने जिस आदर्श साधुता को प्राणपण से निभाया और जीवन की अन्तिम घड़ी तक प्रमाद या कषायों से अपने को

सर्वथा सजग बनाए रक्खा, निस्सन्देह वे सारी बातें अभिनन्दनीय एवं अनुकरणीय हैं।

आप एक स्पष्टवादी सन्त थे। जो उचित समझते, धनी गरीब मूर्ख विद्वान् ऊँचनीच आदि का बिना विचार किए, समान रूप से सब को कह देते थे। यही कारण था कि आपके सामने दर्प या आडम्बर प्रदर्शन जितना सफल नहीं होता, सरलता और सादगी उससे अधिक सफल होती थी। आपका उपदेश भैषज तुल्य होता जो कड़वा जंचने पर भी जीवन के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होता था। आपके साधु सुलभ क्रोध में भी करुणा एवं उत्तेजना में भी ममत्व तथा माधुर्य की मन्दाकिनी प्रवहमान रहती थी। श्रद्धालु श्रावकों एवं भक्तों को स्वामीजी की संगति में एक अपूर्व आनन्द और उल्लास का अनुभव होता था। आप जहां भी रहते वातावरण को पुलकित और मधुर बनाए रहते थे। दुःख, शोक, चिन्ता एवं विषाद की दाल आपके पास नहीं गल पाती थी और अनवरत आप सहजानन्द स्वरूप को धारण किए रहते थे।

वि० सं० २०१० के माघ कृष्ण चतुर्दशी को जोधपुर में सहसा आपका देहावसान हो गया। यद्यपि अवस्था और व्यवस्था से आप मरणासन्न हो चुके थे किन्तु मरण काल पर्यन्त न तो आपको कोई रोगही हुआ और न पीड़ा ही। आप सर्वथा स्वस्थ और प्रसन्न थे। मगर 'नियत घड़ी मृत्यु की टाली नहीं जा सकती' के अनुकूल आपको भी महानीन्द की शरण लेनी पड़ी। आपके

सुशिष्य पं० मुनि श्रीलक्ष्मीचन्द्रजी म० ने आपकी प्रस्तुत जीवनी तैयार कराई। श्रीराजमलजी दक एवं स्व० सतेन्द्रकुमार जैन (कांधला) ने क्रमशः अजमेर और कांधले के चातुर्मास में इसका लेखन किया।

इस वर्ष उपाध्याय पं०रत्न श्री हस्तीमल जी म० के जयपुर चातुर्मास के शुभावसर पर, संयोग से वह पाण्डुलिपि मेरे सामने सम्पादन के हेतु आयी। मैंने नये सिरे से इसको लिखा और आवश्यक संशोधन परिवर्द्धन एवं सम्पादन किया। इस प्रकार प्रस्तुत जीवनी का प्रकाशन तथा सम्पादन सम्पन्न हुआ। प्रकाशन प्रबन्ध व संशोधनादि कार्यों में श्री भवरलालजी बोथरा का हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ।

समय के अभाव एवं मानव सुलभ प्रमादादि दोषों के कारण इसमें अपेक्षित चारुता और शुद्धता का समावेश नहीं हो पाया। एतदर्थ हमारा हृदय अपने प्रेमी पाठकों से क्षमा याचना करते हुए भी, संकुचित और भयभीत बन रहा है। किन्तु पूर्ण विश्वास है कि सहृदय पाठक अपना जानकर क्षमा अवश्यमेव प्रदान करेंगे।

अन्त में मैं स्वनाम धन्य उपाध्याय प्रवर, कविवर श्री अमर-चन्द जी म० को समस्त सद्भावना के संग हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पण करता हूँ जिन्होंने मेरी प्रार्थना के अनुकूल इस जीवनी पर अपना अनमोल अभिमत प्रदान करते हुए साथ ही मम वामन प्रतिभा को चांद स्पर्श करने का उत्साह और बल प्रदान कर अनु-प्राणित किया है।

अधिक क्या ? आदर्श महा पुरुष जन जीवन के लिए प्रेरणा दायक और उद् बोधक अथच अभ्यर्चनीय होते ही हैं। जैसे कहाभी है कि "सन्तः साश्चर्य भूताः जगति बहुमताः कस्य नाभ्यर्चनीयाः"

अगर पाठकों ने प्रस्तुत जीवनी केपठन एवं मनन से थोड़ा भी लाभ उठाया तो मैं अपने श्रमको सर्वथा सफल और सार्थक समझूंगा।

(लालभवन)

जयपुर — शशिकान्त झा

दीपावली — "शास्त्री"

प्रबन्धक के दो शब्द

"मुक्ति के पथ पर" नामक यह स्वामीजी का जीवनवृत्त सम्यगूज्ञान प्रचारक मण्डल के तत्त्वावधान में मेरे द्वारा प्रकाशित हो रहा है। मुझे अतीव प्रसन्नता है कि इस पवित्र कार्य में मैं अपना यत् किंचित् भी सहकार और सहयोग दे पाया। कार्याधिक्य और समय की कमी के कारण प्रकाशन की त्रुटियां क्षम्य और सह्य होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में श्री हस्तीमलजी सुराणा पाली ने ३००) श्री नौरतनमलजी मेहता (जोधपुर) की धर्म पत्नी ने १२५) सेठ रंगरूपमलजी सुराणा (जोधपुर) की धर्म पत्नी ने १०१) श्री वीरदीचन्दजी मुणोत अमरावती वाले की धर्म पत्नी ने १०१) तथा श्री हेमराजजी डागा (जोधपुर) की धर्म पत्नी ने ५०) रुपये का दान देकर अपनी सहज उदारता का जो परिचय दिया है, एतदर्थ मण्डल की ओर से उन सभी दाताओं का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि उन सबकी यह दान प्रवृत्ति सदा बनी रहेगी।

निवेदक
भंवरलाल बोथरा

जयपुर

स्व० श्री सुजानमलजी महाराज की जीवनी

उदय भूमि ....

जयपुर भारतवर्ष का एक प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगर है। यह पहले जयपुर राज्य (ढुंढार) की राजधानी था तथा आजकल राजस्थान की राजधानी है। यह अपने भव्य बनावट, सजावट और रंगीन दिखावट के कारण भारत वर्ष में प्रख्यात है। इसकी चित्ताकर्षक चौड़ी सड़कें, कलाकलित पण्य-वीथियां, चमचमाती बिजली की बत्तियां और स्थापत्यकला की बारीकियां बरबस दर्शकों को अपनी ओर आकृष्ट किए बिना नहीं रहती। इन्हीं विशेषताओं के कारण लोग इसे भारत का पेरिस भी कहते हैं।

अन्य उद्योग धंधों के साथ यहां जवाहिरात का धंधा भी प्राचीन-काल से ही चला आ रहा है। यद्यपि यहां जवाहिरात की खाने नहीं हैं फिरभी देश विदेश का माल आकर यहां बिकता है जिससे यहां का जौहरी बाजार जगमग और सजीव बना रहता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यद्यपि जवाहिरात के धंधों में मन्दी आयी और जयपुर पर भी उसका असर कम नहीं हुआ तथापि यहां पार्थिव रत्नों के परीक्षक और ग्राहकों की संख्या में कोई खास गिरावट नजर नहीं आती।

जयपुर धार्मिक दृष्टि से भी अपनी खास विशेषता रखता है। यहीं जेठमल जी चोरड़िया जैसे श्रावक कवि और नथमल जी दीवान जैसे धर्म प्रभावक अधिकारी भी हो गये हैं। धर्म भावना के आकर्षण से समय २ पर यहां संत महात्माओं का शुभागमन होता रहता है। स्वयं भगवान महावीर ने भी इसी भक्तिभावना की प्रेरणा से राजगृह में चौदह चातुर्मास किए थे। जयपुर नगर भी बड़े बड़े संत एवं आचार्यों के चरणरज से बराबर पावन होता चला आरहा है। तपस्वी श्री बालचन्दजी म० सं० ५३ से ५६ तक स्थिरवास में यहीं विराजे। बाद में श्री रतनचन्द जी म० की सम्प्रदाय के आचार्य श्री विनयचन्द्र जी म० १८ वर्ष तक यहां स्थिर वास रहे। इस तरह जयपुर कितने ही वर्षों तक संत समागम का पावन तीर्थ धाम सा बना रहा और आज भी बना हुआ है।

जयपुर समाज रूपी खान से निकले हुए कई मुनिरत्न हुए हैं

जिनमें से एक हमारे चरित्रनायक भी हैं। आपका जन्म १९३८ आश्विन कृष्णा ६ का है। आपके पिता ओसवाल वंशज पटनी गोत्रीय जौहरी थे जिनका शुभ नाम मालीरामजी तथा मातु श्री का राखाबाई था। आपके पिताने दो विवाह किए थे। प्रथम पत्नी के आप दो पुत्र थे। बड़े का नाम कस्तुरचन्द जी तथा छोटे का नाम सुजानमलजी था। पहली पत्नी की मृत्यु हो जाने के बाद दूसरा विवाह बीकानेर निवासी जवाहरमल जी सावणसुखा की लड़की के साथ हुआ। सावणसुखा भी अटूट श्रमी और दृढ़ लगन वाले एक प्राचीन सस्कृति के उपासक व्यक्ति थे। विवाह होने के थोड़े समय के बाद ही आपके पिता का स्वर्गवास हो गया।

बाल्यकाल . . . .

जैसे प्रभात दिन का परिचायक होता है वैसे ही बचपनभी व्यक्ति की झलक का प्रतीक माना जाता है। कहावत भी है कि-होनहार बिरवान के होत चीकने पात। आपके जन्म के थोड़े समय बाद ही आप की मां का स्वर्गवास होगया और घर वालों ने आपको दूसरों के पास रखकर पालन पोषण कराया। इसतरह माता पिता के लाड़ प्यार व दुलार से वचित रहकर आपका बाल्यकाल बीता। अपने बाबा साहब श्री भूरामल जी पटणी के प्रिय सहवास मे आप अपना समय व्यतीत करने लगे। करीब ६–७ वर्ष की अवस्था में आपको पाठशाला भेजा गया। आपके बड़े भाई कस्तूरचन्दजी सेठ सुजान-मल जी के पास रहते थे, वे उनका कार्य भी करते और उनके

साथ धर्म ध्यान में भी रहते थे वर्तमान में गट्टूलाल जी पटणी उस परिवार में मौजूद हैं जो आपके सांसारिक सम्बन्ध में भतीजे है। आप जयपुर संघ के एक सुयोग्य श्रावक हैं।

पटणी परिवार में धर्म प्रवृत्ति प्रारंभ सेही विद्यमान थी इसलिए हमारे चरित्रनायक पर भी उसका प्रभाव पड़े विना नहीं रहा। शहर में संत रहने पर उनकी सेवा में प्रतिदिन जाना, व्याख्यान सुनना, उनके बताये धार्मिक बातों को सीखना, सत्प्रवृत्तियों में रुची बढ़ाना और धार्मिक क्रियाओंका अभ्यास करना, यह आपकी सहज प्रवृत्ति थी। आप स्वभाव से चंचल एव निर्भीक थे, क्योंकि कि आपको जन्म से ही कष्टों का सामना करना पड़ा था। संकटों का सामना करने से ही मानव जीवन मे दृढ़ता आती है और मनुष्य बड़े से बड़े दुःखों का सामना हंसकर कर लेता है। संसार के जितने भी महापुरुष हुए है, उन्हें सकटों ने ही प्रख्यात बनाया। महावीर, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, राम कृष्ण आदि कोई भी इतने विख्यात नहीं होते अगर संकटों से उन्हें पाला नहीं पड़ा होता और जो वे हंसकर उन्हें गले लगाये नही होते। स्वर्ण अग्नि में तपकर ही कुन्दन स्वरूप को प्राप्त करता है।

वैराग्य के पथ पर ....

विक्रम सं० १६५० में तपस्वी श्री बालचन्दजी म० पं० मुनि-श्रीचन्दनमलजी म० तपस्वी श्रीखींवराजजी म० तपस्वी श्रीभगवान-दास जी म० और हंसराज जी म० का चातुर्मास जयपुर नगर में

था। आप समय २ पर मुनिराजों की सेवा में जाया करते और ज्ञान ध्यान की बातों में रस लेते थे। तपस्वी श्री हंसराज जी म० ने आपको विशेष रूप से धर्म की ओर प्रवृत्त किया। संसार की असारता का स्वरूप समझाया और किस तरह सांसारिक सम्बन्ध स्वार्थ पूर्ण एवं वासनामय है इसका रहस्य बताया। मुनिश्री के उपदेश से आपके हृदय में वैराग्य के भाव अंकुरित हुए। फलतः आपने अपने स्वजनों से कहाकि मैं चातुर्मास समाप्ति के पश्चात तपस्वी श्री बालचन्द जी म० की सेवा में रहकर अपना जीवन सार्थक करूगा, धर्म भीरु आपके संरक्षकों ने भी आपके इस विचार का स्वागत किया और आपको तपस्वी जी की सेवा में जाने की अनुमति प्रदान करदी। तदनुसार चातुर्मास समाप्त होने के बाद आप तपस्वी श्री बालचन्द जी म० के साथ मायिक प्रपंचों को छोड़ जीवन ज्योति जगाने के लिय जयपुर से चलपड़े।

तपस्वी जी के साथ में रहकर आप मुनि जीवन का अभ्यास एवं अनुभव अपने जीवन में उतारने लगे और साधना की कठोर क्रियाओं को हृदयंगम करने लगे। कहा भी है कि—

"साधु जीवन कठिन है, जैसे पेड़ खजूर।
चढ़े तो मीठे फल चखे, गिरे तो चकनाचूर।"

जो साधु बनकर साधुता को नहीं अपना पाता वह अपना दोनों लोक बिगाड़ता है। अतः आप साधु प्रतिक्रमण, २५ बोल, ५ समिति और ३ गुप्ति का थोकड़ा आदि का अभ्यास करने

लगे। इस तरह से आपने अल्प समय में ही साधु जीवन की आवश्यक क्रियायें सीखलीं। तपस्वी जी जयपुर से विहार कर किशनगढ़, अजमेर आदि क्षेत्रों को फरसते हुए नागोर पधारे। नागोर संघ के प्रमुख श्रावकों ने जिनमें उदयदान जी सिंघवी समरथमल जी सुराणा, मुकनमल जी सुराणा, राम जीवन जी सुराणा, सरदारमल जी पुगलिया, दीपचन्द जी वैद, मनसुख जी श्रावगी, तनसुख जी श्रावगी आदि ने मिलकर तपस्वी श्री बालचन्द जी म० से प्रार्थना की कि आपके पास में रहने वाले बाल वैरागी श्री सुजानमल जी का हमारे यहां दीक्षा महोत्सव होना चाहिए तथा यह लाभ हमारे संघ को ही मिलना चाहिए।

साधु जीवन में प्रवेश ....

तपस्वी श्री बालचन्द जी म० ने दीक्षा के लिए अनुमति प्रदान करदी इस समाचार से नागोर के श्रावकों में हर्ष की लहर दौड़ गई। श्रावकगण दीक्षा महोत्सव की तैयारी में संलग्न हो गए। उधर जयपुर निवासी सेठ सुजानमल जी के दीक्षा लेने के भाव हैं, ऐसी तपस्वी जी के सुनने मे आया तो तपस्वीजी ने जयपुर सन्देश भिजवाया कि अगर सेठ जी अभी दीक्षा लेते हों तो इनकी दीक्षा कुछ समय के लिए रोक दी जाय, मगर जवाब में सेठ जी ने कहलाया कि ऐसे उत्तम कार्य में विलम्ब न किया जाय। मैं यदि बाद में दीक्षा लूंगा तो मुझे उनको वन्दना करने में संकोच न होगा। इसके बाद आपके दीक्षा का शुभ मुहूर्त निकलवाया गया

जो सं. १९५१ चैत्र शुक्ला दशमी का तय किया गया । तदनुसार भण्डारियों की बगीची लालसागर के पास विशाल वटवृक्ष के नीचे अपार जन मेदिनी के बीच चैत्र शुक्ला दशमी को तपस्वी श्री बाल चन्द जी म० ने आपको श्रमण दीक्षा प्रदान की और तपस्वी श्री हंसराज जी म० की नेश्राय में आपको शिष्य घोषित किया । इस तरह जयपुर के गुलाबी वातावरण में पलने वाले आपने सहर्ष कंटीले पथपर चलना स्वीकार कर लिया । दीक्षा प्रसंग पर बाहर के सैकड़ों श्रावक श्राविकायें उपस्थित थे जिनमें सेठ सुजानमल जी और आपके सहोदर भाई श्री कस्तूरचन्दजी भी थे । १३ वर्ष की किशोरावस्था में आप साधु बन साधुता की साधना करने लगे ।

आचार्य श्री विनयचन्द्र जी म० का १९५१ का चातुर्मास जयपुर में था । सेठ सुजानमल जी तथा आपके सहोदर भाई कस्तूरचन्द जी ने जिनको वैराग्य का रंग काफी पहले चढ़गया था, आश्विन शुक्ला त्रयोदशी को आचार्य श्री विनय चन्द जी म० से भगवती दीक्षा ग्रहण की । इस प्रकार इस वर्ष जयपुर नगर से तीन दीक्षायें सम्पन्न हुईं । सेठ सुजानमलजी म० अवस्था से वृद्ध थे किन्तु विचार तथा उत्साह से युवकों से कम नहीं थे । कस्तूरचन्द जी का तो कहना ही क्या तरुणाई जिनमे कूट कूट कर भरी थी ।

श्रुतका अभ्यास . . . .

जैसे दीपक के बिना घर की शोभा नहीं वैसे ही ज्ञान के बिना नरतन की भी नहीं है। कोई कैसा भी क्यों न हो यदि उसमें ज्ञान नहीं है तो उसका जीवन भार रूप या एक बोझा ही है। मुनि श्री की अवस्था अभ्यास करने योग्य थी, अतः आप पं० मुनि श्री चन्दनमल जी म० के पास रहकर श्रुतज्ञान का अभ्यास करने लगे। दश वैकालिक, वीरस्तुति, नमीराजर्षि आदि उत्तराध्ययन सूत्र के कई अध्ययन कंठस्थ कर लिए। थोकड़ों में नवतत्व, लघु दण्डक, ९८ बोल, ३३ बोल का थोकड़ा, विरह द्वार, श्वासोच्छ्वास संज्ञापद आदि २५-३० थोकड़ों का अभ्यास किया। किन्तु आपकी विशेष प्रवृत्ति संगीत की तरफ थी अतः स्तवन, उपदेशी पद, छन्द कवित्त आदि का अभ्यास भी किया। पं० मुनि चन्दनमल जी म० के द्वारा आचारांग, सूत्र कृतांग, अंग, उपांग आदि शास्त्रों की वाचना ली। भक्तामर, कल्याण मन्दिर अन्तरिक्ष आदि स्तोत्रों को कंठस्थ किए। आप प्रतिदिन प्रातःकाल में भक्तामर का पाठ किया करते थे। रात्रि में प्रतिक्रमण के पश्चात् कल्याण मन्दिर, अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ और दो चार स्तवन अवश्य पढ़ते। महिने में चार उपवास और चैत्र एवं आश्विन में आयंबिल ६ दिनों तक करते तथा साथ में नवपद जी का जप भी करते थे। इसकी प्रेरणा आप आगन्तुक भाई बहिनों को भी दिया करते थे। आपकी विशेष रुचि व्याख्यान सुनने और देने में रहती थी। इस सम्बन्ध में आप

कभी कभी फरमाया करते थे कि—एक समय आचार्य श्री विनय चन्द्र जी म० की सेवामें श्री धर्मदासजी म० की सम्प्रदाय के आचार्य श्री माधवमुनिजी म० पधारे हुए थे । आप एक प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे. आपके प्रवचन भी शास्त्रीय एव श्रद्धा को सुदृढ़ बनाने वाले होते थे। आपका कहना था कि मैं मुनिश्री का व्याख्यान सुनने के लिए उपवास आदि का पारणा भी छोड़ देता था।

दीक्षा लेकर आपने विक्रम सं० १६५१ का चातुर्मास तपस्वी श्री बालचन्द जी म० व प० मुनि श्री चन्दनमलजी म० के साथ जोधपुर में, सं० ५२ का पीपाड़ में, सं० ५३ का अपने जन्म स्थान जयपुर में किया। सं० १६५३ से ५६ तक तपस्वी श्री बालचन्द जी म० जयपुर में स्थिरवास विराजगए और बाद में पं० मुनि श्री चन्दन-मलजी म० जयपुर से विहार कर मारवाड़ पधारे, तब आपने उनकी सेवामें सं० ५४ में पाली स० ५५ में ब्यावर पुनः स० ५६ में जयपुर में चातुर्मास किया । तपस्वी श्री बालचन्द जी म० का वैशाख कृष्ण १३ की रात्रि को स्वर्गवास हुआ। उसके बाद तपस्वी श्री हंसराज जी म० का १६६७ फाल्गुन कृष्ण ११ को जोधपुर सिंहपोल में स्वर्गवास हुआ। इस तरह आप को गुरुमहाराज की सेवा का सुयोग १६ वर्ष तक मिला। सं० १६५६ से १६६७ तक के सभी चातुर्मास प० मुनि श्री चन्दन मल जी म० एवं हंसराज जी म० की सेवा में सम्पन्न किए।

आचार्य श्री विनयचन्द जी म० सा० की सेवा में....

आचार्य श्री विनयचन्द जी म० विक्रम सं० १६५८ से नेत्र-शक्ति क्षीण होजाने के कारण ठा० ५ से जयपुर में स्थिरवास विराजमान थे। कविराज मुनि श्री सुजानमल जी म० का १६६८ फाल्गुन शुक्ला में स्वर्गवास हुआ तथा मुनि श्री गुलाबचन्दजी म० का स्वर्गवास तो पहले ही हो चुका था। अतएव पूज्य श्री की सेवा में दो ही मुनिराज रहे श्री शोभाचन्द्र जी म० और हरकचन्दजी म०। उनमें भी शोभाचन्द जी म० के गिरजाने के कारण हाथ व पांव में चोट आ गई थी—इसलिए सेवा में केवल एक सन्त रह जाने के कारण बड़ी अड़चन पड़ती थी। अतः जयपुर से पं० मुनि श्री चन्दनमल जी म० की सेवा में मारवाड़ सन्देश भेजा गया। सन्देश पहुँचते ही पं० मुनिश्री ने आपको आज्ञा प्रदान की कि तुम यथाशीघ्र आचार्य श्री की सेवामें जयपुर पहुंचो। पं० मुनि श्री की आज्ञा को पाकर साधु मर्यादा के अनुसार आप प्रति-दिन शीघ्र लम्बा विहार कर आचार्य श्री की सेवामें जयपुर पहुंच गए। दो चातुर्मास सं० ६६ व ७० में आचार्य श्री विनयचन्द जी म० की सेवा में व्यतीत किए। शोभाचन्द जी म० के ठीक होने पर आप पुनः पं० मुनिश्री की सेवामें रहने लगे।

इसके बाद सं० १६७१ का जोधपुर सं० ७२ का रीयां और सं० ७३ का चातुर्मास अजमेर में किया। चातुर्मास समाप्त होने के

बाद यहां से विहार कर ब्यावर पधारे। वहां पर हुक्मीचन्द्र जी म० को सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री देवीलालजी म० आदि सन्त विराजमान थे। हुक्मीचन्दजी म० की सम्प्रदाय में कुछ वर्षों से आन्तरिक क्लेश चल रहा था। उस क्लेश को मिटाने के लिए कई संत और प्रमुख श्रावक प्रयत्नशील थे। आचार्य श्रीलाल जी म० ने साम्प्रदायिक क्लेश को मिटाने के लिए अपनी तरफ से पं० मुनि श्री चन्दनमल जी म० को मध्यस्थरूप में स्वीकार किया किन्तु दूसरी ओर से सन्तोषजनक उत्तर में विलम्ब रहा। अतः आपने सैंधड़े की तरफ विहार कर दिया। कोटड़ा आदि गांवों को फरसते हुए माघ कृष्णा ४ को आप काबरा पधारे। वहां पर आपने आहार लिया और आहार के बाद धूप में बैठकर तेल की मालिश कराने लगे। थोड़ी देर बाद वमन हुई—आपने नमस्कार महामन्त्र का ध्यान किया। सेवा में रहे संत भोजराज जी म० औषधि के लिए गृहस्थ के घर गए। इतने में ही आपकी अमर आत्मा स्वर्गलोक को सिधार गई।

इस घटना के समय हमारे चरित्रनायक, खींवराजजी म० के साथ नजदीक के किसी दूसरे ग्राम में थे। समाचार मिलतेही आप वहां पधारे। गुरु महाराज का स्वर्गवास होने से सब सन्तों के हृदय पर वज्राघात सी पीड़ा पहुंची किन्तु कोई चारा नहीं था। आपने परिनिर्वाण का कायोत्सर्ग किया और अपने दिल को स्थिर व मजबूत बनाकर आगे के लिए विहार कर दिया।

आपने अपना अधिकांश जीवन पं० मुनि श्री की सेवामें रहकर

निर्माण किया था। अतएव जनता की दृष्टि में तो यही समझा जाता था कि आप चन्दनमल जी म० के ही शिष्य हैं।

श्री चन्दनमल जी म० के स्वर्गवास होने के पश्चात् तपस्वी श्री खींवराज जी म०, आप, मुनि श्री भोजराज जी म०, मुनि श्री अमर चन्दजी म० ठाणा ४ से पीपाड़ पधारे। वहां पर आचार्य श्री शोभा चन्द्र जी म० विराजमान थे। चन्दनमलजी म० जैसे प्रमुख सन्त की सम्प्रदाय में कमी होने के कारण शोभाचन्द्र जी म० को भी खेद था। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म० ने चन्दनमलजी म० के दुःख दर्द के समाचार मालूम किए। वहां से सन्तों का अलग अलग विहार होगया। खींवराज जी म० वहां से पाली पधारे। पालीसंघ का चातुर्मास के लिए विशेष आग्रह होने से आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म० की आज्ञा प्राप्त कर पाली विराजे। चातु-र्मास में लोगों ने धर्मध्यान अच्छा किया किन्तु चातुर्मास समाप्ति के दिनों में खींवराज जी म० को बुखार व दस्तों की तकलीफ हो गई जिससे आपका चातुर्मासिक विहार न हो सका। तकलीफ बढ़ती गई। आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म० की सेवामें संघ ने भोपा-लगढ़ समाचार भेजे। पू० श्री शोभाचन्द्रजी म० भी चातुर्मास समाप्त होने पर जोधपुर पधारे। इधर मुनिश्री की तकलीफ विशेष बढ़ जाने से मुनिश्री ने संथारा कर लिया। दो तीन पहर का संथारा आया आखिर मगसर वदी १२ को २ बजे आपका स्वर्गवास होगया।

आपके बाद श्रीसुजानमलजी म० श्री भोजराजजी म० और श्री

अमरचन्दजी म० तीनों सन्त विहारकर मगसर सुद ६ को जोधपुर पहुँच गए और बाद में पूज्यश्री के साथ जयपुर की तरफ विहार किया।

१९७५ का चातुर्मास जयपुर में किया। चातुर्मास समाप्ति के बाद पूज्यश्री जयपुर के बाहर नथमलजी के कटले में पधारे और वहां से सवाईमाधोपुर में विराजिता महासती मल्लाजी को दर्शन देने के लिए विहार किया। आप भी पू० श्री के साथ माधोपुर, कोटा आदि क्षेत्रों में विचरण करते रहे। इधरको ओर आते समय पू० श्री कुछ संतों को जयपुर छोड़ आए थे। अतएव वहां से लौटते समय पुनः जयपुर पधारे। गर्मी की मौसम और पूज्यश्री के शरीर में जलन की तकलीफ होने से जयपुर संघ ने अपने यहां चातुर्मास के लिए आग्रह किया और कारणवश सम्वत ७६ का चातुर्मास भी पूज्य श्री की सेवा में जयपुर ही हुआ।

विक्रम सं० १९७७ का चातुर्मास आचार्य श्री शोभाचन्द जी म० की सेवा में पीपाड़ नगर में किया। यह चातुर्मास गाढ़मलजी केसरीमलजी की पोल में था। सबसे पहले आचार्यश्री शोभाचन्दजी म० शास्त्रीय प्रवचन करते थे। बाद में स्वामी श्री सुजानमलजी म० चौपाई फरमाते थे। दोपहरी की चौपाई भी आप ही बांचते थे। आश्विन से रात्रि में केशवदास कृत रामायण का वाचन चालू किया। यह चौधरीजी हथाई में होता था। रामायण की कथा वैसे भी श्रोताओं के लिए रसप्रद होती है, फिर आप

अनेक ढ़ाल दृष्टान्त आदि के साथ फरमाते जिससे जैन व जैनेतर भाई वहिनों की संख्या अच्छी हो जाती थी। चातुर्मास में मुनि श्री भोजराजजी म० मुनि श्री अमरचन्दजी म० मुनि श्री लालचन्द जी म० मुनि श्री सागरमलजी म० तथा आप साथ विराजमान थे।

चातुर्मास समाप्त होने के बाद सभी संत रीयां पधारे। रीयां से पू० शोभाचन्द जी म० बीलाड़ा होते हुए अजमेर पधारे और स्वामी जी म० भोपालगढ़ नागोर होते हुए हरसोलाव पधारे। आपके पधारने से हरसोलाव में धर्म ध्यान का अच्छा रगरहा, आपने होली चातुर्मास वहीं किया। दोपहरी में अर्हद्दास चरित्र फरमाते थे जिसका प्रभाव श्रोताओं पर अच्छा पड़ता था। मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी को वैराग्य का रंग यहीं से शुरू हुआ जो उत्तरोत्तर गाढ़ा ही होता गया। व्याख्यान में लोगों की संख्या अच्छी होती थी। धोकलचंद जी ओसतवाल साधुमार्गी होते हुए भी मुह-पत्ती बांधने में संकोच करते थे तथा कुछ उनकी शंका भी थी। स्वामीजी ने आगम प्रमाण से तथा युक्तिपूर्वक उनको सम-झाया जिससे उन्होंने मुंहपत्ती बांधना स्वीकार कर लिया। यहां से विहार कर धर्म प्रचार करते हुए अजमेर पधारे। वहां आयंबिल की ओली की तपस्या की फिर चातुर्मास के लिए नागोर पधारे।

विक्रम सम्वत् १९७८ का चातुर्मास ठाणा ३ से नागोर नगर में हुआ साथ में मुनि श्री भोजराजजी म० तथा मुनि श्री अमर-

चन्दजी म० थे। मुन्नीमलजी बच्छावत के नोहरा में विराजना हुआ। यद्यपि बच्छावतजी सा० मन्दिर आम्नाय के श्रावक थे फिर भी स्वामी जी की तरफ आपका विशेष आदर था। अतः जब जब भी स्वामी जी म० नागोर पधारते तो आप प्रमोदभाव से शय्यातर का लाभ लेते। चारों महीने स्वामी जी सुबह और दोपहर व्याख्यान फरमाते रहे। चातुर्मास में भाई बहनों ने धर्म ध्यान भी ठीक किया। पर्यूषण पर्व की साधना के लिए सतारा निवासी सेठ चन्दनमल जी मूथा तथा गुलेदगढ़ निवासी सेठ लालचन्दजी मूथ. अपनी मातुश्री के साथ सेवा में आये। जोधपुर, पीपाड़, पाली आदि के अन्य भाई भी आए। स्थानीय श्रावकों ने आगन्तुक भाई बहनों की सेवा का लाभ ठीक लिया। श्री हीराचन्दजी सिंघी गणेशमलजी सुराणा केसरीमलजी सुराणा, कानमलजी सुराणा, बादरमलजी सुराणा तथा गोपी बाई आदि प्रमुख श्रावक श्राविकाओं ने इस चातुर्मास में आनन्द उत्साह के साथ भाग लिया।

चातुर्मास समाप्त होने के बाद, मुंडवा, खजवाना, हरसोलाव, आदि गांवों में धर्म प्रचार करते हुए आप भोपालगढ़ पधारे। उधर अजमेर से चातुर्मास समाप्त करके आचार्यश्री शोभाचन्द्र जी म० ठा० ५ से पुष्कर, थांवला, पादु आदि गांवों को फरसते हुए मेड़ता पधारे। वहां से पू० श्री ने भोपालगढ़ सन्देश भिज-वाया कि आप नागोर आकर मिलें। तदनुसार आप भोपालगढ़ से विहार कर खजवाना पहुंचे। वहां पू० श्री शोभाचन्दजी म०

मेड़ता से विहार कर पधार गए। खजवाना में आपने पूज्यश्री के दर्शन किये।

आचार्य श्री के साथ थली में . . . .

आचार्यश्री शोभाचन्दजी म० ने कहा कि मेरी इच्छा थली फरसने की है तो आपने सहर्ष फरमाया कि आप जैसे विद्वान् सन्तों को धर्म श्रद्धा वृद्धि के लिए अनजान और कठोर स्थानों में अवश्य पधारना चाहिए। तदनुसार सन्तों के भाव निश्चित होजाने पर सबके सब नागोर पधारे। नागोर से गोगोलाव, अलाय देशनोक, भीनासर आदि क्षेत्रों को फरसते हुए बीकानेर पधारे। ये सब क्षेत्र सतों के लिए नये थे। मार्ग बड़ा ही कण्टकाकीर्ण तथा रेती के बड़े २ टीलों वाला था। इन क्षेत्रों में आपको कई नये नये अनुभव भी हुए जिनका आप समय समय पर जिक्र किया करते थे। आचार्यश्री कुछ दिनों तक बीकानेर विराजे। बीकानेर की जनता पर आपका अच्छा प्रभाव रहा। वहां से विहार कर सब सन्त पुनः नागोर पधारे। होली चातुर्मास नागोर में ही हुआ। यहां से पूज्यश्री शोभाचन्द जी म० ने जोधपुर की तरफ विहार किया और आप चैत्र शुक्ला में आयंबिल ओली जो आप प्रति वर्ष चैत्र और आश्विन में ९ दिनों तक किया करते थे, आजाने के कारण ठा० ३ से नागोर में विराजे। ओली समाप्त होने पर आपने नागोर से विहार किया और

वैसाख सुद ६ तक पूज्य श्री की सेवा में जोधपुर पहुंचे। जोधपुर में आचार्य श्री संघवी कस्तुरचन्दजी के सुपुत्र कानमलजी के मकान में विराज रहे थे। यहां पर नथमलजी चामड और हुकमीचन्दजी वकील की वहन सुगनकुमारीजी की दीक्षा लालकुंवरजी के पास हुई। कल्प पूरा हो जाने पर महामन्दिर पधारे। वहां पर जोधपुर संघने आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म० की सेवा में चातुर्मास के लिए आग्रह भरी विनती की। पूज्यश्री ने भी जोधपुर संघ की विनती को स्वीकार करली। अतः वि० स० १९७९ का चातुर्मास पूज्य श्री की सेवा में जोधपुर सिंहपोल में हुआ। इस चातुर्मास में हरसोलाव निवासी बच्छराजजी बाग-मार की धर्म पत्नी अपने लूणकरण जी और शायरचन्दजी दोनों पुत्रों को लेकर पूज्य श्री की सेवा में उपस्थित हुई। और रहने लगी। मुनि श्री सुजानमल जी म० का १९७७ का होली चातुर्मास हरसोलाव में हुआ था, उस समय लूणकरण जी की माता और लूणकरण जी के हृदय में वैराग्य के भाव पैदा हो गए थे। उसी भावना को लेकर माता जी जोधपुर आयी थी और चार महिने गुरुदेव की सेवा में रहने से उन वैराग्य के अंकुरित भावों ने वृक्ष का रूप धारण कर लिया।

चातुर्मास समाप्त होने के बाद पूज्यश्री ने सब सन्तों के साथ बड़े ठाट बाट के से महामन्दिर की ओर विहार किया। यहां पर पू० श्री के तकलीफ हो जाने के कारण उपचार के लिए विशेष दिनों तक विराजना पड़ा। स्वास्थ्य ठीक हो जाने पर शाह

नौरतनमल जी भांडावत, चन्दनमल जी मूथा छोटमल जी डोशी तपसीलाल जी डागा स्वरूपनाथ जी मोदी, केवलनाथ जी मोदी, राजमल जी मुणोत, मिलापचन्द जी फोफलिया आदि प्रमुख श्रावकों ने स्थिरवास विराजने के लिए प्रार्थना की। पू० श्री ने अपने शरीर की स्थिति देखते हुए क्षेत्र की अनुकूलता और श्रावक श्राविकाओं की भक्ति को ध्यान में रखकर स्थिरवास विराजने की स्वीकृति देदी।

दीक्षा महोत्सव ....

श्रावकों ने लूणकरणजी की दीक्षा का शुभ मुहूर्त १६७६ मिगसर सुदी पूर्णिमा निश्चत किया। दीक्षा महोत्सव की तैयारी शहर में चल रही थी। प्रतिदिन सिंहपोल में धार्मिक मंगल गान गाए जाते तथा प्रभावनाएं होती। ऐसा कार्यक्रम कुछ दिन तक चलता रहा। इसके वाद मिगसर सुद पूनम को जौहरीमल जी चोरडिया के घर से दीक्षार्थी को शिविका (पालकी) में विठाकर शहर में घुमाते हुए नगर के वाहर मुथाजी के मन्दिर जुलूस के साथ लेआए। वहां पर आचार्य श्री शोभाचन्दजी म० गुरुवर श्री सुजानमल जी म० श्री भोजराज जी म० आदि सभी संत, केसरकुंवरजी, छोगाजी सिरेकुंवरजी, लालकुंवरजी, अमरकुंवर जी आदि सतियां भी उपस्थित हो गयी थी, भाई और वहनों से मन्दिर का प्रांगण भरा हुआ था। दो दीक्षाएं और वहनों की भी

थी जो महामन्दिर से आई थी। इसतरह तीन दीक्षार्थी हो गए दोबहनें तथा एक भाई।

दीक्षा का समस्त व्ययभार मद्रास निवासी सेठ मोहनमल जी चोरडिया की मातुश्री की ओर से उठाया गया था। जिसकी अनुमति उन्होंने जोधपुर श्रावक संघ से पहले ही सविनय प्राप्त करली थी।

दीक्षार्थियों के लिए वस्त्र, पात्र, रजोहरण आदि आवश्यक सामान जुटाने का कार्य सदा से छोटमल जी दोशी के ऊपर ही निर्भर रहता था। दीक्षा महोत्सव में प्रभावनादि सामाजिक कार्य-क्रम के संचालक भी प्रायः दोशी जी ही रहा करते थे। जो काम दोशी जी के जिम्मे होता उसे वे पूर्ण तत्परता, लगन और उत्साह के साथ करते थे। वस्तुतः दोशी जी और मुथा चन्दनमल जी उस समय जोधपुर श्रावक संघ के लिए संख और पुष्कली के समान माने जाते थे। संघ का आप युगल श्रावकों पर पूर्ण स्नेह और विश्वास था और आप दोनों भी संघ हित के लिए अपने को न्योछावर किए रहते थे।

दीक्षार्थियों ने अपने २ कपड़े बदले और साधु वेश धारण करके पूज्यश्री की सेवा में उपस्थित हुए। पूज्यश्री ने सबसे पहले नमस्कार महामंत्र पढ़ा बाद में *सामायिक चारित्र की विधि* करवाई। इसके पश्चात् लूणकरण जी की माता से आज्ञा प्राप्त करके "करेमि भते का पाठ पढ़ा कर विशाल जनसमूह के सामने ठीक १२ बजे मुनि धर्म की दीक्षा दे दी। दीक्षा के समय लूणकरण जी का नाम

परिवर्तन कर "लक्ष्मीचन्द" जी रखा गया और उन्हें श्री सुजानमल जी म० के नेश्राय में शिष्य रूप से घोषित किया गया। दोनों बहनों में से एक को महासतीजी श्री छोगा जी म० के नेश्राय में और एक को महासती जी श्री छोटे राधाजी के नेश्राय में घोषित कियागया। दीक्षा प्रसंग पर सतारा निवासी सेठ मोती लाल जी मुथा, गुलेदगढ़ निवासी लालचन्दजी और उनके माताजी, पाली पीपाड, रीयां, भोपालगढ़ आदि के बहुत से भाई बहिन भी उपस्थित थे। दीक्षा का शुभकार्य जयनाद के साथ समाप्त हुआ। वहां से दूसरे दिन आचार्य श्री शोभाचन्दजी म० शहर में मोती चौक में स्थित मूलसिंह जी भाभा की हवेली जिसको पेटी का नोहरा भी कहते है, जोकि अजमेर निवासी सेठ उम्मेदमलजी लोढा का मकान है जिसमें स्थिरवास विराजने के लिए लोढाजी ने अजमेर में ही अर्ज कर दिया था। आप नवदीक्षित मुनि को लेकर श्री सुजानमल जी म० भोजराज जी म० सोजतिया गेट के बाहर एक माली के मकान में विराजे। सातवें दिन दरबार हाई स्कूल में आचार्य श्री शोभाचन्द जी म० ने पधार कर बड़ी दीक्षा दी और वहां से सब सन्त शहर में पधार गए।

आचार्य श्री की सेवा में....

आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म० ने वृद्ध होने के कारण व्याख्यान और गोचरी का कार्य बन्द कर दिया था अतः स्वामजी प्रतिदिन सुबह व्याख्यान फरमाते और तत पश्चात् गोचरी के लिए

पधारते। यह आपका नित्य का कार्य था। महिने में दो अष्टमी दो चतुर्दशी एक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी (जो चन्दन मलजी म० की स्वर्गवास तिथि थी) शुक्ल पक्ष की पंचमी, इस प्रकार महिने में छ उपवास करते थे। चैत्र और आश्विन में आयम्बिल की ओली तो करते ही थे। इस तरह से १६७६ से ८३ तक आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म० की सेवा में जोधपुर में विराजे। १६८३ सावन कृष्ण अमावस्या को आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म० का स्वर्गवास हो गया।

आचार्य श्री की सेवा में तीन सन्तों के पढ़ने का कार्य चल रहा था। सातारा निवासी सेठ श्री चन्दनमल जी मोतीलाल जी मूथा की ओर से इस कार्य के लिए प० दुःखमोचन जी झा को रखा गया था। वे मुनि श्रीहस्तीमलजी म० चौथमलजी म० व नवदीक्षित मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० इन तीनों को सिद्धान्त कौमुदी हितोपदेश, रघुवंश आदि पढ़ा रहे थे। आचार्य श्री का स्वर्गवास हो जाने के कारण सम्प्रदाय के संत और सतीवर्ग शासक रहित हो गए थे। और किसी भी संघ का शासक रहित होना नितांत अवांछनीय माना जाता है अतः यहां शासक का होना अत्यन्त आवश्यक था। आचार्य श्री ने स्वर्गवास होने से दो वर्ष पहले ही सातारा निवासी सेठ मोतीलालजी को भविष्य में आचार्य बनाने के लिए अपना अभिप्राय लिखादिया कि मेरे बाद मुनि श्री हस्तीमल जी म० को आचार्य पद दिया जाय। जोधपुर के प्रमुख श्रावक शाह नौरतनमलजी भाण्डावत, चन्दन मल जी मूथा, छोटमल

जी दोशी आदि प्रमुख लोगों ने आगे की व्यवस्था पर विचार करने के लिए सम्प्रदाय के श्रावकों की एक सभा बुलाने का निश्चय किया और वह आश्विन के महिने में सभी खास २ स्थानों पर समाचार भेज कर बुलाई गई। उसमे जोधपुर, जयपुर, पाली. नागोर, पीपाड़, बड़लू, रीयां आदि के प्रमुख २ श्रावक आये। सातारा से सेठ मोतीलाल जी मूथा और गुलेदगढ़ से लालचन्द जी मूथा आदि भी आगए थे।

उपस्थित लोगों में से शाह नौरतनमलजी, चंदनमलजी मोतीलाल जी मूथा, भंवरलाल जी मूनत तथा कानमल जी कोठारी और मोतीलाल जी कटारिया आदि श्रावक, स्वामी सुजानमलजी म० मुनि भोजराज जी म० मुनि श्रीसागरमल जी म० आदि संत तथा इन्द्रकुंवरजी आदि प्रमुख सतियों के अभिप्राय लेकर विचार किया गया कि सम्प्रदाय की व्यवस्था के लिए क्या करना चाहिए ? आचार्य श्री के आदेश का पालन तो अवश्य होना चाहिए। इसमे दो मत नहीं किन्तु मुनि श्री हस्तीमल जी की अवस्था १६ वर्ष की है और दीक्षा पर्याय करीब ६ वर्ष की है। इधर आचार्य का पद एक उत्तर दायित्व पूर्ण पद है- अतः चार वर्षों के लिए सम्प्रदाय में वड़े सन्त श्री सुजानमल जी म० सम्प्रदाय के सत एवं सतियों की देख रेख करें तथा बाद में मु० श्री हस्तीमलजी म० को आचार्य पद दिया जाय। इस तरह सबके सतोप के साथ सभा की कार्यवाही समाप्त हुई। आए हुए लोग अपने २ स्थान को चले गए।

क्रमशः चातुर्मास का काल समाप्त हुआ। बाद में मुनि श्री सुजानमल जी म० ठा० ६ से विहार करके महामन्दिर पधारे और वहां पर शेष कल्प का कार्य पूरा किया।

सं० १६८४ का चातुर्मास....

मुनि श्री लाभचन्द जी म० मुनि श्री सागरमल जी म० मुनि श्री लालचन्द जी म० मुनि श्री हस्तीमल जी म० मुनि श्री चौथमल जी म० भोपालगढ़ होते हुए नागोर पधारे। स्वामी जी म० भोजराज जी म० मुनि श्री अमरचन्द जी म० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० धुंधाड़ा, समदड़ी, सीवाणा और जालोर होते हुए सादड़ी (मारवाड़) पधारे। वहां जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमल जी म० के शिष्य मुनि श्री छगनमलजी म०से मिले। मुनि श्री छगनमल जी उपासरे में ठहरे हुए थे तथा स्वामी जी म० एक भाई के मकान में ठहरे। व्याख्यान एक दूसरे उपासरे में जाकर फरमाते। होली चातुर्मास के नजदीक आजाने के कारण वहां के संघ ने विशेष आग्रह किया अतः होली चातुर्मास वहीं पर हुआ। बाद में विहार करके रानी बुसी आदि गांवों को फरसते हुए चैत्र कृष्ण सप्तमी को पाली पधारे और वहां विशाल न्यात के नोहरे में विराजे।

इधर मुनि श्री लाभचन्दजी म० नागोर से पीपाड़ होते हुए पाली पधारे। पाली में शेष कल्प पूरा करके स्वामीजी म० ठा० ६ से पीपाड़ पधारे। मुनिश्री लाभचन्दजी म० मुनिश्री सागरमल जी म०

और लालचन्दजी म० ने स्वामी जी की आज्ञा लेकर सादड़ी की तरफ विहार किया। स्वामी जी म० राता उपासरा में विराजे। इधर पाली से सम्प्रदाय के प्रमुख श्रावक जैसे केसरीमल जी वरांड़या, मूलचन्द जी सिरोहिया, नथमलजी पगारिया, हस्ती-मलजी सुराणा जो पाली श्री संघ की ओर से चातुर्मास की विनती लेकर आए थे और म० श्री से विनती की। स्वामी जी ने संतों से परामर्श करके पाली संघ की विनती को स्वीकार कर लिया। बाद में पीपाड़ संघ के प्रमुख श्रावक मोतीलाल जी कटारिया, रावतमल जी मुथा, दानमलजी चौधरी, प्रतापमलजी वरड़िया आदि श्रावकों का विशेष आग्रह होने से मुनि श्री भोज-राजजी म० को पीपाड़ चातुर्मास के लिए स्वीकृति फरमादी गई।

पीपाड से कल्प पूरा होने पर रीयां पधारे और वहां पर कुछ दिनों तक विराजे। चातुर्मास का समय निकट आने पर स्वामी जी म० व मुनि श्री अमरचन्द जी म० ठा० दो ने पाली की ओर विहार किया। रीयां के प्रमुख श्रावक श्री रूपचन्द जी गूंदेचा ने साथ में मार्गदर्शक स्वरुप एक भाई की व्यवस्था कर दी थी। गोड़वाड़ के कुछ गांवों को फरस कर मुनि श्री लाभचन्दजी म० ठा० ३ से पाली पधार गए। इस प्रकार १९८४ का चातुर्मास ठा० ५ से पाली में नारेलो के वखार में हुआ। इस चातुर्मास में विना भेदभाव के सभी सम्प्रदायों के भाई बहिन व्याख्यान वाणी का लाभ लेते रहे। भाई बहनों में दया उपवास की पंचरंगियां हुई। स्वामी जी का व्याख्यान वखार के आगे के मैदान में सार्वजनिक रूप से होता

था। पीपाड़ में मुनि श्री भोजराज जी म० के साथ रहने वाले मुनि श्री हस्तीमल जी म० आदि ३ सन्तों का अध्ययन कार्य पूर्व-वत् चालू रहा। चातुर्मास के बाद मुनि श्री भोजराज जी म० विहार करके रीयां पधारे और सेठजी की हवेली में विराजे। चातुर्मास में मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० के दोनों पांव में फोड़े होगये थे, वह तकलीफ रीयां जाने के बाद विशेष बढ़ गई। अतः उपचारादि की अनुकूलता के लिए आपको पुनः पीपाड़ आना पड़ा।

स्वामी जी म० पाली का चातुर्मास समाप्त करके सीधे रास्ते में नदी नाला होने के कारण सोजत बिलाड़ा, भावी आदि गांवों को फरसते हुए पीपाड़ पधारे। आपके पधारने पर जोधपुर के प्रख्यात डाक्टर शिवनाथचन्दजी मेहता को बुलाकर मुनि श्री लक्ष्मी-चन्द जी का पांव दिखाया गया। उन्होंने देखकर राय दी कि इन दोनों फोड़ों का आपरेशन कराने से ही ठीक होगा। किन्तु तत्काल में आपरेशन कराने की राय सतों को कम जंची, अतः दवाइयों का ही उपचार किया गया। किन्तु फोड़ा जल्दी दवाइयों से ठीक नहीं हुआ तो माघ शुक्ला पंचमी को डा० शिवनाथचन्दजी ने आकर दोनों फोड़ों का आपरेशन कर दिया और देख रेख के लिए राज-वैद्य गुरांसा चतुरसागरजी को नियत कर दिया। शनैः २ घाव भरके ठीक होने लगा।

इधर मुनि श्री लाभचन्दजी म० ठा० ३ से रणसीगांव होते हुए अजमेर की तरफ पधारे। मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० के चलने फिरने की शक्ति होने पर मुनि श्री भोजराजजी म० ठा० २

से रीयां पधारे। आपने होली चातुर्मास वहीं किया। बाद में पीपाड़ आकर स्वामी जी के दर्शन कर भोपालगढ़ की तरफ पधारे। लक्ष्मीचन्द जी म० के पूर्ण स्वस्थ होने पर स्वामी जी पीपाड़ से विहार कर ठा० ४ से रीयां पधारे। वहां पर भोपालगढ़ के प्रमुख श्रावक जोगीदास बाफना और सूरजराज जी बोथरा धूलजी ओस्तवाल आदि चातुर्मास की विनती के लिए आए। भोपालगढ़ में चातुर्मास किए हुए कई वर्ष होगए थे अतः आपने साधु भाषा में चातुर्मास की स्वीकृति देदी।

किशनगढ का चातुर्मास....

आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म० के सागरमलजी परम सेवा भावी तथा आत्मार्थी शिष्य थे। जिन्होंने पूज्य श्री की अग्लान भाव से बहुत सेवा की थी। आप शरीर की कमजोर स्थिति से आहार विहार में बडे संयम से रहते थे। आचार्य श्री के स्वर्गवास होने के पश्चात् तो आपने औषध सेवन का सर्वथा त्याग कर दिया था आप अजमेर विराजित महासतियों को दर्शन देकर मदनगज होते हुए किशनगढ़ पधारे। इधर कुछ दिनों से भोजन करने पर आपकी आंतें फूलने लगती और दर्द होने लगता था। संतों के बहुत कहने पर भी आपने दवा सेवन नहीं की। किशनगढ पधारने पर आपकी तकलीफ और बढ़ गई। आहार छोड़ कर देखा तो कुछ शान्ति मालूम हुई। तब आपने सोचा कि अब शरीर को आहार की आवश्यकता नहीं है अतः आपने अनशन रूप तपस्या आरंभ करदी और पास में रहने वाले सन्तों से कहा कि अब मुझे

संथारा करना है। इसलिए रीयां पीपाड़ में विराजमान जो बड़े महाराज हैं उनको समाचार दे दिए जांय। मुनि श्री के कहने से यह समाचार जोधपुर भोपालगढ और मेड़ता भेज दिए गए। मेड़ता समाचार मिलते ही मुनि श्री भोजराज जी म० व मुनि श्री अमरचन्द जो म० जल्दी से विहार कर जेठ सु० १४ तक किशनगढ़ पहुँच गए। जोधपुर से यह समाचार रीयां पहुँचा तो स्थविर मुनि श्री सुजानमल जी महाराज ठा० ४ से विहार कर पीपाड़, कोशाणा, बिरामपुरा, इन्दावड़ होते हुए मेड़ता पधारे और मेड़ते से सीधा विहार कर रीयां, आलणियावास, लाडपुरा होते हुए पुष्कर पहुंचे। वहां पर अजमेर निवासी रेखराज जी दुधेड़िया, मूलचन्द जो बीकानेरी आदि श्रावक स्वामी जी की सेवा में पहुंचे और अर्ज की कि किशनगढ़ में मुनि श्री सागरमल जी ने संथारा कर लिया है और आपको वहां पर जल्दी से पहुचने के लिए अर्ज करवाई है। मुनि श्री ने कुछ आहार पानी किया और कुछ साथ में लेकर घाटी पर पहुंचकर उसको समाप्त किया और शाम को श्री कल्याणमलजी ढढ्ढा के बाग में आकर विश्रान्ति की। प्रातःकाल होते ही वहां से विहार कर गगवाणा पहुंचे और वहां से आहार पानी कर के नाजर जी की बावड़ी पहुंचे। रात में विश्राम किया और सुबह होते ही किशनगढ़ पहुंच गए।

मुनि श्री के संथारे का २१ या २२ वां दिन चल रहा था। मुनि श्री सागरमल जी म० आपको तथा मुनि श्री हस्तीमलजी म० मुनि श्री चौथमल जी म० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० को देखकर

काफी प्रसन्न हुए और बोले कि मेरी यही भावना थी कि आप सब के दर्शन अन्तिम समय में हो जांय। आज मेरी यह प्रबल भावना पूरी हुई। पास में रहे हुए सन्तों ने मुनि श्री से बहुत कुछ आग्रह किया कि बड़े महाराज के आने पर ही आपको संथारा कराया जाय किन्तु आपकी प्रबल भावना जो तपस्या का रूप था संथारा का रूप धारण कर लिया।

इस पुनीत अवसर पर अजमेर और जयपुर के श्रावकों ने तो यहां अपने घर ही बसा लिए थे। प्रतिदिन १००–२०० यात्रियों का आना जाना बना रहता। ऐसा मालूम होता था जैसे कि किशनगढ़ कोई तीर्थ धाम बन गया हो। बाहर से आने वाले भाइयों के लिए मुनि श्री सागरमलजी म० के सांसारिक छोटे भाई प्रेमचन्द जी लोढ़ा, व फतेहचन्द जी लोढा तथा भागचन्द जी लोढा आदि ने भोजन व पानी की व्यवस्था की थी। आनन्दराज जी सुराणा ने पोल के बाहर ही अपना स्थान चुन रखा था। जो लोग मुनि श्री के दर्शनार्थ आते उनको सुराणा जी प्रेम पूर्वक समझाकर कुछ नियम आदि कराते। स्वामी जी म० सुबह का प्रवचन करते। मुनि श्री के पास निरन्तर कोई न कोई संत रहकर उनको शास्त्र का रसपान कराते। जिसको बड़ी शान्ति के साथ वे श्रवण करते रहते। इस तरह सथारा ५६ दिनों तक चलता रहा।

मुनि श्री के दर्शन व सेवा के लिए इन्द्रकुंवर जी, राधाजी, छोगा जी आदि सम्प्रदाय की प्रमुख २०–२५ सतियां जी विराज-

मान थी। जब चातुर्मास का समय नजदीक आया तो महासती जी इन्द्रकुंवर जी को छोड़कर शेष सतियांजी चातुर्मास के लिए अपने २ स्थान पर चली गईं। अन्त में श्रावण कृष्णा १३ को आपका संथारा समाप्त हुआ। इस तरह यह भोपालगढ़ में होने वाला १९८५ का चातुर्मास कारण विशेषवश किशनगढ़ में ही हुआ। चातुर्मास मे सभी सन्त देहलान मे विराजे। सथारा गोपी-चन्द जी अमरचन्द जी छाजेड़ के विशाल मकान में हुआ।

चातुर्मास समाप्त होने के बाद मदनगंज, हरमाड़ा होते हुए सभी सन्त जयपुर पधारे और कुछ समय तक जयपुर मे विराजे। बाद मे वहां से विहार कर किशनगढ़ होते हुए अजमेर पधारे। अज-मेर में पढ़ने वाले सन्तों की परीक्षा के लिए सेठ कल्याणमल जी ढ़ढ्ढा ने गौरीशंकर ओझा को बुलाया और उनके द्वारा मुनि श्री हस्तीमलजी म० और मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० की मौखिक परीक्षा करवाई। परिणाम सन्तोषजनक रहा।

बाद में वहां से विहार कर मसूदा होली चातुर्मास करके ब्यावर पधारे। वहा पर मुनिश्री सेवासमिति के मकान में विराजे। व्याख्यान रायली साहब के कम्पान में होता था। वहां पर पहले से मेवाड़ सम्प्रदाय के पूज्य श्री एकलिङ्गदास जी म० विराजमान थे। व्याख्यान उनके साथ सम्मिलित ही होता था। नया शहर के लिए एक ही जगह पर एक व्याख्यान होना पहली बात थी। बादमें मेवाड़ी म० श्री मोतीलालजी म० भी पधारे। वे अपने पू० श्री के साथ ठहरे। थोड़े समय के बाद धर्मदास जी म० की

सम्प्रदाय के शास्त्रज्ञ पं० मुनि श्री इन्द्रमल जी म० भी पधार गए। इनका व्याख्यान भी वहीं पर होता। इस प्रकार अलग २ स्थानों में ठहरे हुए होने पर भी सब संतों का व्याख्यान एक ही स्थान पर होता था।

यहां पर मुनि श्री की सेवा में चातुर्मास की विनती के लिए भोपालगढ़ जयपुर और नागोर के प्रमुख २ श्रावक उपस्थित हुए और अपने २ क्षेत्रों के लिए चातुर्मास की विनती की। किन्तु गत वर्ष में भोपालगढ़ चातुर्मास न होने के कारण वहां की विनती स्वीकार करली गई और नागोर के भाइयों को विनती शेषकाल में फरसने के लिए मानली गई। बाद में अजमेर के श्रावकों ने संतों के चातुर्मास की विनती की। मुनि श्री लाभचन्द जी मुनि श्री लाल चन्द जी व मुनि श्री चौथमल जी म० की इच्छा को देखते हुए वहां की विनती भी स्वीकार करली गई।

सं० ८६ का भोपालगढ चातुर्मास...

नयाशहर में शेष कल्प पूरा करके मुनि श्री ठा० ५ से बावरा भंवाल होते हुए मेड़ता पधारे और मेड़ता में कुछ समय तक विराजे। भाई बहनों में धर्म ध्यान की प्रवृत्ति ठीक रही। बाद में वहां से विहार कर मुंडवा होते हुए नागोर पधारे। साथ में मेड़ता के प्रमुख श्रावक सुलतानमल जी धारीवाल भी थे। वहां पर मुन्नी-मलजी बच्छावत के मकान में विराजे। व्याख्यान सुबह और श्याम दोनों समय होता था- उपस्थिति भी अच्छी रहती थी। कल्प के

दिन नजदीक आ जने के कारण वहां से विहार कर ताऊसर पधारे किन्तु वहां पर मुनि श्री सुजानमल जी म० को तकलीफ हो जाने के कारण पुनः नागौर पधारना पड़ा। कुछ समय तक वहां विराजे और दवाई का सेवन किया। बाद में चातुर्मास के लिए विहार करके मुंडवा, खजवाणा, रूण, आसावरी और वारणी होते हुए ठीक समय पर भोपालगढ़ पहुंचे। भोपालगढ़ के भाई वहनों ने तथा वहां के स्कूल के विद्यार्थियों ने लम्बी दूर तक आकरके स्वागत किया। चातुर्मास में धर्म ध्यान की प्रवृत्ति और दया उपवास आदि का रंग अच्छा रहा।

गांव में कुछ मन मुटाव था, यह बात आपके सामने आयी। प्रसंगवश एक दिन आपने अपने व्याख्यान में फरमाया कि– यह संसार एक सराय के समान है। जहां लोग थोड़ी देर ठहरकर फिर अपनी यात्रा पर चल देते हैं। कौन कहां से आया और कब कहाँ चला गया किसी को इसकी खबर भी नहीं हो पाती। जिन्दगी वहुत छोटी और अनिश्चित है। अभी है और क्षण भर के बाद रहेगी या नहीं कोई भी नहीं जानता। अतः मनुष्य जन्म पाकर हमें अपने इस छोटे से जीवन का सुन्दर उपयोग करना चाहिये और क्रोध, मानादि कषायों को हटाकर क्षमा विनयादि सद्गुणों से आत्मा को अलंकृत करना चाहिए। कितनी कठिनाई और भव भ्रमण के फेरे में चक्कर खाने के वाद आखिर यह मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ। इसे कलह आदि में गंवाना और परस्पर ईर्ष्या द्वेष वढ़ाना, यह तो हीरे को मिट्टी के मोल वेचना है।

क्रोध से बढ़कर जीवका कोई भी दूसरा शत्रु नहीं है। शास्त्रों में इसे चंडाल की उपमा दी गई है। यह दूसरे को ही नहीं जलाता बल्कि अपने को भी भस्म करता है। क्रोध का क्षणिक आवेश मनुष्य को सदा के लिये दोनों लोक में दुःखी बनाता है। अतः कवि सुजानमल जी म० ने ठीक ही कहा है कि

चेतन चतुर! कषाया, उपशम कीजिए रे।
क्रोध चंडाल समान कहावे, तामस तपन से भ्रकुटि चढ़ावे।
परभव नरक निगोद भमावे। चेतनः—

अतः प्रत्येक मुमुक्षु को क्षमावान् या सहनशील बनकर अपना भविष्य सुधारना चाहिए। सहनशीलता की बड़ी महिमा है। अगर कोई यह समझता हो कि किसी की बात सहलेने से हमारा प्रभाव कम हो जायगा, महत्व नीचे गिर जायेगा, समाज में हंसी होगी तो यह उसकी भारी भूल है। क्षमा मनुष्य का भूषण है। क्षमा धारण करने से ही महिमा, प्रभाव और सुयश बढ़ता है। ससार के सभी महापुरुष क्षमाशील ही तो थे। क्या हमारे श्रोताओं में कोई भगवान् महावीर से भी बढकर है? जो कानों में कील ठोकने और तेजोलेश्या से जलाए जाने पर भी विचलित और क्रुद्ध नहीं हुए न मन में प्रतीकार के भाव ही लाए। जब इतने बड़े-बड़े लोग अपने वैरियों के वैर को सहर्ष सहन करलेते हैं और प्रभाव में किसी तरह की आंच नहीं आती फिर हम सब किस गिनती में हैं? सहनशीलता मनुष्यता की कसौटी है।

विहार किया और रास्ते के गांवों को जल्दी से फरसते हुए टोंक पहुंचे। टोंक आचार्यश्री श्रीलालजी म० का जन्म स्थान है। यहां आपके सांसारिक कुटुम्बीजन माणकचन्दजी आदि धर्म प्रधान वृत्ति वाले हैं। परिवार बड़ा है। यहां से चौथका बरवाड़ा आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए सवाई माधोपुर पहुंचे। वहां पर पहले से कोटा सम्प्रदाय के श्री हरकचन्द जी म० विराजमान थे, जो शास्त्रों के विशेषज्ञ तथा एक क्रिया पात्र सन्त थे। एक साथ ही सब सन्त विराजे। व्याख्यान आम बाजार में सम्मिलित रूप से होता था। इस प्रान्त में अधिकांश लोग पोरवाड़ जाति के हैं जो आर्थिक दृष्टि से अधिक सम्पन्न नहीं होने पर भी धर्म तथा धर्म गुरुओं के प्रति भक्ति भाव विशेष रखते हैं। जिस गांव में सन्त पधारते उस गांव में आस पास के गांवों के लोग व्याख्यान श्रवण करने तथा दर्शन करने के लिए आजाते थे।

माधोपुर से विहार कर बुन्दी आदि क्षेत्रों को फरसते हुए कोटा पधारे। चुन्नीलाल जी बाबेल आदि कोटा के प्रमुख श्रावकों ने होली चातुर्मास के लिए आग्रह किया। अतः सभी सन्त होली चातुर्मास तक कोटा ही विराजे। बाद में वहां से विहार कर झालरापाटन पधारे। झालरापाटन से आचार्य श्री हस्तीमल जी म० बखाणी पधारे और स्थविर मुनि चैत्र सुद में आयम्बिल की ओली आजाने के कारण रास्ते में ओली की तपस्या करते हुए रायपुर पधारे। आचार्य श्री बखाणी से रायपुर (मध्यभारत) पधार गए कुछ दिन विराजे और वहां से सुनहेल, भवानी मंडी,

रास्ते के मकान में हुआ जो अब लालभवन के नाम से प्रख्यात है।

चातुर्मास में भाई बहनों में धर्म ध्यान की प्रवृत्ति ठीक रही। स्थविर मुनि श्री सुजानमल जी म० ने तथा भोजराजजी म० ने नौरतनमल जी सा० की माता और सेठ फूलचन्द जी की धर्म पत्नी को इस बात का उपदेश दिया कि यह तुम्हारा निर्वद्य मकान धर्म ध्यान के लिए अगर कर दिया जाय तो अनायास तुमको महा लाभ का कारण हो सकता है। सेठानी जी ने मुनि श्री के उपदेश को सुनकर मन में निश्चय कर लिया कि अवसर आने पर यह काम मैं अवश्य करूंगी। आज उसी उपदेश का परिणाम है कि जयपुर संघ के पास में लालभवन जैसा विशाल भवन धर्म ध्यान के उपयोग में आरहा है। जिसकी भव्यता और विशालता दर्शनीय है। धर्म ध्यान के अतिरिक्त इससे होने वाली आय भी जयपुर संघ के लिए एक महत्त्व की वस्तु है। जयपुर के प्रमुख चौड़ा रास्ता में यह भवन दाता की कीर्ति, प्रतिष्ठा और धर्म प्रियता का सजीव इजहार करते आगन्तुकों को अपनी महत्ता का परिचय एवं त्याग धर्म की महिमा बता रहा है। यहां भोपालगढ़ निवासी धनराज जी बोथरा की धर्मपत्नी ने ५७ उपवास की लम्बी तपस्या की थी।

राजस्थान से मालव भूमि की ओर ....

चातुर्मास समाप्त होने के बाद सब सन्त नथमल जी के कटले में पधारे। कुछ दिनों तक यहां विराज कर टोंक के लिए

बाद में जयपुर सघ के कुछ प्रमुख श्रावकों ने आचार्य श्री तथा स्थविर मुनि श्री की सेवा में अर्ज किया कि आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म० स्थिरवास जोधपुर में विराजे तथा आचार्य पद महोत्सव का लाभ भी जोधपुर संघ को ही मिला। अतः चातुर्मास का लाभ हमको भी मिलना चाहिए। इस पर आचार्यश्री ने स्थविर मुनि श्री का अभिप्राय लेकर जयपुर चातुर्मास की स्वीकृति दे दी।

१९८७ का चातुर्मास जयपुर में ....

आचार्यश्री ने सतियों को अलग २ स्थानों पर चातुर्मास के लिए आज्ञा प्रदान की। कुछ दिनों तक सब सन्त जोधपुर में विराजे। बाद में वहां से विहार कर झालामंड, विमलपुर, बेन्दन रीयां होते हुए पीपाड़ पधारे। पीपाड़ पूज्यश्री हस्तीमल जी म० साहब की जन्म भूमि है और यहां महासतीजी श्री पानकुंवर जी ठा० ४ से कई वर्षों से स्थिरवास विराज रहे थे, उनको दर्शन दिए एवं कुछ दिन तक यहां विराजे। बाद में कोसाणा, खवासपुरा पूरलू, गगराणा, इन्दावड़ होते मेड़ता पधारे कुछ दिन यहां विराजकर झडाऊ, रीयां, आलणियावास, लाड़पुरा, नांद, पुष्कर होते हुए अजमेर पधारे। यहां पर समैयों के नोहरे में विराजे। यहां पर महासती जी श्री राधाजी कई वर्षों से आंख खराबी के कारण स्थिरवास थे, उनको दर्शन दिए। यहां से विहार कर किशनगढ़ होतेहुए चातुर्मास के निकट समय में जयपुर पहुंच गए। यह चातुर्मास सेठ फूलचन्द जी नौरतनमल जी सुखलेचा के विशाल भवन चौड़ा

वर्षों तक सम्प्रदाय के संत एवं सतियों की अनुशासन व्यवस्था यथाशक्ति मैंने की। इन चार वर्षों तक इस सम्प्रदाय में आचार्य पद रिक्त रहा। अब मैं यह भार उदीयमान संत श्री हस्तीमल जी म० पर सौंपकर अपने इस भार से निवृत्त होता हूँ। साथ ही सन्त एवं सतियों को भी प्रेरणा की कि आज से अपने संघ संचालन करने वाले नायक आप हैं और अपन सब को इनकी आज्ञा में रहकर ज्ञान दर्शन व चारित्र की वृद्धि करनी चाहिए। आप अवस्था से भले बालक हैं परन्तु पदवी की दृष्टि से अब महान हैं।

आचार्य श्री हस्तीमल जी म० ने भी अपनी लघुता का परिचय देते हुए कहा—यह आचार्य पद का महान भार आप जैसे बड़े सन्तों की कृपा व सहयोग से निभाने में समर्थ हो सकूंगा। इसलिए मैं आप बड़े सन्तों का आशीर्वाद और हार्दिक सहयोग चाहता हूँ। बाद में सन्त व सतियों के भी प्रसंगोचित भाषण हुए। बाहर से आने वाले भाई बहनों का स्वागत जोधपुर संघ ने बड़े सम्मान के साथ किया। इस प्रसंग पर पं० दुःखमोचन जी झा को जिन्होंने आज तक सन्तों को खासकर मुनि श्रीहस्तीमल जी म० को पढ़ाने का कार्य किया था, २००० दो हजार की थैली भेंट की गई। उसमें १००० एक हजार जोधपुर संघ तथा १००० रु० सातारा निवासी सेठ चन्दनमल जी मोतीलाल जी की तरफ से थे। जयध्वनि के साथ आचार्य पद महोत्सव का कार्य समाप्त हुआ।

(२) श्री छोगाजी, श्रीकेवलजी श्री सुन्दरकुंवरजी (३) श्री इन्द्रकुंवरजी, श्रीदीपकुंवरजी, श्रीभीमकुंवरजी, श्रीचुन्नाजी, श्रीअचरजजी (४) श्रीधनकुंवरजी, श्रीहरककुंवरजी, श्रीकिशनाजी, श्रीघुलाजी, श्रीरतनकुंवरजी, श्रीचन्दनकुंवरजी, और श्रीरूपकुंवरजी (५) श्रीअमर कुंवर जी, श्री सुगनकुंवरजी, श्री केवलजी (६) श्री लालकुंवरजी, श्रीअनोपकुंवरजी, छोटा छोगाजी, और श्रीसुगनकुंवरजी, (गोगांजी) (७) श्री फतेहकुंवर जी, श्री बख्तावर कुंवरजी, श्रीधनकुंवरजी (८) श्री हुलासकुंवर जी, श्रीसुवाजी और श्रीमैनाजी।

वैशाख शुक्ला द्वितीय से बाहर गांव के भाई भी आने लगे थे। आचार्य पद महोत्सव देखने की लालसा सब के हृदय में हिलोरें ले रही थीं। आने वाले लोगों में से जयपुर, अजमेर, पाली, पीपाड़, रीयां, भोपालगढ़, नागोर, सतारा आदि के भाई बहुत थे। २२ सम्प्रदाय पाठशाला भवन में लोग प्रातःकाल से ही आने लग गए थे। आठ बजे तक भवन खचाखच भर गया। सबसे पहले दो कुमारियों ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् जयपुर निवासी जौहरी दुर्लभजीभाई ने आचार्य पद महत्व के सम्बन्ध में भाषण दिया। तत्पश्चात् गुमानमलजी भंडारी व श्रीहीरानरूपचंदजी भण्डारी आदि प्रमुख कवियों के मंगलमय संगीत हुए। ६ बजने के पश्चात् स्थविर मुनि श्रीसुजानमलजी म० और श्रीभोजराजजी म० ने स्वर्गीय आचार्य शोभाचन्द्र जी म० की सुरक्षित रखी हुई चादर को मुनि श्री हस्तीमल जी म० को चतुर्विध संघ के सामने ओढ़ा दी। और भावभरी भाषा में स्वामी जी ने कहा कि १९८३ से ८७ इन चार

स्वामी जी के इस प्रचार का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा
और सबने परस्पर क्षमापना करके वैर विरोध मिटा दिया।
चातुर्मास में जोधपुर के भाई बहनों का आगमन होता रहा।
शाह नौरतनमल जी, चन्दनमल जी मुथा, विजयमल जी कुंभट
आदि भी साम्प्रदायिक हित विचारणा को लेकर आते रहते थे।
चातुर्मास समाप्त होने के बाद स्थविर मुनिश्री नाडसर, रजलाणी
होते हुए हरसोलाव पधारे जो मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० की
जन्म-भूमि है। यहां पर शेष कल्पतक विराजे। धर्मध्यान अच्छा
हुआ बाद में खांगटा होते हुए पीपाड़ पधारे।

आचार्यपद के लिए विचार विमर्श . . . .

आचार्यपद रिक्तता के चार वर्ष पूरे होने वाले थे, अतः पद-
पूर्ति के लिए पुनर्विचार के हेतु सम्प्रदाय के प्रमुख श्रावकों की
एक सभा आयोजित की गई। उसमें जयपुर, जोधपुर, पाली,
अजमेर, सतारा आदि के प्रमुख श्रावक सम्मिलित हुए। जयपुर
के भौंरीलाल जी मूसल, मूलचन्द जी कोठारी आदि, जोधपुर के
सेशन्स जज शम्भुनाथ जी मोदी, शाह नौरतनमल जी भाण्डावत,
चन्दनमल जी मुथा, छोटमल जी दोशी, विजयमल जी कुंभट
आदि, सतारा निवासी सेठ मोतीलाल जी मुथा गुलेदगढ़ निवासी
लालचन्द जी मुथा, अजमेर के सेठ प्यारेलाल जी, कानमल जी
सुराणा, रेखराज जी दुधेड़िया, बरेली के श्री रतनलाल जी नाहर,
स्थविर मुनि श्री सुजानमल जी म० मुनि श्रीभोजराजजी, मुनि

जो प्रतिकूल परिस्थिति में भी मन को अडिग बनाए रखता है। वही सच्चा श्रावक, श्रोता और आदर्श मानव है जो सहनशील है। बल प्रभुता एवं सत्ता आदि प्रभावों से युक्त होते हुए यदि सहनशील या क्षमाशील बने रहे तो मानो मे सुगन्ध जान।

कवि की यह वाणी सदा स्मरण रखना चाहिए कि--

क्रोड पूर्व कोई तप तपे, एक सहे कोई गाल।
तिनको नफो छे घणो, मिटो मन की झाल।

यदि तराजू पर एक तरफ करोड़ों वर्षों की तपस्या और दूसरी ओर केवल सहनशीलता हो तो सहनशीलता का पलड़ा ही भारी बैठेगा। महावीर, बुद्ध, ईसा आदि को इतना अधिक ऊंचा उठाने का श्रेय यदि किसी को है तो वह सहनशीलता को ही है। यह कैसी उल्टी बात है कि महावीर को तो आप भगवान कहें और उनके वचन और आचरण की कद्र नहीं करें? उनके नाम की तो माला फेरें और उनके काम की नकल नहीं करें? याद रक्खें कि महापुरुषों की वाणी का अमल ही उनकी सच्ची आराधना या पूजा है। "मित्ती मे सव्व भूएसु-वेर मज्झं न केणइ" की भावना ही आत्मा को परमात्मा या सिद्धपद देने की सामर्थ्य रखती है अतः आपस में इसतरह लड़ना झगड़ना और मन मुटाव बनाए रखना कभी अच्छा नहीं कहा जा सकता। किसी ने ठीक ही कहा है—

बड़े प्रेम से मिलना सबसे-दुनियां में इन्सान रे।
क्या जाने किस भेष में बाबा, मिल जाए भगवान रे॥

भानपुरा होते हुए रामपुरा पधारे। वहां पर केशरीमल जी सुराणा एक जानकार और संसार से उदासीन होने के कारण उपाश्रय में रह कर ही शास्त्रों का स्वाध्याय करते थे। वहां पर कुछ दिन विराजकर संजीत पधारे । यहां पर रायपुर की एक बरात आई हुई थी जिसमें रायपुर के बहुत से प्रमुख श्रावक थे। उन लोगों ने स्थविर मुनिश्री के लिए रायपुर में चातुर्मास करने की विनती की। क्षेत्र की अनुकूलता और भाइयों की भक्ति को देखते हुए विनती स्वीकार करली गई।

इधर रामपुरा के भाइयों का आचार्यश्री के चातुर्मास के लिए विशेष आग्रह था। अतः आपने वहीं पर चातुर्मास की विनती मंजूर करली । मन्दसौर में विराजमान आचार्यश्री मन्नालाल जी म० ने रामपुरा में ही सन्देश भिजवा दिया था कि आप इधर पधारे हैं तो मन्दसौर अवश्य पधारें। स्व० आचार्यश्री शोभाचन्द जी म० और आचार्यश्री मन्नालाल जी म० का परस्पर पहले से घनिष्ट प्रेम था और आचार्य श्री हस्तीमल जी म० की दीक्षा पर आप अजमेर में उपस्थित भी थे।

अतः संजीत से विहार कर आप मन्दसौर पधारे। वहां पर आचार्य श्री मन्नालालजी म० के साथ झमकूपुरा में ठहरे। कई दिनोंतक आचार्यश्री के साथ रहे। सन्तों का परस्पर वात्सल्यपूर्ण व्यवहार श्लाघनीय बना रहा। आचार्य श्री मन्नालालजी म० से पूज्य श्री हस्तीमलजी म० ने कुछ सूत्रों की वाचना ली। उस समय स्वामीजी म० भी साथ ही विराजते थे। आचार्य श्री मन्ना-

लालजी म० स्थानकवासी सम्प्रदाय में एक बहुश्रुत सन्त थे। विभिन्न आगमों के मूल पाठ आपको कण्ठस्थ थे।

यहां से सब सन्त विहार कर शहर में पधारे और कुछ दिनों तक शहर में रहे। बाद में वहां से विहार कर श्रीस्वामीजी पिपलिया, नारायणगढ़ होते हुए महागढ़ पधारे। यहां के प्रमुख श्रावक श्री इन्द्रमलजी काग, एव श्री लक्ष्मीचन्दजी ने सन्तों की बड़ी सेवा की। आप लोग व्याख्यान में लोगों को जुटाते, सामूहिक दयाव्रत आदि की प्रेरणा करते तथा धर्म भावना को प्रोत्साहित कर सहयोग प्रदान करते थे।

महागढ़ से स्थविर मुनिश्री को चातुर्मास के लिए रायपुर जाना था, अतएव वे आगे बढ़े। रामपुरा होते हुए चातुर्मास के निकट समय में रायपुर पहुंचे। साथ में अमरचन्दजी म० व पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० थे। १६८८ का यह चातुर्मास स्वामीजी का रायपुर में और आचार्य श्री का ठा० ३ से रामपुरा में हुआ। मुनि श्री लाभचन्दजी म० ने ठा० २ से मन्दसौर में चातुर्मास किया।

रायपुर में चातुर्मास के समय लोगों ने धर्म ध्यान ठीक किया। व्याख्यान आम बाजार में होता था। व्याख्यान में आप दया दान के प्रसंग में अपने प्रवचन में फरमाते थे कि— संसार में दया सब धर्मों की जड़ है। ऐसा कोई धर्म नहीं जिसमें दया की महिमा न गाई गई हो। सचमुच दया ही धर्म है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी कहा है कि—

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्राण॥

जीते जी दया को कभी नहीं छोड़नी चाहिए। यही मनुष्य की मनुष्यता, बड़ों का बड़प्पन एवं महान् आत्माओं की महानता है। जो जितना ही अधिक दयावान् है, वह उतना ही महान् है। हमको जैसे जीवन प्यारा है, सुख अभीष्ट है एवं आनन्द अपेक्षित है, जगत् के प्रत्येक प्राणी को भी वह वैसे ही अभिलषित है, अतः अपनी आत्मा ही की तरह सांसारिक प्राणियों में "स्व अनुभूति" रख दया करनी चाहिए। नीति भी कहती है—

प्राणाः यथात्मनोऽभीष्टा, भूतानामपि ते तथा।
आत्मौपम्येन भूतानां दयां कुर्वन्ति साधवः॥

जब हम मांसादि सेवन के लिए निरीह जीवों का शिकार करते और उसके मांस से जिह्वा की लोलुपता मिटाते हैं तो हमें क्षणिक रसास्वादन का मौज मजा या प्रीति का अनुभव होता है। मगर बेचारे उन जीवों का तो सदा के लिए ही अन्त हो जाता है। कहा भी है— एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्विमुच्यते। कल्पना कीजिए कि मरण की वेदना उसको कैसी असह्य हुई होगी और उस मृत जीव के परिवार को उसका मरण कैसा दुख दायक होता होगा। एक क्षणकी खुशी के लिए किसी की जिन्दगी को अकारण यों हरण करना कहां का न्याय है? वाल्मीकि के बाण से मारे जाने वाले क्रौंच की वेदना व्यथित पत्नी का

यह शब्द प्रति व्यक्ति को हृदय में धारण करना चाहिए कि—"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।" अर्थात् ऐ निषाद! अनन्तकाल तक तुम प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं कर सकते, जिसलिए कि तुमने निरपराध मेरे जोड़े का जीवन हरण किया है। वाल्मीकि का व्याध हृदय भी इस करुण उद्गार से द्रवित होगया और मरे को तो वे जीवन नहीं दे सकते थे किन्तु तीर को सदा के लिए तरकस में रख कलम पकड़कर आदि महाकवि बन गए। यह दया ही का चमत्कार है कि एक शिकारी भी कवि के अप्राप्य पद को प्राप्त कर लेता है।

मगर कोरी दया भी महत्व नहीं रखती जब तक कि इसको दान का संयोग प्राप्त नहीं होता। दान रूप पारस के स्पर्श से ही दया रूप लौह द्रव्य भी सोना बन जाता है। पीड़ित की पीड़ा को देखकर हाय हाय करने के बजाय यथाशक्ति साधन के द्वारा ही उसकी दया फलवती बनती है। दाता ही विधाता है। सज्जनों का धन दान के लिए ही होता है। बादल दान के लिए ही पानी ग्रहण कर घनश्याम बनते हैं। वृक्ष लोगों की अभिलाषा पूर्ति के लिए ही फलों के भार को सहन करता है। जो दान के द्वारा परहित करता है संसार में उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। संत तुलसीदासजी ने कहा है—

पर हित बस जिनके मन मांही। तिनकंह जग दुर्लभ कछु नाही॥

अतः प्रत्येक भाई बहनों को दया दान के महत्व को मन में

सदा ऊँचा स्थान देना चाहिए। बिना इनको मन में बसाए कोई भी जप, योग या धर्माराधन मात्र आडम्बर है, दिखावा है, जिसका कि परिणाम अच्छा नहीं होता।

स्वामीजी के इस प्रवचन का स्थानीय एक जागीरदार के दिल पर बड़ा असर पड़ा। उसने श्रावण मास में शिकार न करना तथा मांस भक्षण न करना, पर्युषण महापर्व के दिनों किसी हिंसा वृत्ति में न पड़ना आदि बातों का नियम लिया। पर्युषण पर्व दिनों ग्राम में हिंसा आदि कार्यों की बन्दी की गई। कई बार रास्ते में चलते हुए कोई शिकारी, हिंसक, मांसाहारी या राजपूत आदि मिल जाते तो उसे आप उपदेश देकर भविष्य में ऐसा न करने का त्याग करा देते— ऐसे प्रसंग भी आपके जीवनकाल में अनेक आए।

व्याख्यान की समाप्ति तक लोग अपना व्यापार, धन्धा आदि बन्द रखते थे। दीपचन्दजी राठौड़ और बालचन्दजी दानी दोनों भाइयों ने मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० के पास लघुसिद्धान्त कौमुदी का षड्लिङ्ग तक अध्ययन किया। चातुर्मास समाप्त होने के बाद पानी भरे नदी नाले सीधे रास्ते में होने के कारण स्थविर मुनि श्री वहां से विहार कर झालरापाटन पधारे। रायपुर के प्रमुख १०-१५ भाई झालरापाटन तक साथ में आए। वहां से सड़क का रास्ता लेकर भवानीमंडी, रामपुरा, कुकड़ेश्वर, सरवाणिया आदि गांवों में धर्म प्रचार करते हुए जावद पहुँचे। रामपुरा से आचार्य श्री चातुर्मास समाप्त कर कन्जाड़ा, जाट, सिंगोली की तरफ होते

हुए जावद पधारे। जावद में कुछ दिनों तक सभी सन्त विराजे। लोगों में धर्म प्रेम प्रशंसनीय था। वहां से नीमच पधारे। नीमच से मन्दसौर होते हुए जावरा पधारे। जावरा में उस समय दो पक्ष चलते थे, एक आचार्य श्री जवाहरलालजी म० का और दूसरा आचार्य श्री मन्नालालजी म० का। दोनों पार्टी वालों ने आचार्य श्री हस्तीमलजी म० का स्वागत किया। दोनों पार्टी वालों के मकान में न ठहर कर आचार्य श्री एक श्रावकजी के मकान में ठहरे। व्याख्यान में लोगों की संख्या अच्छी रहती थी। यहां से पीपलोदा होते हुए सैलाना के श्रावकों का विशेष आग्रह होने से पहले रतलाम न पधार कर सैलाना पधारे।

सैलाने में रतलाम के तीनों पार्टी वाले आए। उसमें श्री जवाहरलालजी म० व श्री धर्मदासजी म० के सम्मिलित लोग थे। तीनों पार्टी वालों का कहना था कि आप धर्मदास मित्र मण्डल में विराजें तो हमें आने जाने में कोई बाधा नहीं होगी अतः उनकी प्रार्थना को ध्यान में रख कर सैलाना से विहार कर रतलाम पधारे। उस समय रतलाम में धर्मदासजी म० की सम्प्रदाय के प्रवर्तक पूज्य श्री ताराचन्दजी म० मुनि श्री किशनलालजी म०, मुनि श्री सौभागमलजी म०, मुनि श्री वच्छराजजी, श्री सूर्यमुनिजी आदि सन्त विराजमान थे। सन्त भी लम्बी दूर तक सामने आए। श्रावक श्राविकाओं की तरफ से भी अपूर्व स्वागत था। रतलाम में सन्तगण धर्मदास मित्र मण्डल में विराजे। व्याख्यान सब सन्तों का शामिल होता था।

नीमचौक के स्थानक में चर्चावादी वयोवृद्ध श्री नन्दरामजी म० विराजमान थे। उनके दर्शन करने के लिए एक दिन आचार्य श्री व स्थविर मुनिश्री गए। होली चातुर्मास सभी सन्तों का यहां पर होगया। बाद में रतलाम संघ ने चातुर्मास के लिए भी विनती की। आचार्य श्री ने बड़े सन्तों का अभिप्राय लेकर रतलाम संघ की विनती स्वीकार करली।

बाद में यहां से विहार कर एक दिन शहर के बाहर विराजे और आगे रावटी, पटलावद, राजगढ़ आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए धार पधारे। धार भारतवर्ष का एक ऐतिहासिक स्थान है। राजा भोज की विद्वत्ता, कला, न्याय और विलक्षण बुद्धि से इस स्थान का गहरा सम्बन्ध है— कारण भोज की राजधानी धारा नगरी ही थी। बहुत सी किम्वदन्तियां इस नगर से सम्बन्धित हैं जिन्हें इतिहास प्रेमी पाठक अच्छी तरह जानते होंगे। यहां पर आचार्य श्री धर्मदासजी म० ने एक सथारा स्थित साधु को शिथिल जान स्वयं उसकी जगह संथारा धारण किया था। जिस पाट पर आपने संथारा धारण किया था वह पाट आज भी स्थानक में सुरक्षित है। आप एक महान् प्रभाविक आचार्य थे तथा अनेक सम्प्रदायों के मूल स्रोत थे। आपने सथारा करके जिनशासन के गौरव को, त्याग के महत्व को बहुत ही आगे किया।

यहां की एक विशेषता ध्यान में रखने योग्य है वह यह कि यहां की बनियावाड़ी में जिसमें अधिकांश घर जैन पोरवाड़ भाइयों के हैं तथा जैन मन्दिर और स्थानक भी इसी में हैं। इस वाड़ी में

अगर कोई बकरा, मुर्गा आदि जानवर आ जाय तो उसको अभय मिल जाता है। ऐसे कई प्रसंग यहां पर आये कि कई अनजान कसाई ३०-३० ३५-३५ बकरों को लेकर इस क्षेत्र में आगए तो यहां के महाजनों ने उनसे बकरे लेकर उन्हें अभय दान दे दिया। ऐसा यहां के लोगों के पास सरकारी आज्ञा पत्र है।

जोधपुर संघ की ओर से डोशी छोटमलजी और दौलतरूपचन्दजी भण्डारी आचार्य श्री की सेवा में आए और कहा कि हमारे यहां इस वर्ष आचार्य श्री जवाहरलालजी म० का चौमासा निश्चित हुआ है अतः आप भी वहां पधार कर सम्मिलित चातुर्मास करें। ऐसा हमारे यहां के प्रमुख श्रावकों का विचार है। इसपर आचार्य श्री ने फरमाया कि हम अभी बहुत दूर हैं और रतलाम संघ की विनती भी स्वीकार करली है, अतः वहांजाने जैसी स्थिति नहीं है।

१६८६– रतलाम का चातुर्मास ....

कुछ समय तक धार में विराजे। बाद में वहां से विहार कर इन्दौर पधारे। वहां पर पहले से पू० मुनिश्री ताराचन्द म०, मुनिश्री किशनलालजी म०, मुनि श्री सौभागमलजी म० आदि कपड़ा बाजार में विराजमान थे, अतः जहां श्रीसौभागमलजी म० विराजमान थे, उनके सामने के मकान में ठहरे। यहां पर ऋषि सम्प्रदाय में आचार्य पद प्रदान करने के लिए उनकी सम्प्रदाय के सन्त एवं सतियों का संगठन हो रहा था, अतः

पधारे। उस समय का दृश्य बड़ा आकर्षक एवं सुन्दर था। रजोहरण कंधे पर डाले हुए और पात्रों को हाथ में लिए एक साथ इतनी बड़ी संख्या में संतजनों का एक जगह होना और चलना दर्शकों के मानस को विस्मय विमुग्ध बना रहा था। चारों तरफ की नजरें इन त्याग मूर्तियों पर जमी थीं—दर्शक निस्तब्ध भाव से इस अलौकिक दृश्य को अपलक निहार रहे थे। सब सन्त सबसे पहले ममैयों के नोहरे में पधारे। बाहर के मैदान में मंगलाचरण किया गया जिसमें शतावधानी पं० श्री रत्नचन्दजी म० उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० पूज्य श्री हस्तीमलजी म० पू० श्री अमोलख ऋषि जी म० आदि के मंगल गान और प्रसंगोचित भाषण भी हुए थे।

बाद में जिनके लिए जहां जहां ठहरने की व्यवस्था थी वे वहां २ पधार गए। पंजाब, गुजरात व मारवाड़ के कई सन्त इसी स्थान में ठहरे और पूज्य श्री आदि २ सन्त ऊपर के दो कमरों में विराजे चैत्र कृष्ण दशमी से साधु सम्मेलन का कार्य ममैयों के नोहरे के पिछले भाग में विशाल वट वृक्ष के नीचे प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन में २६ सम्प्रदायों के २४० सन्त एकत्रित हुए। सम्मेलन का कार्य १५ दिनों तक चलता रहा। बाद में बाहर के आए हुए संघों ने अपने २ यहां चातुर्मास करने के लिए सन्तों की सेवा में प्रार्थना की। जोधपुर संघ ने अपने यहां पंजाब सम्प्रदाय के तबके उपाध्याय और आज के आचार्य श्री आत्मारामजी म० का आचार्य श्री हस्तीमलजी म० के साथ सम्मिलित चातुर्मास कराने

के लिए दोनों मुनि राजों की सेवा में प्रार्थना की तथा स्थविर मुनि श्री से भी कहा कि हमारा यह कार्य सफल होना चाहिए। इस पर तीनों सन्तों ने सोचकर उत्तर में फरमाया कि विशेष कारण के बिना आपके यहां चातुर्मास करने के भाव हैं। विनती स्वीकार होने से जोधपुर संघ को बड़ी खुशी हुई। सभी लोग अपने २ स्थान पर चले गए।

१९९० का चातुर्मास जोधपुर नगर में...

अजमेर से विहार कर पुष्कर, आलणियावास, रीयां होते हुए मेड़ता पधारे। बाद में उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी म० व्याख्यान वाचस्पति मुनि श्री मदनलालजी म० आत्मार्थी मुनि श्री रामजीलालजी म० मुनि श्री प्रेमचन्दजी म० पं० मुनि श्री हेमचन्द्रजी म० आदि भी पधार गए। कुछ दिनों तक समस्त सन्त मेड़ता विराजे और बाद में वहां से विहार कर इन्दावड़, गगराणा, पुलु, कोसाणा होते हुए पीपाड़ पधारे। पीपाड़ में स्थविर मुनि श्री, पूज्य श्री, "लाल उपासरे" में विराजे और उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० व्याख्यान वाचस्पतिजी आदि गांव के बाहर कावरों के नोहरे में विराजे। व्याख्यान जहां उपाध्यायजी म० विराजे वहीं पर होता था। यहां से विहार कर रीयां पधारे। वहां पर छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० के पेट में दर्द पैदा हुआ जिससे उनकी चलने जैसी स्थिति नहीं रही। पूज्य श्री एवं सन्तों के सामने एक विचारणीय प्रश्न पैदा होगया क्योंकि श्री आत्मारामजी म० को जोधपुर में

चित्तौड़गढ़ मेवाड़ का एक ऐतिहासिक नगर है। यहां के जर्रे-जर्रे में हिन्दुत्व की महिमा छायी हुई है। यहां जैनियों के कई ऐतिहासिक चिन्ह आज भी पाए जाते हैं।

चित्तौड़गढ़ से विहार कर हमीरगढ़ होते हुए भीलवाड़ा पधारें। यहां शहर में स्थान की अनुकूलता न होने के कारण नथमल जी नागोरी के बाग में विराजे। यहां एकान्त और शान्त स्थान होने के कारण सन्तों का चित्त लग गया था। कुछ दिन के बाद यहां से विहार कर सांगानेर होते हुए बनेड़ा पधारे। यहां एक विशाल जैन मन्दिर है, जिसमें सन्त एवं सतियां ठहरती हैं और चातुर्मास भी होता है। इसी में सब सन्त विराजे। यहां के अधिकांश लोग राजकर्मचारी हैं। एक दिन बनेड़ा के महाराज भी व्याख्यान श्रवण करने के लिए आए थे और आपने व्याख्यान सुनकर प्रसन्नता प्रकट की। यहां भण्डारी तेजसिंहजी लगन-वाले श्रावक हैं। सरकारी कर्मचारी होते हुए भी आपको प्रति-दिन पांच सामायिक का नियम था।

बनेड़ा से विहार कर शाहपुरा पधारे और पचायती नोहरे में ठहरे। सेशनजज सरदारमल जी छाजेड़ यहां के प्रमुख श्रावक हैं। यहां से विहार कर केकड़ी पधारे। यहां धनराज जी, सूरजमल जी आदि नवयुवकों का धर्म प्रेम श्लाघनीय था। धनराज जी प्रतिवादियों के साथ मुकाबला करने की क्षमता रखते थे। यहां मन्दिर मार्गियों के साथ लिखित प्रश्नोत्तर भी चल पड़े थे जिसका

आचार्य श्री ने प्रत्युत्तर भी दिये। यहां से विहार कर सरवाड़ होते हुये किशनगढ़ पधारे। यहां पर पहले से नानकराम जी म० की सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री पन्नालाल जी म० विराजमान थे। पंजाबकेशरी युवाचार्य श्रीकाशीरामजी म० का भी उस समय पधारना हो गया था। आप चंडालियों के उपाश्रय में विराजे। पं० मुनि श्री पन्नालाल जी म० स्वागत के लिए सामने पधारे। सब सन्तों ने चंडालियों के उपाश्रय में पधार कर भाई बहनों को मांगलिक सुनाया। बाद में पूज्यश्री दहलान में विराजे। व्याख्यान सब सन्तों का चण्डालियों के उपाश्रय में सम्मिलित होता था। यहां अजमेर में होने वाले वृहत्साधु-सम्मेलन को लेकर सन्तों के परस्पर विचार विनिमय हुए। फिर यहां से विहार कर अजमेर पधारे। और वहां २-३ दिन रहने के बाद तबीजी होते हुए लीडी पधारे। वहां पर आचार्य श्री जवाहरलालजी म० का समागम हुआ। दोनों आचार्यों का रात्रि में साधु सम्मेलन को लेकर कई बातों पर विचार विमर्श हुआ। संगठन कैसे हो ? इस पर खुले दिल से बातें हुयीं। यहां एक दिन रहकर पुनः तबीजी पधारे। तबीजी में उस दिन साधु सम्मेलन में जाने वाले अनेक सन्तों का समागम रहा।

शाम को तबीजी से विहार कर रामगंज के आस पास एक धर्मशाला में ठहरे। प्रातःकाल सब सन्तों का एक साथ नगर में प्रवेश था, अतः विभिन्न दिशाओं से आए हुए सन्त शहर के बाहर जगह एकत्रित होकर बड़ी मानव मेदिनी के साथ शहर में

है। आप की ओर से भी हमें यह आश्वासन अवश्य मिलना चाहिये। इस पर आचार्य श्री ने बड़े सन्तों से विचार विमर्श कर उत्तर में फरमाया कि यद्यपि हम लोगों के भाव, सतारा वाले सेठ चन्दनमल जी मोतीलाल जी मुथा का प्रबल आग्रह होने से सतारा जाने के थे किन्तु यह समाज का विशेष कार्य होने के कारण अनुकूल स्थिति रही तो चातुर्मास समाप्त होने के बाद अजमेर की तरफ विहार करने का प्रयास करूंगा।

चातुर्मास में जोधपुर निवासी चन्दनमल जी काचर मुथा सन्तों के दर्शनार्थ आए। सन्त सब श्री धर्मदास मित्र मण्डल में ठहरे हुए थे। वहां पर धर्मदास जी म० के श्रावकों की तरफ से एक जैन पुस्तकालय था जिसमें आगम, कोश आदि का अच्छा संग्रह किया गया था। उस समय स्वामी जी ने मुथाजी को उपदेश दिया कि जोधपुर जैसे बड़े क्षेत्र में जैन पुस्तकालय का होना आवश्यक है। जिससे स्वाध्याय प्रेमियों को लाभ मिल सके। मुथा जी ने इस बात को ध्यान में धर लिया और जोधपुर आकर एक योजना बनायी। प्रमुख श्रावकों की सम्मति लेकर शाह नौरतनमल जी के कर कमलों द्वारा जैन रत्न पुस्तकालय की स्थापना करदी। जिसमें आज हस्तलिखित तथा मुद्रित पुस्तकों का अच्छा संग्रह है और जो स्वाध्याय प्रेमी श्रावक एवं सन्तों के उपयोग में आता है।

चातुर्मास आनन्द पूर्वक समाप्त हुआ और धर्मध्यान की प्रभावना भी अच्छी हुई। रतलाम नगर से विहार कर स्टेशन के

पास वर्द्धमान जी नथमल जी पीतलिया के मकान पर सब सन्त विराजे। बाद में खाचरोद निवासी सेठ हीरालाल जी नांदेचा के आग्रह होने से पुनः खाचरोद पधारे और वहां कुछ दिनों तक विराजे। व्याख्यान आदि का प्रति दिन वहां अच्छा ठाठ रहता था।

अजमेर की ओर....

खाचरोद से विहार कर पीपलोदा होते हुए प्रतापगढ़ पधारे। यहां पर ऋषि सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री आनन्दऋषि जी म० से मिलने का अवसर मिला। आप स्थानक में विराजते थे। पूज्यश्री श्रावकों के धर्मध्यान के लिए सुरक्षित एक दूसरे मकान में ठहरे। व्याख्यान जहां पू०श्री ठहरे थे, वहीं पर होता था और पं० मुनि श्री आनन्दऋषि जी म० भी वहीं पधार जाते थे। सन्तों में परस्पर प्रेम भाव अच्छा रहा। यहां से विहार कर छोटी सादड़ी पधारे और कुछ दिन तक वहां विराजे। व्याख्यान सेठ छगनलाल जी गोदावत के नोहरे में होता था। गोदावत जी की तरफ से "श्री गोदावत जैन गुरुकुल" चलता था। वहां के विद्यार्थी तथा अध्यापक भी व्याख्यान में आते थे। पूज्यश्री और स्वामी जी म० के व्याख्यान का प्रभाव अच्छा रहा।

छोटी सादड़ी से विहार कर "निम्बाहेड़ा" पधारे और पंचायती नोहरे में ठहरे। भाइयों में धर्मध्यान की लगन ठीक थी। वहां से विहार कर इतिहास प्रसिद्ध चित्तौडगढ़ पहुंचे। कुछ दिन किले के नीचे शहर में विराजे तथा कुछ दिन किले पर।

उसमें सम्मिलित होने के लिए शास्त्र दिवाकर श्रीअमोलक ऋषिजी म० भी वहां आए हुए थे । आत्मार्थी मुनि श्री मोहन-ऋषिजी म० तथा श्री विनयऋषिजी म० भी पधारे थे। सब सन्तों का व्याख्यान एक ही स्थान पर होता था। यद्यपि ऋषि सम्प्रदाय के सन्तों तथा श्रावकों ने आचार्यश्री को आचार्यपद महोत्सव तक विराजने के लिए आग्रह किया पर कल्प काल पूर्ण हो जाने के कारण वहा से विहार कर उज्जैन पधारे।

उज्जैन में ज्ञानचंदजी म० की सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री इन्द्र-मलजी म० तथा श्री मोतीलालजी म० से मिलने का मौका मिला। यहां पर भी सभी सन्त एक ही मकान में ठहरे। व्याख्यान भी शामिल ही होता था। मुनि श्री के साथ शास्त्रीय चर्चा भी होती रहती थी। आचार्य श्री के साथ रामपुरा चातुर्मास में महागढ़ निवासी लक्ष्मीचन्दजी ज्ञान ध्यान कर रहे थे। वे कई दिनों से वैरागी अवस्था में थे। उन्होंने साधु जीवन का ठीक अभ्यास कर लिया था। आपकी दीक्षा आषाढ वदी २ को संपन्न करना वहां के श्रावकों ने निश्चित किया। दीक्षा सम्बन्धी महोत्सव बरेली निवासी सेठ जुगराजजी नाहर व रतनलालजी नाहर की तरफ से किया गया। आपकी दीक्षा आषाढ वदी ५। १६८६ को हो गई।

यहां से विहार कर खाचरोद पधारे और कुछ दिनों तक विराजे। चातुर्मास का समय निकट आ जाने के कारण यहां से जल्दी विहार कर रतलाम पधारे। खाचरोद के श्रावकों का मुनि श्री लाभचन्दजी म० के लिए चातुर्मास का आग्रह होने से

३ ठाणों का चतुर्मास वहां कराया गया। शेष सब सन्त रतलाम में साथ थे। चातुर्मास में लोगों ने धर्मध्यान ठीक किया। व्याख्यान में जनता अच्छी संख्या में उपस्थित होती थी।

मालवा में रतलाम एक प्रसिद्ध नगर है। यह साधुमार्गीय सम्प्रदाय का केन्द्रसा है, जहां सन्त और सतियां भी अधिक संख्या में विराजती रहती हैं। यहां पर सेठ वर्द्धमान जी पीतलिया और भण्डारी धूलचन्द जी शास्त्रों के अच्छे जानकार श्रावक थे; यहां आचार्य श्री को निमोनिया हो जाने पर वर्द्धमान जी पीतलिया और चांदमलजी गांधी आदि श्रावकों ने अच्छी सेवा की। सन्तों की पढ़ाई का कार्य भी चलता था। पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० पहले व्याख्यान फरमाते थे। बाद में आचार्य श्री तथा कभी कभी स्थविर मुनिश्री का व्याख्यान भी होता था। पर्युषण पर्व के दिनों में दोपहर को स्वामी जी म० कल्पसूत्र फरमाते थे। वहां की जनता आपके मारवाड़ी भाषा के व्याख्यान बहुत रुचि से सुना करती थी। आप मारवाड़ी भाषा के प्राचीन आध्यात्मिक स्तवन उपदेशी आदि पद सुनाकर उनकी सुन्दर व्याख्या करते थे।

अजमेर में होने वाले वृहत् साधु सम्मेलन में सन्तों को आमन्त्रित करने के लिये कान्फ्रेन्स की तरफ से एक शिष्टमण्डल आचार्य श्री की सेवा में आया और अर्ज की कि अजमेर में होने वाले साधु सम्मेलन में आपको अवश्य पधारना चाहिए। हमें अन्य भी कई मुनि राजों के पधारने का आश्वासन मिल गया

सम्मिलित चातुर्मास की प्रेरणा करके लाये और वहां पहुंचने में कुछ बाधाजनक स्थिति दिख रही थी। उपचार के लिए भोपालगढ़ निवासी श्री धूलचन्दजी रांका सूचना पाकर रीयां आपहुंचे और बोले की इनका स्थायी इलाज तो भोपालगढ़ रहने पर हो सकता है किन्तु औषधोपचार से ये जोधपुर पहुंच सकते हैं। औषध लेते समय सिर्फ दही पर ही आश्रित रहना पड़ेगा।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० को आगे विहार कराया और बाद में पूज्यश्री स्थविर मुनिश्री सुजानमलजी म० पं मुनि लक्ष्मी चन्दजी म० छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० को साथ में लेकर धीरे २ विहार किया। साथ मे पीपाड निवासी रावतमल जी मूथा और जालमचन्दजी चौधरी जो अभी जयंत मुनि के नाम से उपाध्याय पं० रत्न हस्तीमलजी म० के शिष्य हैं, रीयां निवासी फतेहचन्दजी गुन्देचा भी थे। बुचकला, देनण, बिसलपुर, संगरिया' झालामंड होते हुए महामन्दिर पधारे। कुछ दिन महामन्दिर विराजकर सब सन्त चातुर्मास के लिए जोधपुर पधारे और २२ सम्प्रदाय जैन पाठशाला भवन में विराजे। प्रातः काल में व्याख्यान उपाध्याय श्री आत्माराम जी म० पू०श्री हस्तीमल जी म० और व्याख्यान-वाचस्पति श्री मदनलाल जी म० फरमाते थे। मध्याह्न में स्थविर मुनि श्री सुजानमल जी म० चौपाई फरमाते थे। इधर उपाध्याय जी म० मध्याह्न में "सटीक श्री स्थानांग सूत्र" और अनुयोग द्वार सूत्र की वाचना करते थे। विराजित सन्तों में सब से बड़ी दीक्षा पर्याय स्थविर मुनि श्री सुजानमल जी म० की थी। अतः

शाम के समय वन्दना और प्रत्याख्यान के समय जब सब सन्त एकत्र होते तो वह दृश्य बड़ा ही आकर्षक और सुहावना लगता था। उपाध्याय जी म० आदि सन्त स्वामीजी म० का बड़ा ही सम्मान रखते थे। इस तरह से १९९० का चातुर्मास सानन्द समाप्त हुआ। यहां से विहार कर महामन्दिर पधारे और कुछ दिनों तक वहां विराजे। फिर उपाध्याय जी म० का विचार पाली होकर पंजाब जाने का था, अतः आचार्य श्री और स्थविर मुनिश्री ने विचार करके अपने दो सन्तों को पाली तक साथ सेवा में भेजे। वयोवृद्ध मुनि श्री भोजराजजी म० प० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० दोनों संत पाली तक सेवा में साथ रहे, और उपाध्याय श्री को साता पूर्वक पाली से विहार करा दिया। इधर पूज्यश्री और स्थविर मुनिश्री महामन्दिर से विहार कर, भोपालगढ़ पहुँचे। मुनि श्री भोजराजजी म० एवं मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० भी पाली से विहार कर महामन्दिर दहीखड़ा, हिरादेसर होते हुए जल्द से जल्द भोपालगढ पहुंचे और वहां पर श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० का इलाज चालू कराया गया। थोड़े दिनों के पश्चात् आप स्वस्थ होगए। बाद में पीपाड़ पधारे और वहां कुछ दिन विराजकर खेजड़ला, रणसीगांव होते हुए जैतारण पधारे।

जैतारण में १९९१ के चातुर्मास के लिए पीपाड़ संघ और ब्यावर संघ विनती लेकर सेवा में आए। दोनों संघों का चातुर्मास के लिए विशेष आग्रह था। ब्यावर में कई वर्षों से सम्प्रदाय के

सन्तों का चातुर्मास नहीं हुआ था फिर भी कुछ कारण ऐसे सामने आए जिनके कारण ब्यावर सघ की विनती स्वीकार न कर पीपाड़ संघ की विनती स्वीकार की गई। इससे ब्यावर संघ को काफी निराशा हुई, फिर भी ब्यावर संघ ने शेष काल में ब्यावर फरसने की विनती की, जो स्वीकार कर ली गई। इससे निराशा में आशा का संचार हो गया। मैं निम्बाज, हाजी, वर, वरांटिया आदि क्षेत्रों को फरसते हुए ब्यावर पधारे और वहां पर वरेली निवासी सेठ चाँदमलजी रतनलालजी नाहर के मकान में ठहरे। व्याख्यान में जनता की उपस्थिति ठीक होती थी। महासतीजी श्री धनकुंवरजी यहीं पर विराजमान थे। आपकी एक सुशिष्या बालकुंवारी श्री चैनकुंवरजी का बहुत दिनों तक बीमार रहने के उपरान्त यहां स्वर्गवास होगया। शेष कल्प पूरा करके चातुर्मास के लिए विहार किया और सैंदड़ा, वर, वरांटिया होते हुए पीपाड़ पधारे। यहां पर श्री पुखराजजी मुणोत के नये मकान में ठहरे। व्याख्यान लाल उपाश्रय में होता था। प्रातःकाल में स्थविर मुनिश्री और आचार्य श्री का व्याख्यान होता था। और मध्यह्न में स्थविर मुनिश्री अकेले ही चौपाई फरमाया करते थे। भाइयों में तपस्या और धर्मध्यान अच्छा रहा। आगन्तुकों की व्यवस्था में मुथा रावतमलजी व सोहनराजजी कटारिया विशेष रस लेते थे। इस प्रकार सं० १९६१ का चातुर्मास सानन्द समाप्त हुआ।

पीपाड़ से विहार कर रीयां पधारे और कुछ दिन वहां विराज

कर स्वामीजी म० वेनण, विसलपुर, झालामंड होते हुए जोधपुर पधारे। मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचंदजी को कई दिनों से नासूर की तकलीफ थी, अतः उन्हें पादरी के शफाखाना, खांडापलसा में भर्ती करा आपरेशन कराया गया। मुनि श्री भोजराजजी म० तथा पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० रात्रि में उनकी सेवा में रहते थे। गोचरी, पानी आदि द्वारा मुनि श्री भोजराजजी म० सा० ने विशेष सेवा की। अन्य सन्त भी दिन में आते जाते रहते थे।

सन्तों के यहां विराजते हुए महासतीजी श्री सरूपकुंवरजी तथा श्री वदनकुंवरजी म० की दीक्षा माह सुद ५ को महासतीजी श्री अमरकुंवरजी की नेश्राय में सिंहपोल में हुई। यद्यपि म० स० श्री वदनकुंवरजी ३–४ वर्षों से तीव्र वैराग्य भावना से भावित थीं किन्तु उनके ज्येष्ठ खेतमलजी मूथा द्वारा आज्ञा प्राप्ति में रुकावट होती थी। स्वामीजी ने भाई रेवतमलजी को दीक्षा में किसी तरह की अड़चन न डालने के लिए बहुत कुछ समझाया जिससे उनका दिल प्रभावित हुआ और अवसर पाकर उन्होंने सहर्ष अनुमति ही प्रदान नहीं करदी वरन् महोत्सव तैयारी का व्ययभार भी अपने ऊपर ले लिया।

वैराग्यवती दोनों बहनो को आचार्यश्री ने नमस्कार महामंत्र को पढ़कर सामायिक चरित्र की विधि करवायी, और श्रमणी दीक्षा दी। इस अवसर पर आचार्य श्री जवाहरलालजी म० के तपस्वी मुनि श्री मोड़ीलालजी म० मुनि श्री चौथमलजी म० आदि संत पधारे। दर्शकों से भवन खचाखच भर गया था। दीक्षा के

पश्चात् दर्शकों के लिए वैरागिन वदनकुंवरजी की ओर से चार २ लड्डुओं की प्रभावना का पहले से ही प्रबन्ध कर दिया गया था। इस प्रकार यह दीक्षा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी का स्वास्थ्य ठीक हो जाने पर सब सन्तों ने पाली की ओर विहार किया। झालामंड, कुडी, मोगरा, रोहीट आदि क्षेत्रों को फरसते हुए पाली पधारे और सिरे-मलजी कांठेड के मकान मे विराजे। व्याख्यान में उपस्थिति अच्छी होती थी। लोगों में आगे का चातुर्मास अपने यहां कराने की भावना जोर पकड़ने लगी। होली चातुर्मास यहीं सम्पूर्ण हुआ। कल्प पूर्ण होने के बाद लाम्बिया, मारवाड़जंकशन आदि गांवों में धर्म प्रचार करते हुए सोजत पधारे और श्री शाहजी के मकान में विराजे।

यहां पाली संघ के कुछ प्रमुख श्रावक अपने यहां चातुर्मास कराने की विनती लेकर संतों की सेवा में उपस्थित हुए। आचार्य श्री ने स्वामीजी के साथ विचार विमर्श कर विनती स्वीकार करली। बाद में अजमेर संघ के प्रमुख श्रावक पहुंचे, किन्तु पाली की स्वीकृति हो जाने के बाद अजमेर का कोई प्रश्न नहीं रह गया। अपने विलम्ब पर पश्चात्ताप करते हुए अजमेर संघ ने शेषकाल फरसने की प्रार्थना की जो स्वीकृत हो गई।

सोजत से विहार कर बगड़ी पधारे और कुछ दिन यहां विराजे। यहाँ से मुनि श्री भोजराजजी म० और पं० मुनि श्री

लक्ष्मीचन्दजी म० के लिए जयपुर निवासी श्री मूलचन्दजी कोठारी के समाचार थे कि मैं अभी बीमार हूँ, अतः इस स्थिति में महाराज श्री इधर पधार कर दर्शन देवें तो ठीक रहेगा। इसलिए दोनों सन्तों को जयपुर के लिए विहार करा दिया और स्वामीजी, आचार्यश्री, मुनि श्री अमरचन्दजी म० एवं छोटे श्री लक्ष्मीचन्दजी म० सब सन्त चण्डावल, पीपल्या, भूँठा, रायपुर, बर, सैंधड़ा होते हुए नयाशहर (ब्यावर) पधारे। मुनि श्री भोजराजजी म० और मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० को श्रीकोठारीजी के देहान्त का समाचार ब्यावर में ही मिल गया अतः वे आगे न बढ अपने संत समुदाय में सम्मिलित हो गए। ब्यावर में कुछ दिन विराज कर खरवा, मांगलियावास, तबीजी होते हुए सबके सब अजमेर पधारे। श्री बाहुमलजी लोढ़ा ने माहेश्वरियों का नोहरा संत निवास के लिए मांग रखा था, अतः उसमें ही ठहरे। व्याख्यान में उपस्थिति अच्छी होती थी। जैन व जैनेतर सभी प्रेम से व्याख्यान का लाभ लेते थे। सेठ श्री बाहुमलजी लोढा की तरफ से एक दिन सामूहिक दयाव्रत हुआ।

अजमेर से विहार कर चातुर्मास के लिए पाली पधारे। वि० सं० १९९२ का चातुर्मास पाली हुआ। नारेलों का वखार और उसके समीपस्थ मन्दिरमार्गियों की धर्मशाला में सब सन्त विराजे। प्रातःकाल प्रथम व्याख्यान स्वामीजी और बाद में आचार्य श्री फरमाते थे। मध्याह्न में आचार्य श्री भगवती सूत्र का वांचन करते थे जिसको स्वामीजी आदि सन्त श्रवण करते थे। शहर में

एक ही चातुर्मास होने से लोगों में धर्म ध्यान अच्छा रहा। आगन्तुक भाइयों के लिए भोजन आदि की व्यवस्था सम्प्रदाय के श्रावकों की ओर से थी। श्री नथमलजी पगारिया, श्री हस्तीमलजी सुराणा, श्री जीवराजजी डोशी, श्री मूलचन्दजी सिरोहिया आदि श्रावक सेवा आदि में विशेष भाग लेते थे। यहां भाई मुन्नीलालजी एक अच्छे जानकार श्रावक थे जो धार्मिक क्रियाओं में पूर्ण रस लेते थे। इस तरह १९९२ का यह चातुर्मास सानन्द समाप्त हुआ।

पाली से विहार एक दिन बगीची में विराजे। यहाँ से पुनायता, चोटीला, रोहीट आदि क्षेत्रों को फरसते हुए जोधपुर पधारे और वहां पर कुछ दिन विराजे। यहां पर पूज्य श्री के एक दो सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहां से विहार कर जनसमूह के साथ महामन्दिर पधारे। वहां पर सुमेरमलजी कांकरिया के मकान में ठहरे। आपका मकान खाली होते हुए सम्प्रदाय के सन्त एवं सतियांजी वर्षों से ठहरते आए हैं, अतः आपको व आपके खानदान को शैय्यातर का लाभ बहुत समय से मिलता आ रहा है महामन्दिर में जब सन्त पधारते हैं तब शहर के श्रद्धाशील भाई बहिनों की भीड़ बनी रहती है।

दहीखड़ा आदि क्षेत्रों को फरसते हुए भोपालगढ़ पधारे और कुछ दिनों तक वहीं विराजे। नागोर के भाइयोंकी कई दिनों से विनती थी अतः यहां से विहार कर नागोर पधारे। नागोर में कुछ दिनों तक विराज कर फिर वहां से फलोदी पधारे। वहां पर चन्दन-

मलजी मूथा जोधपुर से दर्शनार्थ आए और बोले कि आपका और आचार्य श्री जवाहरलालजी म० का सम्मिलित चातुर्मास हो, ऐसी हमारी इच्छा है। तदनुसार विचार विमर्श कर स्थान निश्चित हुआ। उस समय आचार्य श्री जवाहरलालजी म० ब्यावर विराजते थे। दोनों ओर के निश्चय से जेठाणा स्थान निश्चित हुआ। स्वामी जी और आचार्यश्री फलोदी से मेड़ता, रीयां, आलणियावास, गोविन्दगढ़, पिंसागण होते हुए चैत्र शु० ५ मंगलवार को जेठाणा पधार गए। शाम को आचार्य श्री जवाहरलालजी म० युवाचार्य श्री के साथ ११ ठा० से पधारे। दोनों आचार्य प्रेम और वात्सल्य से विभोर होकर परस्पर मिले। दो दिन एक ही जगह पर व्याख्यान हुआ।

दो आचार्यों को एकत्र विराजमान होने के समाचार से अजमेर जोधपुर, मालवा' मेवाड़, मारवाड़ आदि के बहुत से श्रावक दर्शनार्थ यहां आए। काठियावाड़ के श्रावक भी विनती लेकर आए थे जोधपुर और अजमेर श्रीसंघ ने भी अपने २ यहां संयुक्त चातुर्मास की विनती की किन्तु आचार्य श्रीजवाहरलाल जी म०के काठियावाड़ फरसने के आग्रह विशेष के कारण ऐसा संभव नहीं हो सका और उन्होंने काठियावाड़ की ओर विहार कर दिया। आचार्यश्री हस्तीमल जी म० भी यहां से विहार कर अजमेर पधारे और ममैयों के नोहरे में विराजे। अजमेर श्रीसंघ ने चातुर्मास की विनती की जिसकी स्वीकृति उसे मिल गई।

१६६३ अजमेर का चातुर्मास....

अजमेर से विहार कर जयपुर संघ की शेष काल की विनती मानकर किशनगढ़ होते हुए वै० शु० तीज को सन्त जयपुर पहुंच-गए, और चौड़ा रास्ता "लाल भवन" में विराजे । आचार्य श्री के विराजने से श्रावकों में धर्म ध्यान की प्रवृत्ति अच्छी रही। कल्प पूरा होने पर यहां से विहार कर पूनमचन्दजी वैद के बाग में पधारे और कुछ दिन तक यहां विराज कर भाखरोटा पहुंचे। जयपुर के २००-३०० भाई बहन दर्शन के लिए भाखरोटा पहुंच गए। दोपहरी में स्थविर मुनिश्री ने व्याख्यान में ब्रह्मचर्य के विषय में फरमाया कि जैसे मोती में पानी का ही मोल होता है, वैसे मनुष्य में भी ब्रह्मचर्य (शील) की ही कीमत है। ब्रह्मचर्य ही जीवन है, तेज है, प्रताप है और है जीवन की जगमगाती ज्योति है। कहा भी है कि—"मरणं विन्दु पातेन जीवनं विन्दु धारणात्" अर्थात् जिसके विन्दु पात मात्र से मरण और धारण से जीवन कायम रहता है। जिसके शरीर में यह जिस परिमाण में विद्यमान रहता है, शौर्य, साहस, धैर्य और परिश्रमादि भी वह उसी, अनुपात में कर सकता है।

प्रायः देखा जाता है कि आज के लोग भोग विलासों में इस ब्रह्म रूप तेज को पानी की तरह बहा कर शरीर को अशक्त और निर्बल बना कर असमय में ही व्याधि, बुढ़ापा और मृत्यु का आश्रय ग्रहण कर लेते हैं। इसके विनाश से उत्साह शक्ति,

कार्य शक्ति और स्मरण शक्ति आदि जीवन प्रेरक शक्तियों की कमी पड़ती जारही है। जिससे व्यक्ति के साथ ही राष्ट्र की भी महान् क्षति हो रही है। निरुत्साही, निरानन्द, निर्बल और अरिनन्दन से भला किसी राष्ट्र का क्या उपकार और शोभावृद्धि हो सकती है ? शरशय्या पर पड़े हुए भीष्मपितामह ने जिसके लिए कहा था कि—

"निरुत्साहं निरानन्दं, निर्वीर्यमरिनन्दनं ।
मास्म सीमन्तनी काचित्, जनयेत्पुत्रमीदृशम् ॥

यही कारण था कि पहले के लोग यत्न पूर्वक शील का पालन करते थे जिनसे वे दीर्घायु, स्वस्थ, सबल और हृष्ट पुष्ट अङ्गों वाले होते थे। उस समय जगह २ ब्रह्मचर्याश्रम कायम थे जिनमें ब्रह्मचर्य का ज्ञान, ज्ञान की पहली शर्त मानी जाती और जो बिना किसी भेद के सब के लिए अनिवार्य था। ब्रह्मचर्य का पालन उन दिनों मानव जीवन का एक प्रमुख अंग ही नहीं वरन् बड़प्पन का प्रतीक माना जाता था। कामाचार आज की तरह अमृत तुल्य नहीं किन्तु विषवत् त्याज्य समझा जाता था। भरी जवानी में भी लोग हंसते हुए विषय विराग व्रत स्वीकार कर लेते थे। जैसे—कच्छ देश में कोशांबी नाम की एक नगरी थी जो बाग बगीचों से सुशोभित थी। वहां धन्ना सेठ के विजयकंवर नाम का एक लाड़ला पुत्र था जिसका विवाह रूप गुण सम्पन्ना विजयाकुमारी से हुआ। सोलह शृंगार एवं वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर जवानी के उमंग में जब विजयाकुमारी विजयकंवर के पास पहुंची

तो उसके मोहक रूप और कामोत्तेजक हावभाव को देखकर कुंवर ने कहा कि अभी कृष्ण पक्ष है और इसपक्ष में विषय सेवन का मुझे त्याग है । इस पर विजया कुंवारी साश्रुनयन बोली कि नाथ ! मुझे शुक्लपक्ष का त्याग, है किन्तु कुछ भी डर नहीं। अबसे हम दोनों बहन भाई की तरह मिल जुलकर बातें करते समय बितावें। शर्त एक है कि माता पिता को न मालूम होने तक ही संसार वास, वर्ना साधु जीवन में प्रवेश कर जायेंगे।

संयोग से किसी नगर के जिनदास सुश्रावक को स्वप्न आयाकि वह ८४००० साधुओं को एक साथ पारणा कराये। उसने विमलकेवली से यह हाल बताया तो उन्होंने इन दोनों का वर्णन किया और इनको पारणा कराने से स्वप्न शर्त पूरी होने की बात भी बताई। फिर क्या था जिनदास सीधे इन दोनों के पास आया और दर्शन रूप अमृत का पान कर, मन ही मन खूब खुश हुआ। तब माता पिता को भी रहस्य मालूम हुआ और सब लोग इनके इस ब्रह्मचर्य माहात्म्य को जान गए। आखिर इन दोनों ने धन दौलत सब त्याग, साधु दीक्षा ग्रहण करली।

इस कथा से हमें शिक्षा मिलती है कि ब्रह्मचर्य पालन में तो जवानी बाधक होती है और न रूप गुण। न तो धन दौलत ही अवरोधक होता है और न गृहस्थाश्रम ही। जरूरत है कि मन संयत और अडोल बना रहे एवं ब्रह्म की महिमा और उपयोगिता की हमें सच्ची परख एवं मूल्यांकन की क्षमता होवे। ब्रह्म

ही हमारा वर्चस्व और ओज है। ब्रह्मचारी की पूजा देव ही नहीं देवेन्द्र भी करते हैं और उसके चरणों में शीश झुकाते हैं। शील ही नर का शृंगार है, भूषण एवं अलकार है। इसके प्रभाव से मनुष्य त्रिकालज्ञ और सर्वदर्शी भी बन जाता है। ब्रह्मचारी की गति अबाध, भावना सफल, विचार उच्च एवं मनोरथ सिद्ध होते हैं।

शील की महिमा पर महाराज श्री अवसर निम्न कवित्त फरमाया करते थेः—

सीयल नरां सिणगार सील सुरनर सिर नामे।
सीयल धर्म रो सार, परम सुख सीले पामे॥
सीले जस सोभाग, सीलै संपदे सदाई।
सीले लीला सरस, वधै जस सील वडाई॥
नर नारि सीलधारी निपुण होय सुखी पातक हरे।
आदरे सील पाले अखड, कवण तास सम वड करै॥१॥
सीले सीतल आग, नाग विप टलें निरंतर
सीले जोर न सिंह, गाढ़ तजि भाजें गैंयवर॥
सीले जय संग्राम, द्वेष नवि धरें दुरजण।
रोग न सीले रंच, वंदि न पडे कभी वंधण॥
उघाट विषम जल थल अनल, अवर देश मारग अगम।
जाणत जगत जिण भय जिहां, सीलवत नर नें सुगम॥२॥

अतः सबको ब्रह्मचर्य के इस महा महत्व को हृदय में धारणकर

जीवन यात्रा में कदम बढ़ाना चाहिए। कुछ भाईयों ने कुशील का त्याग भी किया।

शामको आपको वमन व दस्त होने लगी, रात्रि में भी यही हालत रही। सेवा में रहे हुए श्रीज तनमलजी नवलखा आदि प्रमुख भाइयों ने अर्ज की अब आपको आगे न बढ़ कर पुनः जयपुर ही पधारना चाहिए। इस हेतु पुनः आपको जयपुर पधारना पड़ा। यहां कुछ दिन रह कर इलाज कराया गया। जब आप पूर्ण स्वस्थ हो गए तो वहां से फिर विहार किया। साथ में सेठ श्रीमुन्नीलाल जी सुखलेचा, भवरलाल जी मूमल, गट्टूलाल जी पटणी सोभागमलजी छाजेड़ नथमलजी वम्ब आदि श्रावक सेवा में थे। वे दूदू तक पहुंचाने आए—इस तरह क्रमशः विहार करते हुए किशनगढ़ पहुंचे और वहां पर कुछ दिन विराज कर फिर चातुर्मास के लिए अजमेर पहुंच गए।

अजमेर में ममैयों के नोहरे में विराजे। ठाणापति महासतीजी राधाजी के सिवाय महासतीजी श्री धनकुंवरजी, श्री सुगनकुंवरजी (श्री गोगांजी) आदि सतियों का चातुर्मास भी यहीं कराया गया था। वृद्धिमास के कारण यह चातुर्मास पांच महीने का था। पर्युषण में व्याख्यानवाणी का अच्छा ठाठ रहा। संवत्सरी के दिन अधिक सख्या होने के कारण ऊपर व नीचे दो जगह व्याख्यान हुआ। मन्दिर मार्गीय सम्प्रदाय की ओर से मुनिश्री दर्शनविजयजी का चातुर्मास था। मूर्तिपूजक समाज के कुछ व्यक्तियों ने चंदबातों को लेकर पर्चावाजी आरंभ करदी। दूसरी ओर से भी आवश्यक

जवाब दिए गए। वातावरण काफी कलुषित होगया। परस्पर शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया गया, जिससे प्रमुख श्रावकों से परामर्श कर आचार्य श्री ने नियम पूर्वक शास्त्रार्थ करना स्वीकार किया। उधर दर्शन विजयजी और इधर आचार्यश्री शास्त्रार्थ के लिए ओसवाल हाई स्कूल में पधार गए। इधर अजमेर के दोनों संघों के प्रमुख श्रावकों ने यह तय किया कि हम लोग इस तरह की चर्चा करना नहीं चाहते। चर्चाओं से आज तक कहीं भी समाधान नहीं हुआ। जिसकी जो मान्यता या श्रद्धा है, उससे वह अलग नहीं हो सकता। फिर इन बातों से द्वेष और कलह बढ़ने के सिवा कुछ लाभ मिलने को नहीं। जिन लोगों ने यह नोटिसबाजी करके वातावरण को गन्दा बनाया है, उनको हम सब हेय दृष्टि से देखते हैं। इस तरह होने वाली चर्चा स्थगित होगई। धर्म ध्यान वृद्धि के साथ अजमेर का चातुर्मास भी समाप्त हुआ। दर्शनार्थियों के लिए भोजन व्यवस्था सेठ गाढ़मलजी लोढ़ा की तरफ से थी। केशरीसिंहजी की हवेली में संघ के कार्यकर्त्ता और सेठजी स्वय स्वधर्मियों की सेवा करते और उनकी आवश्यकता के लिए पूछते थे।

इस चातुर्मास में सातारा निवासी सेठ चन्दनमलजी मुथा ने "दक्षिण पधार कर सातारा चातुर्मास करावें" इस प्रकार अश्रु भरे नयनों से प्रार्थना की और कहाकि अब मैं सेवा में न आ सकूंगा। आप ही कृपा करके वहां दर्शन देंगे तो दर्शन का लाभ मिल सकेगा। यद्यपि आप प्रति वर्ष ही सेवा में आते रहते

थे और दक्षिण पधारने की प्रार्थना भी करते थे किन्तु इस वक्त की प्रार्थना में आन्तरिक भाव कुछ और ही थे। सन्तों ने भी आपकी प्रार्थना को ध्यान में रखते हुए सातारा फरसने का ध्येय बना लिया।

चातुर्मास में बरेली निवासी जुगराजजी, रतनलालजी नाहर आदि भी सकुटुम्ब उपस्थित हुए थे। यहां पर कोटा निवासी तेजमल जी बोहरा की धर्मपत्नी श्री हरककुंवर जी की दीक्षा महासतीजी श्रीधनकुंवरजी की नेश्राय में सानन्द सम्पन्न हुई। दीक्षा का सब व्यय बरेली निवासी जुगराजजी रतनलाल जी नाहर ने वहन किया।

चातुर्मास समाप्त होने पर मिगसर वद १ को विहार कर जीतमलजी लोढ़ा की कोठी पर पधारे। आचार्यश्री को साधारण ज्वर पहले से ही था। वहां जाने पर विशेष बढ़ गया और कमजोरी के कारण पीलिए का रूप धारण कर लिया। इस लिए आगे का विहार कुछ दिनों के लिए रुका रहा और चिकित्सा चालू की गई। इधर एक दिन मुनिश्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० को शहर से वापस आते समय पांव पर तांगे का पहिया फिर जाने से काफी चोट आगई। उनके इलाज में भी काफी समय लग गया। इस प्रकार सहज ही यहां अढ़ाई २॥ महीने रुकना पड़ा। यहां से माघ सुदि में विहार कर केसरगंज, जादूघर में कोठारी जालमसिंह के बंगले में विराजे। कोठारी सा० आर्यसमाज का संस्कार रखते हुए भी जैन साधुओं के प्रति अच्छी श्रद्धा

रखते थे। आपके आग्रह से यहां दो तीन व्याख्यान हुए। यहां से नसीराबाद पधारे। यहां पर कुछ दिन विराज कर बांदनवाड़ां, भिणाय, ठांठोती, विजयनगर आदि गांवों में धर्म प्रचार करते हुए गुलाबपुरा पहुंचे और कुछ दिनों तक यहां विराजे।

गुलाबपुरा में पंजाब से आए हुए मुनि श्री लालचन्दजी भी साथ हो गए। यहां से विहार कर आगुंचा, बनेडा आदि क्षेत्रों को फरसते हुए भीलवाड़ा पहुंचे और अग्रवालों की धर्मशाला में ठहरे। होली चातुर्मास यहीं पर हुआ। यहां पर उदयपुर संघ का एक शिष्ट मण्डल, उदयपुर फरसने की विनती को लेकर उपस्थित हुआ। जिसमें श्री केशवलालजी ताकड़िया कालूलाल जी छाजेड़ आदि श्रावक थे और उनका अत्याग्रह था कि आप उदयपुर फरसे बिना आगे न बढें। अतः पूज्य श्री ने उदयपुर सघ की विनती स्वीकार करली।

उदयपुर की ओर ....

यहां से विहार कर हमीरगढ़, आमली, सनवाड़ आदि गांवों को फरसते हुए कपासन पहुँचे। वहां पर पहले से श्रीज्ञानचन्द-जी म० की सम्प्रदाय के श्रीइन्द्रमलजी म० विराजमान थे। आपने अपनी शिष्य मण्डली सहित आचार्यश्री एव स्थविर मुनि श्री का स्वागत किया। सब सन्त आपके साथ न्यात के नोहरे में विराजे। व्याख्यान सबका सम्मिलित रूप से होता था। भाइयों में धर्म प्रेम और उत्साह प्रशसनीय था। यहां से विहार कर

करेड़ा, मावली, देवारी होते हुए आयड़ पधारे और कोठारीजी की बाड़ी में ठहरे। यहां पर उदयपुर के लोग बहुत संख्या में आते रहे। यहां से विहार कर उदयपुर पहुंचे और कोठारीजी सा० के मकान में ठहरे। उदयपुर के वृद्ध तथा युवकों में श्रद्धा भक्ति अच्छी थी। यहां के संघ ने आगे का चातुर्मास करने के लिए बड़ी भक्ति के सथ प्रार्थना की जिसे पूज्यश्री ने बड़े महाराज श्री से विचार करके स्वीकार कर ली। यहां से विहार कर गोगुन्दा पधारे। गोगुन्दा एक ऊँचा और रमणीय स्थान है। कुछ दिन यहां विराजे। यहां से नाथद्वारा पधारे और कुछ दिन यहां भी ठहरे। यहांके भाइयों की धार्मिक लगन अच्छी थी। सभी भाइयों ने सामूहिक दयाव्रत भी किया। यह एक प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थस्थान है, जहां पर वैष्णव सम्प्रदाय के तथा अन्य दर्शनार्थी भी प्रतिदिन सैकड़ों की तादाद में आते रहते हैं। यहां बारहों महीने चहल पहल बनी रहती है।

किसी समय यहां के जैनियों को इन वैष्णवों से बड़े संकटों का सामना करना पड़ा था फिर भी जैनियों ने अपनी टेक नहीं छोड़ी और अपनी जगह पर जमे रहे। यहां से विहार कर देलवाड़ा पधारे और न्यात के नोहरे में ठहरे। यहां भी लोगों में धार्मिक प्रेम अच्छा रहा। यहां से विहार कर चातुर्मास के लिए एकलिंगजी होते हुए पुनः उदयपुर पधारे। यहां के युवकों ने काफ़ी उत्साह के साथ आचार्यश्री एवं मुनिराजों को नगर प्रवेश कराया। सभी सन्त न्यात के नोहरे में ठहरे, जो एक बहुत बड़ी विशाल जगह

है। व्याख्यान में भाई बहनों की उपस्थिति अच्छी होती थी। यहां पर पहला व्याख्यान पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० का तथा बाद में आचार्य श्री का होता था। आचार्य श्री के न फरमाने पर स्थविर मुनिश्री फरमाते थे। श्रीअमरसिंहजी म० की सम्प्रदाय की तत्कालीन विराजमान सतियांजी श्री सोहनकुंवरजी आदि भी व्याख्यान में आती थीं। चातुर्मास में लोगों ने धर्म ध्यान अच्छा किया। पर्युषण में मध्याह्न में कल्पसूत्र का वांचन स्वामीजी म० करते थे। मुनि श्री भोजराजजी म०, मुनि श्री अमरचन्दजी म०, पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म०, मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० तथा मुनि श्री लालचन्दजी म० इस चातुर्मास में साथ थे।

सं० १९९४ का चातुर्मास करके पुनः मालवे की ओर–

चातुर्मास में जोधपुर मारवाड़ आदि के श्रावक एवं श्राविकाओं की उपस्थिति भी काफी रही। इस तरह से १९९४ का यह चातुर्मास उदयपुर में बड़े ठाठबाट के साथ सम्पन्न हुआ। मंगसिर बद १ को यहां से विहार कर शहर के बाहर कोठारीजी की बाड़ी में पधारे और वहां से विहार कर आगे आयड़ पहुंचे। यह स्थान भी कोठारी जी का ही है जो श्मशान भूमि के निकट है। यहां पर राजा महाराजाओं की कई छोटी मोटी छत्रियें स्मृतिरूप में बनी हुई हैं। स्थान एकान्त, रमणीक एवं स्वाध्याय और ध्यान करने वालों के लिए सर्वथा उपयुक्त है।

यहां पर उदयपुर संघ ने साधु मार्गीय सम्प्रदाय का प्रीतिभोज

किया था जिसमें हजारों स्त्री पुरुष नजर आते थे। यहां से खैरोदा, भीण्डर होते हुए कानोड़ पधारे। कानोड़ एक अच्छा कस्बा है, जहां स्थानकवासियों के १५० या २०० के करीब घर हैं। लोगों में धर्म प्रेम अच्छा था। कुछ दिन यहां विराज कर डूंगला होते हुए बड़ी सादड़ी पधारे और न्यात के नोहरे में ठहरे। यहां के संघ में दो पार्टी थी किन्तु दोनों दल के लोग आते जाते थे। यहां से विहार कर छोटी सादड़ी पहुंचे। यहां से मुनि श्री भोजराज जी म० और मुनिश्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० को महागढ़ की ओर विहार कराया। महागढ़ मुनिश्री लक्ष्मीचन्द जी म० की जन्म भूमि का गांव था। पूज्य श्री और बड़े महाराज प्रतापगढ़ पधारे और वहां से पीपलौदा पधारे। यहां पर जावरा और सैलाना के भाई अपने२ गांव फरसने के लिए प्रार्थना करने आए।

सैलाने में प्रवचन

जावरा फरसने का विचार कम था, इसलिए सैलाना संघ की विनती मानकर सीधा सैलाना पधारे। सैलाने में पूज्यश्री को ज्वर आने लगा इसलिए कुछ विशेष दिनों तक यहां ठहरना पड़ा। यहां पर रतलाम के तीनों पार्टी के श्रावक अपने यहां पधारने के लिए प्रार्थना करने आए। पूज्यश्री को ज्वर होने के कारण व्याख्यान स्थविर मुनि श्री ने फरमाया। उस दिन आपने व्याख्यान में "पुद्गल तूने दे दे धक्का मुझको खूब रूलाया रे" इस स्तवन पर प्रवचन फरमाया। आपने जीव और पुद्गल के पारस्परिक सम्बन्धों की चर्चा करते हुए कहा कि—

षट्द्रव्यन में तू और मैं ही दोनों हैं अलवान ।
तैंने मुझको ऐसा बनाया भूल गया स्वभान । पुद्गल०
यद्यपि मैं हूँ सिद्ध स्वरूपी, तव अचेतन भाव ।
तुझ जड़ से मैं ऐसा बधिया, खोया चेतन नाम । पुद्गल०

अर्थात् यह जगत् षड द्रव्यात्मक है जिसमें धर्म, अधर्म, आकाश, काल, जीव और पुद्गल ये भिन्न २ स्वभाव वाले छद्रव्य हैं । जैन दर्शन की मान्यता के अनुसार धर्म जीवों के चलने में सहायक होता तथा अधर्म ठहरने में । आकाश अवकाश प्रदान करता और काल प्रतिपल परिवर्तन का प्रभाव बतलाता है । जीव अरूपी और सच्चिदानन्द गुण युक्त एक सचेतन सत्ता है तथा पुद्गल रूपी और नाना विध चाकचिक्यों से चेतना को चमत्कृत करने वाला एक अचेतन मोहनीय भाव है ।

अनादिकाल से जीव इस मनमोहक पुद्गल के मोहनीय प्रभावों से मुग्ध बन कर सुध बुध भूले हुए ससाररूप दुःखदायी कान्तार में भटक रहा है । वेदान्त के शब्दों में जैसे माया ब्रह्म को स्वरूप का भान नहीं होने देती वैसे ही पुद्गल का प्रभाव जीव को उन्मत्त बनाए रहता है और उसके शुद्ध,-बुद्ध सिद्धत्व को बादल से ढ़ंके रवि की तरह अज्ञात बनाए रहता है । पुद्गलों के फेरे में पड़ कर जीव किन २ विपदाओं का सामना नहीं, करता ? किन २ दुर्वृत्तियों से सम्बन्ध नहीं जोड़ता और भव सागर के जन्म मरण रूप भंवर में अनचाहे भी गोते खाते रहत है । सांसारिक प्रपंच पंक में फंस कर वह अवर्णनीय व्यथा को

सहता और गुडमक्खी की तरह अकुलाता रहता हैं। मगर जीव की यह दशा तभी तक रहती है जब तक कि उसे अपने रूप का ज्ञान नहीं हो पाता। एक वार स्व स्वरूप का बोध हो जाने पर फिर तो पुद्‌गलों की क्या हस्ती जो जीव को जजाल में डाल सके। जैसे एक रईस हवाखोरी के लिए शिमला शैल पर गया। वहां उसके बगले की सफाई करने के लिए एक मेहतरानी आती थी। मेहतरानी का रूप और वय में जादू सा असर था जिससे रईस का दिल विचिलित होगया। उसने मेहतरानी को अपने साथ देश चलने एवं अपनी पत्नी बनने को कहा किन्तु वह एक शर्त पर राजी हुई कि मैं अपनी जाति में रहते हुए तेरी अभिलाषा पूरी कर सकती हूँ, अतः तुम्हें भी मेरी जाति व कर्म स्वीकार करना होगा। काम वासना से वासित उस रईस ने सारी शर्तें कबूल कर लीं। कुछ दिनों तक तो दोनों बहुत आनन्द से रहे मगर बाद में मेहतरानी ने रईस को अपने काम पर साथ चलने के लिए कहा। क्या करता? प्रेम पुजारी रईस उसके पीछे २ छाया की तरह चलने लगा। जो काम उसने कभी आंखों नहीं देखा था, अब इस विषय प्रपंच में फंस कर वही उसे करना पड़ रहा था।

एक दिन रईस ने मन ही मन सोचा अरे! मैं यह क्या कर रहा हूँ। मेरे पीछे काम करने वाले सैंकड़ों नौकर थे और आज मैं इस भंगिन के पीछे मल ढ़ो रहा हूँ, कूड़ा उठा रहा हूँ? ऐसा सोचते २ उसके ज्ञान की आंखें खुल गयीं और वह भंगिन को छोड़ पुनः सदा के लिए स्वदेश चला गया जहां उसके लिए सुखोपभोग की

विपुल सामग्रियां पड़ी थीं। ऐसे ही जिस दिन जीव अपने स्वरूप को स्मरण करता है तो पुद्गल जन्य ये सारे आवरण वायु प्रेरित घन की तरह उससे दूर हो जाते हैं और भास्कर की तरह वह चमकने लग जाता है।

छः द्रव्यों में जीव और पुद्गल दो ही बलवान द्रव्य हैं जिसमें जीव सर्वतः बलवान होते हुए भी पुद्गल प्रभाव वश स्वस्वरूप को भूला हुआ है। जरूरत है कि वह अपने स्वरूप को पहचाने और पुद्गल के धक्के से बचते हुए रोना छोड़कर सहजानन्द कला को अपनावे।

यह प्रवचन आपका बड़ा ही आकर्षक था जिसको आज भी सैलाना के सेठ रांका प्यारचन्द जी और रतनलाल जी साहब डोशी स्मरण करते रहते हैं। आचार्य श्री रतलाम के तीनों पार्टी वालों की विनती को मानकर स्वस्थ हो जाने पर रतलाम पधारे। इस वक्त तीनों पार्टी वालों में से किसी के भी मकान में न ठहर कर सेठ जवाहरलाल जी के मकान में ठहरे। व्याख्यान आम रास्ते पर होता था। जनता काफी संख्या में उपस्थित होती थी। सेठ वर्द्धमानजी पीतलिया सबसे पहले उपस्थित होते थे। आप शास्त्रों के जानकार तथा समाज एवं राजमान्य श्रावक थे।

सेवाभावी संत का स्वर्गवास....

मुनि श्री भोजराज जी म० व छोटे लक्ष्मीचन्द जी म० सहागढ़ फरसकर मन्दसौर जावरा फरसते हुए रतलाम पहुंचे। मुनि श्री भोजराजजी म० को ज्वर आता था। रतलाम पहुंच कर उसने

उग्ररूप धारण कर लिया। दवा का उपचार चालू किया गया किन्तु आराम न होकर बीमारी बढ़ती ही चली गई। फाल्गुन सुद ६-१० को आपको बहुत अधिक तकलीफ होगई। अन्त में फा० सु० ११ की रात्रि को आप दिवंगत होगये। आप सम्प्रदाय में एक सरल एवं शान्त प्रकृति के सन्त थे। सेवा का गुण आप में बहुत बढ़ा चढ़ा था। छोटे मोटे सन्त एवं सतियों को आप बड़े प्रेम पूर्वक शिक्षा देते थे। विनम्र इतने थे कि आप बड़े होते हुए भी आचार्य श्री के साथ जंगल के लिए पानी लेकर जाने में संकोच नहीं करते थे। आपके स्वर्गवास के समय में सम्प्रदाय की प्रमुख सतियां श्री धनकुंवरजी भी वहां पर विराजमान थीं। अतः महासती जी को भी अन्तिम सेवा का लाभ मिल सका। यहां से फा० सु० १३ को विहारकर कसारों का मन्दिर, दिलीपनगर, धराड़, बिलपांख, बरमावर, मुलथान, बदनावर, कानवन, नागदा आदि में धर्म प्रचार करते हुए चैत्र शु० १ को धार पहुंचे।

दक्षिण महाराष्ट्र की ओर.....

धार से चैत्र शु० ४ को देवला नालछा होते हुए मांडू के किले पर पहुंचे। यह एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है। उत्तुंग गिरि शिखर पर बसा हुआ यह ऐतिहासिक नगर किसी समय एक बहुत बड़ा और आकर्षक शहर था। यद्यपि प्राचीन गौरव और आकर्षण आज इसके लुप्त होगये हैं फिर भी अभी भी बड़ी बड़ी कई इमारतें और खण्डहर इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं कि अतीत इसका समुन्नत और महान् था। आज की जनशून्यता की

जगह कभी यहां जनसंकुलता और विविध हलचलों की चहल-पहल थी। पहले यहां पर जैनियों की बहुत बड़ी बस्ती थी। मदाशाह और भैंसाशाह की हवेलियें खण्डहर के रूप में आज भी विद्यमान हैं। यहां एक जैन मन्दिर है किन्तु जैनों के घर नहीं हैं। मन्दिर की कोठरियों में आये हुए सन्त एवं सतियां ठहरते हैं। नालछा के भाई सन्तों को धामणोद तक पहुंचाने के लिए साथ में रहते हैं।

नालछा से स्वामी जी महाराज ने ठा. ३ से आगे विहार किया। आचार्यश्री ने १ दिन के पश्चात् विहार किया। धार संघ ने स्वामी जी के साथ धुलिया तक एक भाई की व्यवस्था की थी, आचार्य श्री के साथ सैलाना निवासी तखतमलजी कटारिया अहमदनगर तक सेवा में रहे।

मांडू से विहार कर भगवानिया घाटा पार कर शाम को भगवानिया गांव में पहुचे। यह घाटा बहुत भयानक है। करीब तीन कोश पहाड़ का उतार है। वहां से धामणोद पहुचे। यहीं आगरा रोड मिलती है जो बम्बई से आगरा को जाती है। धामणोद से निवराणी, ठीकरी, खुरमपुरा, वरूफाटक, जुलवाणिया, वाल-समुद्र, शाली होते हुए सैंधवा पहुंचे। इन गांवों में से ठीकरी जिसमें दो घर स्थानक वासियों के हैं, छोड़कर बाकी गांवों में वैष्णव अग्रवालों की बस्ती है, जैनों की नहीं है। सैंधवा में काठियावाड़ी स्थानक वासी भाइयों के ७-८ घर विद्यमान हैं। भाइयों में धार्मिक प्रेम अच्छा है। सैंधवा से विहारकर नवाड़ी, पलासनेर, सांगवी, हाड़खेड़, दोहद होते हुए सिरपुर पहुंचे।

सैंधवा से सिरपुर तक बीच के गांवों में जैनों की वस्ती नहीं है। आहार पानी कुछ कठिनता से मिलता है। पहाड़ी भूमि का रास्ता है तथा वस्ती अधिकतर भीलों की है।

२-३ दिनों तक सिरपुर में विराजे। यहां पर १०-१५ घर स्थानकवासियों के हैं। लोगों में धार्मिक प्रेम अच्छा है। यहां से बंगाड़ी, जातड़ा, वरसी, नडाणा, करमाणी, होते हुए वैशाख सुदे ३ को सोनगिर पहुँचे और दिगम्बर जैन मन्दिर में ठहरे। यहीं पर अहमदनगर से संघ का एक शिष्ट मंडल चातुर्मास की विनती के लिए आया। उसमें संघ के करीब २५ प्रमुख श्रावक थे। साथ में गुलेदगढ़ निवासी लालचंद जी सा० मुथा भी थे। यहां चातुर्मास की विनती न स्वीकार करते हुए कहा कि धुलिया पहुंचने पर जैसा अवसर होगा वैसा देखा जायेगा। यहां से विहारकर धूलिया पहुँचे और स्थानीय स्थानक में ठहरे। भाइयों में धर्म प्रेम अच्छा था। यहां पर जलगांव के संघ और अहमदनगर के संघ ने पुनः चातुर्मास की विनती की और धुलिया संघ की भी विनती थी, किन्तु सातारा वाले सेठ जी को शास्त्र प्रकाशन का कार्य चालू करना था जो अहमदनगर चातुर्मास में चालू हो सकता था, अतः जलगांव और धूलिया संघ की विनती न मानकर अहमदनगर के संघ की विनती स्वीकार करली गई।

१९९५ का चातुर्मास अहमदनगर....

धुलिया से विहार कर आर्वी, कन्नाणा होते हुए मालेगांव पहुँचे और वहां एक मराठी स्कूल में ठहरे। यहां संघ की ओर से

कोई धर्म-स्थान नहीं था। यहां के काठियावाड़ी और मारवाड़ी भाईयों में धर्म प्रेम अच्छा था। कवलाणा जलगांव होते हुए मनमाड़ पहुंचे और स्थानक में ठहरे। मनमाड़ मे स्थानकवासियों के ३५ या ४० घर होंगे, यहां सन्त एवं सतियों के चातुर्मास प्रायः हुआ करते हैं। यहां से विहार कर आनकाइ सांवरगांव येवला पहुँचे। येवला में साधुमार्गीय जैनों के १५-२० घर हैं जिनमें तिंवरी मारवाड़ के भी हैं। यहां कुछ दिन ठहर कर कोपर गांव पहुँचे। यहां भी ४-५ दिन विराजकर रहाता, आसगांव बामलेश्वर, कोलहार होते हुए राहुरी पहुँचे और धर्मस्थान में ठहरे। यहां साधु मार्गीय सम्प्रदाय के २०-२५ घर हैं। धर्म की लगन ठीक है। यहां से विहार कर सींगवा होते हुए बाम्बोरी पहुंचे और कुछ दिन तक यहां विराजे। यहां से पीपल गांव भिगार होते हुए आषाढ़ शु० ३ को चातुर्मास के लिए अहमदनगर पहुंचे और नई पैठ के विशाल स्थानक में ठहरे।

अहमदनगर महाराष्ट्र का एक बड़ा नगर है। इसका अतीत भी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों से भरा हुआ है। १९४२ के राष्ट्रीय आन्दोलन में गिरफ्तार नेतागण अहमदनगर किले में ही नजरबन्द रक्खे गये थे। यहां ओसवालों के करीब ४००-५०० घर हैं, जिनमें अधिकतर स्थानकवासियों के ही हैं। यहां पर छोटी तथा बड़ी न्यात में परस्पर अच्छा प्रेम है। कुन्दनमलजी फिरोदिया, माणकचन्दजी मुथा, गोकुलजी कटारिया, धोण्डीरामजी मुणोत, पूनमचन्द जी

भण्डारी, सुखराजजी कांकरिया, सिरेमलजी लोढ़ा आदि संघ के प्रमुख श्रावक हैं। चातुर्मास में लोगों ने धर्म ध्यान ठीक किया। पर्युषण में व्याख्यान के लिए बाहर पंडाल में व्यवस्था की गई थी। इधर के क्षेत्रों में पर्युषण के दिनों में बाहर के लोगों की उपस्थिति अच्छी रहती है। भादवा सुदि १ को महावीर जन्म का महोत्सव बड़े ठाठबाट के साथ मनाया जाता है। इस तरह से १९९५ का चातुर्मास अहमदनगर में सानन्द समाप्त हुआ। चातुर्मास में ऋषि सम्प्रदाय की महासतियां जी श्री राज कुंवरजी म० ठा० ३ से विराजते थे तथा व्याख्यान वाणी का लाभ लेते रहते थे।

सातारे की ओर प्रस्थान..

मगसर वदि १ को विहार कर मोतीलालजी मुथा के बंगले पर पधारे। यहां से आरणगांव अकोलनेर, सारोला, घास्त गांव, राजनगांव पीपलगांव, बेलवन्डी, लूनी, पारगांव इन सब गांवों में धर्म प्रचार करते हुए श्रीगोन्दा पधारे। यहां पर करीब २५ घर स्थानकवासी जैनियों के हैं। लोगों में भाव भक्ति अच्छी थी। कुछ दिन तक यहां विराजे और फिर से पारगांव, लूनी बेलवन्डी, कुण्डेगव्हन दिट्टाण होते हुए पौष कृष्णा १३ को घोड़नदी पधारे। यहां पर साधुमार्गीय दोनों सम्प्रदाय के घर हैं। करीब ६०-७० घर स्थानकवासियों के हैं। जुमरमलजी बाफणा प्रेमराजजी खाबिया आदि

यहां के संघ के प्रमुख श्रावक थे। प्रेमराजजी खाविया ने अपने जीवन काल में हजारों जीवों को अभयदान दिया होगा। देवी देवताओं के स्थान पर जहां बलियां दी जाती हैं, वहां पहुँच कर इन लोगों को समझा कर हिंसा तथा बलि बन्द करवादी है। घोड़नदी में पशुओं का बाजार भरने पर वहां किसानों को समझा कर बम्बई से आने वाले कसाइयों के हाथ पशुओं को नहीं जाने देते हैं। यहां पर कोटा सम्प्रदाय के स्थविर मुनि श्री पेमराज जी म० तपस्वी श्री देवीलाल जी म० श्री जीवराज जी आदि सत विराजमान थे, अतः उन लोगों से मिलने का मौका मिला सन्तों के नजदीक के ही स्थानों में ठहरे थे। व्याख्यान भी एक ही जगह होता था। संतों में वात्सल्य पूर्ण व्यवहार रहा।

घोड़नदी से माघ कृष्णा ४ को विहार कर कारेगांव, राजनगांव, कोढांपुरी होते हुए तलेगांव पहुंचे और मन्दिर मार्गियों की धर्मशाला में ठहरे। यहां पर मारवाड़ियों के ७-८ घर थे विशेषकर गुजराती मन्दिरमार्गी जैनों के घर थे। फूलगांव वागोली होते हुए माघ शुक्ला पंचमी को ऐरवाड़ा पहुँचे। यहां पर स्थानकवासियों के सात आठ घर हैं। यहां से विहार कर माघ शु० ७ को पूना पहुँचे। यहां दो धर्मस्थान थे। जो बड़ा स्थानक था उसमें ऋषि सम्प्रदाय की महासती जी विराजमान थी। अतः भवानी पेठ के छोटे स्थानक में ठहरे। यहां पर मारवाड़ी व काठियावाड़ी भाइयों के मिला कर करीब

१५० घर स्थानकवासियों के होंगे। मोएडीराम जी खींवेसरा गुलराज जी कावड़िया, चुन्नीलाल जी कावड़िया और बालाराम जी आदि संघ के प्रमुख श्रावक थे। यहां पर कई दुकानें सादड़ी (मारवाड़) के लोगों की हैं। उन लोगों में धर्म प्रेम तथा समाजोपयोगी कार्यों में द्रव्य लगाने तथा खर्च करने की प्रवृत्ति काफी अनुकरणीय है।

यहां सातारा संघ के प्रमुख श्रावक दीवान बहादुर सेठ मोतीलाल जी मुथा, फूलचन्द जी मुणोत आदि चातुर्मास की विनती के लिए आए। आचार्यश्री ने स्वामी जी म० से विचारणा करके चातुर्मास की स्वीकृति फरमाई। यहां से फा० सुद ३ को विहार कर खिड़की पहुंचे। खिड़की में धर्म स्थान न होने के कारण मन्दिर मार्गियों की धर्मशाला में ठहरे और कुछ दिन तक विराजे। यहां से विहार कर चिंचवड़ पधारे और धर्मस्थान में ठहरे। यहां पर पं० मु० श्रीआनन्द ऋषि जी म० के पधार जाने से सन्तों में प्रेम भाव अच्छा रहा। व्याख्यान दोनों सन्तों का विद्यालय के भवन में होता था। रामचन्द्र जी लूंकड़ यहां के संघ के प्रमुख कार्यकर्ता थे। लोगों में धर्म ध्यान की लगन अच्छी थी। यहां से पुनः खिड़की, वाहरोली, यरवड़ा, घोरपड़ी, हड़पसर, लूणी, उरली, येवत आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए ज्ये० कृ० १ को केड़गांव स्टेशन पहुँचे। कुछ दिन यहां विराज कर बोरी बरवंड, पारस होते हुए दोंड पहुँचे। यहां धर्म स्थान नहीं था अतः एक गृहस्थ के मकान में ठहरे। लोगों

में धर्म प्रेम साधारण था। यहां से विहार कर, सरसुफल, वारामती, पनदारा, वड़गांव, वागलवाड़ी, नीरा स्टेशन, लोणन, देवर, पाड़ली को फरसते हुए वड्डद पहुँचे। यहां एक मन्दिर-मार्गी भाई का घर था जो सन्तों के प्रति प्रेम भाव रखने वाले थे। यहां से दूसरे दिन विहार कर सातारा पहुँचे और मन्दिर में ठहरे। यहां ऊपर जैन मन्दिर तथा नीचे धर्म ध्यान के लिए जैन स्थानक है। स्थानकवासियों के करीब १५ घर हैं। लोगों में धर्म प्रेम प्रशंसनीय था किन्तु खटकने की बात एक ही थी कि जिन की प्रेरणा से सातारा आने का विचार किया था वे सेठ चन्दनमल जी सा० मुथा अब नहीं थे। हम उनके पहुँचने के दो वर्ष पहले ही आपका स्वर्गवास हो गया था। आप जब २ भी इधर सन्तों की सेवा में आते तो सातारा चातुर्मास के लिए प्रार्थना करते रहते। वे चाहते थे कि मैं अपने गुरुदेव की सेवा सातारा में करूं। आपकी तथा आपके उत्तराधिकारी भतीजे सेठ मोतीलाल जी सा० की आग्रह भरी प्रार्थना को स्वीकार कर आचार्य श्री जवारलाल जी म० ने भी सातारा में चातुर्मास किया था।

घरों की संख्या थोड़ी होते हुए भी आपलोगों की प्रेरणा से सन्त सतियों के चातुर्मास होते ही रहते थे। आचार्य श्री हस्ती-मल जी म० साहब दशवैकालिक और नन्दी सूत्र के लेखन कार्य में संलगन होने के कारण व्याख्यान कम फरमाते थे, अत स्वामी जी म० ने इस चातुर्मास में विशेष प्रवचन फरमाए। यहां पर

घाटगी निवासी मुथा सम्पतचन्द जी के सुपुत्र जो आचार्य श्री के साथ कुछ समय से थे, और उनकी दीक्षा आश्विन शु० १३ को होने वाली थी। उस प्रसंग में जोधपुर तथा मारवाड़ कि आस पास के गाँवों के ३०० के करीब भाई बहन उपस्थित हुए। सातारा के आस पास के भी बहुत से लोग दीक्षामहोत्सव में उपस्थित हुए। जिनमें अहमदनगर और पूना आदि की संख्या अधिक थी। चातुर्मास मे आए हुए भाई बहनों के लिए सारी व्यवस्था सेठ मोती लाल जी की ओर से थी। इस तरह से यह विक्रम सम्वत् १९९६ का चातुर्मास सानन्द सातारा में समाप्त हुआ। गुलेदगढ़ (कर्नाटक) निवासी सेठ लालचन्द जी 'मुथा' तथा उनकी मातुश्री हर वक्त कर्नाटक के लिए प्रार्थना किया करते। सातारा में उन्होंने कर्नाटक विहार करने के लिए जोरदार आग्रह किया जिसे सन्तों ने स्वीकार भी कर लिया।

करनाटक की ओर . .

मिगसर वदी १ को विहार कर सेठ जी के बंगले पर पधारे। यहां से वडूद, पारली, देवर सालपा, लोणन, नीरा होते हुए बारामती पहुंचे और कुछ दिन वहां विराज कर सेटफल भिगवान पहुँचे। भिगवान से कातरज, पोमलवाड़ी, राजूरी, कोरटी होते हुए करमाला पहुँचे और यहां के स्थानक में ठहरे। यहां पर स्थानकवासियों के २५। ३० घर हैं। लोगों में धर्म प्रेम अच्छा है। कुछ दिन तक यहां विराजे। यहां से विहारकर पांढा,

कीसरा, सालसा, रोपले, वारलोणी होते हुए कुर्डवाड़ी, पहुँचे। यहां स्थानकवासियों के १५ घर थे। कुछ दिन यहां विराजे। धारसीभाई का विशेष आग्रह होने से वारसी पधारे और कुछ दिनों तक वारसी में विराजे। यहां से विहार कर पानगाँव, वैराग, सैलगॉव, वड़ाला, कारम्भा होते हुए शोलापुर पहुँचे। यहां लिंगायत के मकान में ठहरे। कुछ दिन यहां विराज कर टिकेकर वाड़ी, हुंडगी जंकशन, जवलगी होते हुए ताड़वल पहुँचे। इन गाँवों में विशेषकर दिगम्बरों के घर थे जो आहार पानी देने में सुलभ थे। यहां से विहार कर शाम को भीमानदी के तट पर रेलवे पुल के ऊपर ठहरे। यहां से लच्चान, हन्डी तड़वल, अतरगी होते हुए शाम को नागाठाम, और माघ सुदी १५ को बीजापुर पहुँचे।

वीजापुर एक वहुत वड़ा पुराना शहर है। यहां पर कई प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्थान है। यहां का गुम्बज देखने के लायक है। हिन्दू और मुसलमानों के वीच यहां कईबार लड़ाई हुई। मुस्लिम सस्कृति की छाप यहां स्पष्ट दिखाई देती है। यहां स्थानकवासियों के ८–१० घर और मन्दिर मार्गियों के ४० ५० घर हैं। दोनों समाज के लोगों में परस्पर प्रेम भाव अच्छा है। कुछ दिन यहां विराजकर जुमनाल, होनगनहुवी मूलवाड़, हलदगेहनूर' कोलार, वारगंडी, सुनग, इनगवाड़ी होते हुए फागन सुदी २ को वागलकोट पहुँचे। जहां कई बहनों ने अठाई आदि तपस्या की। यहां स्थानकवासियों के आठ घर हैं।

लोगों में धर्म प्रेम अच्छा था। होली चातुर्मास यहीं पर हुआ। यहां से चैत्र कृष्ण १ को सीरूर और २ को गुलेदगढ़ पहुंचे।

यों तो तखतमलजी कटारिया (मध्यभारत के एक श्रावक) इस यात्रा में अधिकतर हम लोगों के साथ थे किन्तु बीजापुर से लेकर गुलदेगढ़ तक सेठ लालचन्द जी मुथा प्रायः करके साथ रहे और बीजापुर एवं बाघलकोट के भाई भी एक गांव से दूसरे गांव जाने में साथ रहते थे। यहां पर महावीर जयन्ती बड़ी धूम धाम के साथ मनाई गई। करनाटक प्रान्त में रहनेवाले साधु मार्गीय भाईयों का एक संगठन कायम किया गया। उस अवसर पर बाहर के लोग भी काफी संख्या में थे। यादगिरि, रायचूर कोपल बाघलकोट, बीजापुर आदि के भाई काफी संख्या में भाग लिए थे। यहां से वैशाख कृष्णा १ को विहारकर असनताल में पधारे और वहां से ४ की शाम को बंगले में पधारे। वहां से विहार कर कामन्दगी रामताल, अमीनगढ़, हुनगुंद होते हुए इड़कल पधारे। यहां स्थानकवासियों के घर ६ थे किन्तु गांव के सभी लोगों ने मिलकर अच्छा स्वागत किया। कुछ दिन यहां विराजे। बाद में आचार्यश्री हस्तीमल जी मा० कुष्टगी की ओर पधारे तथा स्वामीजी म० कुछ दिन यहां विराजकर गजेन्द्रगढ़ पधारे यहां स्थानकवासियों के ४ घर थे। लोगों में धर्म प्रेम अच्छा था। यहां पर स्थानक नहीं होने से मठ में विराजे। कुष्टगी से विहार कर आचार्य श्री गजेन्द्रगढ़ पधार गए।

यहां से विहार कर गोणाघर, गुड्डुर, कमन्दगी, सीरूर और फिर ज्ये० सु० पूनम को वाघलकोट पधारे। वाघलकोट कुछ दिनों तक विराजकर चातुर्मास के लिए आषाढ़ शु० नवमी को सीरूर होते हुए गुलेदगढ पहुँच गए और माहेश्वरियों के न्याती भवन एवं लिंगायत के मकान में ठहरे। यहां स्थानकवासियों के कुल ६ घर हैं किन्तु सेठ लालचन्द जी का स्वभाव ऐसा था कि स्थानीय अन्य मारवाड़ी भाई भी अवसर का लाभ उठाते थे। आपके मातु श्री के आग्रह पर ही यहां यह चातुर्मास हुआ। आप बड़ीं सरल और धार्मिक लगन वाली थी। आपका वहां के लोगों के प्रति बड़ा प्रेम भाव था। अतः वे लोग भी आपके हर कार्य में सहायक होते थे।

गुलेदगढ़ में माहेश्वरियों की संख्या बहुत अधिक है। करीबन १०० घर उनके होंगे। वे लोग भी व्याख्यानादि में भाग लेते थे। बागलकोट के भी कुछ भाई आकर रह गए थे। पर्युषण में रायचूर सुरापुर, बाघलकोट' बीजापुर आदि कई गांवों के भाई बहनों ने आकर सेवा का लाभ लिया। आगन्तुक लोगों के लिए स्थान भोजन आदि की व्यवस्था सेठ जी की ओर से होती थी। यहां स्थानकवासियों के घरों की संख्या कम होते हुए भी १६६७ का चातुर्मासबड़े ठाठवाट के साथ सम्पन्न हुआ। मोतीलालजी गांधी तथा प्रतापमल जी गुंदेचा आदि भाईयों ने भी उत्साह के साथ धार्मिक कार्य में हाथबटाया।

रायचूर की ओर....

मिगसर वदी १ को विहार कर व्यायाम शाला में पधारे और दूसरे दिन यहां से शिवयोग मन्दिर गए। तुंग भद्रा नदी के किनारे शिवयोग मन्दिर शैवों की एक शिक्षणशाला है। यह स्थान अत्यन्त रमणीक एवं शिक्षणादि के लिए अनुकूल है। यहां के विद्यार्थियों ने कई प्रकार के व्यायाम के प्रयोग दिखलाए। यहां से विहार कर सीरूर, बाघलकोट व, अनगलवाड़ी, विलगी, कोलहार और मूलवाड़ा होते हुए पुनः बीजापुर पहुंचे। यहां पर रायचूर संघ के प्रमुख श्रावकों ने आकर अपना क्षेत्र फरसने की विनती की। बड़े विचार विमर्श के पश्चात् सन्तों के साथ परामर्श करके आखिर रायचूर संघ की विनती स्वीकार का गई। यद्यपि रायचूर के लोगों की विनती गुलेदगढ़ चातुर्मास से ही चालू थी और वहां से रायचूर नजदीक भी पड़ता था किन्तु रास्ते के गांवों में प्लेग होने के कारण उधर न जाकर बीजापुर पहुँचगए। किन्तु रायचूर वालों के विशेष आग्रह होने से बीजापुर से पुनः रायचूर की ओर विहार किया। यहां से दो सन्त छोटे लक्ष्मीचन्दजी और लालचन्दजी म० को मिरज की ओर विहार कराया और आचार्यश्री व स्थविर मुनिश्री सुजानमलजी म० श्री अमरचन्दजी म० व पं० मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० विहारकर हिनाल, मनगोली, यरनाल, वागेवाड़ी, हिपरंगी, कोहनूर, तालीकोट, सोलड़गी आदि क्षेत्रों को फरसते हुए हुणचमी पहुंचे। यहां पर सुरापुर के लोग आगये थे। शाम को यहां से उज्जल चिकनली होते हुए कुमारपेठ

सुरापुर पहुंचे। इन सब गांवों में प्लेग होने के कारण लोग प्रायः गांवों के बाहर थे। भाई सेवा में साथ रहते थे। लिंगायतों के यहां गर्म पानी और आहर का योग हो जाता था। सुरापुर के लोग भी गांव के बाहर ही थे। अतः महाराज श्री भी यहां तम्बू में ठहरे। लोगों में धार्मिक प्रेम होने से कुछ दिन यहां विराजे। यहां से विहार कर यादगिरी होते हुए रायचूर पहुंचे।

रायचूर एक अच्छा कस्बा है। यहां स्थानकवासियों के करीब ३० घर हैं। यहां के लोगों में भक्ति अच्छी है। सब लोगों में प्रेम और एकता का स्वरूप सराहनीय था। यहां २०-२२ दिन विराजे। व्याख्यान में पूरी उपस्थिति हो जाती थी। कल्याणमलजी मुथा और दलीचंदजी सेठ यहां के प्रमुख श्रावक थे। सबने मिल कर यहां एक व्यवस्था कायम करली कि व्याख्यान की समाप्ति तक कोई भी दुकान नहीं खोलेंगे। बड़े उत्साह से लोगों ने सेवा की और यह तय किया की बच्चों के लिए धार्मिक स्कूल चलाया जाय। यहां से विहार कर गंज में पधारे और वहां से चित्रसुगर कृष्णावगुण्डा होते हुए सेदापुर पहुँचे। सेदापुर से विहार कर रात्रि में एक रेल के पुल नीचे विराजे। उसदिन स्वामीजी म० के उपवास था। सुबह मदूर होते हुए शाम को यादगिरी पहुँचे। यहां साथिन के धोकों की दुकानें हैं। लोगों में भक्ति भाव अच्छा है।

यादगिरी से विहार कर अलीपुर थरगोली, लाकलपुरा, वाड़ी शाहबाद, मतुर होते हुए शाम को रेल की चौकी पर ठहरे और ९ फाल्गुन सुद २ को गुलबरगा पधारे। यहां स्थानकवासियों के

५ घर हैं। सेठ हीरालालजी मलगड़ यहां के एक श्रीमन्त सज्जन हैं। एक २ दिन ठहर कर विहार का इरादा था किन्तु सेठ हीरालालजी की धर्मपत्नी ने अठाई तप किया। अतः महाराज को यहां ६ दिन ठहरना पड़ा। तपोत्सव पर सेठ जी ने बड़ी धर्म प्रभावना की हजारों का खर्च किया और बीगड़ में कन्या पाठशाला खोलने के लिए पांच हजार देने का निश्चय किया। यहां से फा० सु० ११ को विहार कर हीरापुर पहुँचे। वहां से गागागापुर, कोवपुर, कुलाली, टुवनी स्टेशन होते हुए पूर्णिमा को मदवर्गी पहुंचे और एक दिगम्बर जैन मन्दिर में ठहरे। यहां से विहार कर अक्कलकोट पहुँचे। यहां स्थानकवासियों का १ घर था। मन्दिर मार्गियों के २३ घर और शेष दिगम्बरियों के घर थे। यहां से विहार कर रात्रि को एक बंबूल वृक्ष के नीचे ठहरे। यहां से वलसंच होते हुए चैत्र कृष्ण तीज को शोलापुर पहुँचे और दिगम्बरों की धर्मशाला में ठहरे। यहां मोहनलालजी और नागौर निवासी पारसमलजी सुराणा संघ के विशेष कार्यकर्ता हैं। लोगों में धर्म की लगन ठीक थी। यहां काठियावाडी भाइयों के भी कुछ घर हैं। जिनमें भी धर्म प्रेम अच्छा था। यहां से विहार कर वालागांव साव, लेसर, महोल, येवली होते हुए अनगर पहुँचे और एक जैन मन्दिर में ठहरे। यहां क्यारे जैनों के घर थे। नाड़ा, कुरडुवाडी, खोपले सालसे होते हुए करमाला पहुँचे। यहां से चैत्र शुक्ला ११ को विहार कर बारसी भाई की हवेली में विराजे और चैत्र शुक्ला १३ को तीनों सम्प्रदाय की सम्मिलित महावीर जयन्ती मनाई गई जिसमें बारसी भाई का प्रयास प्रशंसनीय था।

यहां से केड़गांव, केतुर होते हुए रात्रि में वाड़ी स्टेशन की चौकी पर ठहर कर वैशाख कृष्ण १ को भिगवान पहुंचे । यहां स्थाकवासियों के २० घर हैं । छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० भी मिरजगांव, सातारा होते हुए यहां पहुंच गए थे । एक दो दिन के बाद आचार्यश्री भी पधार गए और कुछ दिन यहां विराज कर रावणगांव होते हुए दोन्ड पहुंचे । दोन्ड से विहार कर वरवन्ड होते हुए केड़ गांव स्टेशन पहुंचे । यहां पर अहमदनगर का संघ और पूना का संघ चातुर्मास की विनती लेकर आया । इसमें अहमदनगर में दूसरी ओर के चतुर्मास होने से सन्तों के चातुर्मास की खास आवश्यकता थी, अतः अहमदनगर संघ की विनती मान्य की गई । यहां से विहार कर येवत उरली और लूणी होते हुए पूना पधारे एवं भवानी पेठ के स्थानक में ठहरे ।

पुनः अहमदनगर का चातुर्मास . . . .

पूना में ऋषि सम्प्रदाय की महासती श्री रम्भाजी, श्रीसूरज-कुंवरजी आदि ठाणापति थे, जो सन्तों की सेवा में आते जाते थे । यहां के भाइयों ने एक दिन दयाव्रत किया जिसमें संघ के प्रमुख २ लोग सम्मिलित हुए । कुछ दिन यहां विराज कर पुनः घोड़नदी आदि क्षेत्रों को फरसते हुए चातुर्मास के लिए अहमदनगर पहुँचे । इस प्रकार विक्रम सं० १६६८ का चातुर्मास अहमदनगर में हुआ चातुर्मास की समाप्ति पर मिगसर बदी १ को विहार कर पीपल गांव होते हुए वाम्बोरी पहुँचे और पूज्य श्री पाथर्डी पधारे । स्थविर मुनिश्री कुछ दिनों तक वाम्बोरी में विराज कर सोनई

पहुंचे। उधर आचार्य श्री पाथर्डी आदि क्षेत्रों को फरसते हुए सोनई पहुंच गए। दोनों मुनिराजों का यहां मिलाप हुआ। पुनः ब्राह्मणी, बाम्बोरी, डैहरा, नीमल, हिंगनगांव, मालूणी होते हुए धोलपुरी पहुंचे। कुछ दिन यहां विराज कर धोतरा, ढोकश्वरी, ढाकली, करजूला, आनाबोर होते हुए बोरी पहुँचे। यहां स्थानकवासियों के १० घर तथा दो स्थानक हैं। छोटा गांव होते हुए भी लोगों में धर्म की लगन अच्छी है। यहां कुछ दिन विराज कर पीपलवंडी, नारायणगांव व मंचर पहुचे। यहां स्थानकवासियों के ८ घर थे। विशेष संख्या मन्दिरमार्गियों की है। यहां कुछ दिन विराजकर पेठ,खेड़, चाकण, सिन्दुवरा, इन्दुरी होते हुए वड़गांव पहुंचे। यह गांव पूना से बम्बई जाने वाली सड़क पर है। कुछ दिन यहां विराजे। यहां से विहार कर कारला होते हुए लुणावला पहुचे और धर्मस्थानक में ठहरे। यहां स्थानकवासियों के करीब १५-२० घर थे। लोगों में धर्म प्रेम अच्छा है। यहां से विहार कर खंडेला पहुँचे। इस पहाड़ की चढ़ाई करीब ६ मील है और इसका उतार भी एकदम ढ़लाउ है। उतार में घाट के नीचे खपोली नामक एक गांव है जहां पर २८-३० घर मन्दिरमार्गी जैनियों के हैं। यहां से शाम को खानपुरा पहुंचे। माघसुद १४ को चोक और शाम को बारवई धर्मशाला तथा पूर्णिमा को पनवेल पहुँचे।

बम्बई की ओर....

पनवेल में स्थानकवासियों के १५-२० घर थे। यहां पर

बांठिया परिवार श्रीमन्त और धार्मिक लगनवाला है। श्री रतन-चन्द्रजी बांठिया यहां के संघ के प्रमुख श्रावक हैं। पूज्यश्री भी यहां आकर पुनः मिल गए। कुछ दिन यहां विराज कर तलोणरा, दहीसर होते हुए ठाणा पहुँचे और मन्दिरमार्गी धर्मशाला में ठहरे। यहां स्थानकवासियों के २-३ घर हैं। विशेष संख्या मन्दिर-मार्गी जैनों की है। यहां से विहारकर मलून होते हुए मंडप पहुंचे। यहां पर कच्छी भाइयों के ५-७ घर हैं। पनवेल से विहारकर पूज्यश्री भी यहां पहुँच गए। सब सन्त मिलकर फा० कृ० १ को घाटकोपर पहुँचे। यहां स्थानकवासी संघ विशाल है तथा धर्मस्थान भी काफी विशाल है। मन्दिरमार्गियों की संख्या भी विशेष है। यहां से माटुंगा पहुँचे और कच्छियोंकीवाड़ी में ठहरे। यहां भी धर्म प्रेम अच्छा था। यहां से चींचपोकली पधारे। यहां भी स्थानकवासियों की संख्या अच्छी है और स्थानक भवन भी बड़ा है। संघ व्यवस्था यहां की काफी अच्छी है। संघ का मकान तीन मंजिला है। आगे दुकानें हैं तथा ऊपर गृहस्थों के रहने की व्यवस्था है। यहां से विहार कर फा० कृ० १३ को कांदावाड़ी पहुँचे और स्थानक में ठहरे। यहां का धर्म स्थान भी काफी विशाल है, जिसके निर्माण में दो लाख करीब व्यय हुआ है। उसके साथ आमिल खाता चलता है जिसमें आमिल करने वाले भाई बहनों के लिए भोजन पानी की व्यवस्था होती है। लोगों में धर्म प्रेम अच्छा है किन्तु थन्डिल की अनुकू-लता नहीं होने से अधिक विराजना नहीं हुआ। समुद्र के किनारे प्रति दिन जाना पड़ता था। यहां थोड़े समय विराजकर चैत्र कृष्ण

अष्टमी को पुनः चिंचपोकली पधार गए तथा चै० कृ० १३ को माटुंगा और १४ को घाटकोपर पधारे । यहां से स्थविरमुनिश्री सुजानमलजी म० तथा मुनिश्री जोरावरमलजी को आगे के लिये विहार कराया और आचार्यश्री ओलियों तक वहां विराजने का संघका आग्रह होने से पूर्णिमा तक विराजे। यहां भी संघ की ओर से चैत्र और आश्विन में ओली करने वाले भाई बहनों के लिए भोजन की व्यवस्था रहती है। चैत्र व आश्विन में करीब १००० हजार आमिल हो जाते हैं। यहां से वैशाख कृष्ण १ को विहार कर हीराचन्द देसाई के बंगले पधारे और वहां से मलूण, ठाणा, कालेर, भिवड़ी, भिन्नार, पड़ीगा होते हुए शाहपुरा पहुँचे । यहां १०-१२ घर मन्दिरमार्गी जैनों के हैं। यहां धर्मशाला में ठहरे । शाम को आड़गांव स्टेशन मुसाफिरखाना में निवास किया और वहां से खरड़ी पहुँचे। शाम को अमरमाली की चौकी के सिगनल देने वाले भग्न गृह में ठहरे। वहां से कसारा होते हुये इगतपुरी पहुंचे। यहां पर गुरुदेव के दर्शन हुए।

इगतपुरी में कुछ दिन तक विराज कर घोटी पधारे और स्थानक में ठहरे। यहां पर स्थानकवासियों के काफी घर हैं। कुछ दिन तक घोटी विराजकर मुकना, वाड़ीवाड़ा होते हुए नासिक पहुंचे।

नासिक एक बड़ा शहर है और हिन्दू धर्म का एक पवित्र तीर्थ स्थान माना जाता है। स्थानकवासियों की भी यहां अच्छी संख्या है और स्थानक भी काफी बड़ा है। यहां से विहार कर

ज्येष्ठ कृष्णा ४ को आड़गांव, ओजर, पीपलगांव, पालखेड़, नान्दूरड़ी होते हुए नीफाड पहुँचे। यहां स्थानकवासियों ३०-४० घर हैं। कुछ दिन तक यहां विराज कर नेताला विंचूर होते हुए ज्येष्ठ शु० ६ को लासलगांव पहुंचे।

लासलगांव का चातुर्मास....

लासलगांव नदी के किनारे वसा हुआ एक सुन्दर गांव है। यहां का धर्मस्थान भी नदी के किनारे पर है। जिसके पिछले भाग में विद्यालय और अग्रभाग में स्थानक है। यहां पर सबसे पहले स्थविर मुनिश्री सुजानमल जी म० व पं० मुनिश्री लक्ष्मीचन्द जी म० पधारे। बाद में आचार्यश्री ठा० ३ से पधारे। यहां के लोगों का विचार चातुर्मास कराने का हुआ, अतएव विनती की, किन्तु श्रावकों में परस्पर विचार भेद था, इसलिए पूज्यश्री और बड़े महाराज ने फरमाया कि आप को सबसे पहले विचार भेद मिटाना चाहिए। इस पर वहां के संघ ने मिलकर बहुत शीघ्र ही अपने यहां के रुपये पैसे के झगड़े मिटा दिये। अतः वहां की विनती स्वीकार कर ली गई। यहां से विचार कर तलेगांव कातरणी होते हुए मनमाड़ पहुँचे और स्थानक में ठहरे। यहां पर स्थानकवासियों के ४०-५० घर हैं। ललवाणी परिवार यहां के संघ में प्रमुख हैं। यहां कुछ दिन विराज कर कुन्दल गांव, जलगांव, कवलाणा होते हुए मालेगांव पहुँचे। यहां पर मारवाड़ी व काठियावाड़ी भाइयों के कुल मिला कर ४०-५० घर हैं। मूर्तिपूजकों के काफी घर हैं। यहां उन्हीं की

धर्मशाला में ठहरे। कुछ दिन यहां विराजे। यहां से आषाढ़ कृष्णा तृतीया को विहार कर पाटना सोदाणा होते हुए उमराणा पहुँचे। यहां स्थानकवासियों के २५ घर हैं, जिनमें अधिकतर भोपालगढ़ के ओस्तवाल हैं। लोगों में धर्म प्रेम अच्छा है। आषाढ़ सुदी १ को यहां से विहार कर चांदवड़ पहुंचे। यहां नेमिनाथ ब्रह्मचर्याश्रम नामकी संस्था है, जिसमें स्थानक वासी तथा मन्दिरमार्गी समाज के विद्यार्थी को अपना २ धर्म पढ़ाया जाता है। आश्रम के साथ लगा हुआ एक जैन मन्दिर भी है। केशूलाल जी आवड़ संस्था के प्राण हैं। उनसे धार्मिक शिक्षा के लिए वार्तालाप किया गया। उनका विचार है कि स्था० वासी विद्यार्थियों के लिए भी सामायिक भवन बना कर स्वतन्त्र धर्म शिक्षा की व्यवस्था की जाय।

आश्रम में आचार्य श्री के प्रवचन हुए। कुछ दिन यहां विराजकर हीवरखेड़ा, टाकली होते हुए आषाढ़ सुद ६ को लासलगांव पहुंचे। संघ तथा वहां के नवयुवकों ने शानदार स्वागत किया। सब सन्त स्थानक में विराजे। यहां संघ के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं तथा युवकों में बड़ा जोश था। व्याख्यान में उपस्थिति अच्छी होती थी। घरों की संख्या ३०-३१ थी। यहां की मंडी में बाहर का माल ज्यादा आता था। इसलिए यहां सब व्यापारियों ने मिल कर यह निश्चय किया कि जब तक व्याख्यान न उठे तब तक व्यापार धन्धा चालू न किया जाय। इस निश्चय में जैन अजैन सभी शामिल थे। व्याख्यान में

अजैन लोगों की उपस्थिति भी ठीक होती थी। पर्युषण पर्व में बाहर के करीब १०००–१५०० भाई बहिनों की उपस्थिति थी। यहां के संघ ने बाहर से आने वाले भाई बहनों के लिए अच्छा प्रबन्ध किया था। भोजन मकान व पानी की व्यवस्था ठीक थी। भाई बहनों में तपस्या भी खूब हुई और तपस्या के प्रसंग पर लोगों ने द्रव्यदान भी खूब ही किये। संवत्सरी के दिन अधिक उपस्थिति के कारण दो जगह व्याख्यान फरमाया गया और उसी दिन लड़कियों के धार्मिक शिक्षण के लिए भी प्रमुख श्रावकों ने कन्या पाठशाला खोलने का निश्चय किया। भीकमचन्द जी सांड, खुशाल जी बरमेचा, सेठ फूलचन्दजी आदि यहां के प्रमुख श्रावक हैं। इस प्रकार १९९९ का लासलगांव चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ।

पुनः मालवा की ओर....

यहां से मगसर वदि १ को विहारकर गांव के बाहर विराजे और तलेगांव, होते हुए मनमाड़ पहुँचे। कुछ दिन यहां विराज कर मालेगांव होते हुए धुलिया पधारे और पृथ्वीराज जी दुधेड़ियां के धर्मस्थान में ठहरे। बड़े स्थानक में ऋषि सम्प्रदाय के स्थविर मुनिश्री माणक ऋषि जी तथा पं० मुनिश्री हरि ऋषिजी ठा० ३ से विराजमान थे। व्याख्यान सब सन्तों का बड़े स्थानक में होता था। कुछ दिन यहां विराज कर बाद में सिरपुर पधारे। यहां पर प० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी मा० को बुखार आने लग

गया था, अतः १५ दिनों तक रहना पड़ा। आचार्य श्री ने ठा० ३ से आगे विहार किया। सिरपुर में भोपालगढ़ विराजमान महासतीजीश्रीधनकुंवरजी की सुशिष्या श्री रूपकुंवरजी के स्वर्गवास का तार मिला। उनके बिमारी के समाचारों से मारवाड़ की ओर जाने की जो तीव्र गति थी, वह कुछ धीमी पड़ गई। आचार्यश्री विहार करके सैंधवा पहुंचे और स्थविर मुनि श्री सिरपुर से विहार करके सैंधवा पहुंचे। फिर वहां से आचार्य श्री ठीकरी, तिमराणी, धामणोद होते हुए नालछा पहुँचे। पाछे से स्थविर मुनिश्री भी विहार करके क्रमशः बीच के गांवों को फरसते हुए धामणोद पहुँच गए। मध्याह्न में धामणोद से विहार कर शाम को भगवान्या गांव में पहुंचे। साथ में धुलिया से भीकचमन्द जी चौधरी की तरफ से भेजा हुआ स्वर्णकार था। रात में पं० मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० को बहुत जोर से बुखार आया। गांव में सभी भीलों की बस्ती थी। न तो वहां कोई उपचार का साधन था और न रहने जैसी स्थिति। फिर भी साहस करके बड़े महाराज ने भगवान्या घाटा को किसी प्रकार पार किया जिसका चढ़ाव करीब ६ मील का था। मांडू पहुँच कर धर्मशाला में ठहरे और वहां से पूज्यश्री की सेवा में नालछा समाचार भेजे।

समाचार पहुँचते ही आचार्यश्री ने हकीकत मालूम की और मुनिश्री छोटे लक्ष्मीचन्द जी म० को स्थविर मुनिश्री की सेवा में उसी समय भेज दिया। दो तीन दिन वहां ठहर कर फिर नालछा पहुंचे। नालछा से सब संत धार पधारे। यहां

पर कई दिनों तक उपचार किया गया। कुछ स्वस्थ होने पर पूज्यश्री ने आगे विहार किया और पीछे से स्थविर मुनि ने भी। वहां से नागदा पहुंचने पर पं मुनि की तबियत फिर खराब हो गई। बुखार का प्रकोप बढ़ गया। नागदा से कानवन पहुँचे जहां आचार्यश्री विराजमान थे। यहां से मुनिश्री लक्ष्मीचन्द जी आकर भण्डोपकरण लेकर साथ चले। कानवन में अस्वस्थता के कारण सब सन्तों को दो महीने तक विराजना पड़ा। यहां के सेठ चांदमलजी आदि श्रावकों ने दो महीने तक कारोबार की ओर कम ध्यान देते हुए सन्तों की बड़ी सेवा की।

रतलाम निवासी सेठ जवाहरमल जी मुणोत रतलाम से वैद्य को लेकर आये। उनका उपचार भी कई दिन तक चलता रहा। यहां पर जयपुर के भाई भी चातुर्मास की विनती के लिये उपस्थित हुए।

तबियत ठीक होने पर यहां से वदनावर पहुँचे। यहां पर उज्जैन संघ के प्रमुख श्रावक छोटमलजी मुथा आदि चातुर्मास की विनती के लिये आये। महीना चैत्र का था और उज्जैन के श्रावकों का विशेष आग्रह था कि अब के चातुर्मास हमारे ही यहां होना चाहिए। अतः आचार्यश्री ने स्थविर मुनिश्री के साथ परामर्श कर उज्जैन संघ की विनती स्वीकार करली।

वदनावर से विहार कर रास्ते के गांवों को फरसते हुए रतलाम पहुँचे और हुक्मीचन्द जी म० की सम्प्रदाय की आवि-

कार्यों के धर्मध्यानार्थ बने हुए मकान में ठहरे। धर्मदास मित्र मण्डल में धर्मदास जी म० की सम्प्रदाय के मुनिश्री बच्छराज जी और श्री सूर्य मुनि जी म० विराजमान थे। हुक्मीचन्दजी म० की सम्प्रदाय के हितेच्छु मण्डल में जवाहरलाल जी म० की सम्प्रदाय के मुनि श्री शान्तिलाल जी म० बिमारी के कारण विराजमान थे। व्याख्यान सब सन्तों का धर्मदास मित्र मंडल में होता था। इस समय श्रावकों में परस्पर कुछ संघर्ष की भावनाएं थीं फिर भी आचार्यश्री के व्याख्यान में तीनों सम्प्रदाय के श्रावक आते जाते थे।

खाचरोद में दीक्षा महोत्सव....

यहां पर भी पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० अस्वस्थ ही रहे। डाक्टर का इलाज चालू किया गया और कुछ तबियत ठीक होने पर चातुर्मास के लिये विहारकर खाचरोद पधारे। खाचरोद के भाई बहनों ने भी धर्मध्यान का लाभ ठीक लिया। यहां के संघ के प्रमुख श्रावक सेठ हीरालालजी नांदेचा ने आचार्यश्री से प्रार्थना की कि आपके पास नालछा निवासी माणकचन्द जी रह कर ज्ञान ध्यान सीख रहे हैं तथा वैराग्य अवस्था में हैं। आज मैंने उनसे कई बातें पूछीं जिनसे मालूम हुआ कि उनका वैराग्य भाव सुदृढ़ है। अतएव आपकी आज्ञा फरमाने पर इनकी दीक्षा हमारे यहां हो, ऐसी हमारी भावना है। हीरालाल जी साहब का दीक्षा के लिये आग्रह विशेष होने पर पूज्यश्री ने दीक्षा की स्वीकृति फरमा दी।

इससे सेठ जी को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने दीक्षा का मुहूर्त निकलवाया तथा आज्ञा पत्र प्राप्त करने के लिये अपने मुनीम को वैरागी जी के पिता के पास भेजा। वहां से वे आज्ञा पत्र ले आये। आषाढ़ शु० २ को दीक्षा का मुहूर्त था। इसके समाचार भी सेठजी की ओर से रतलाम, उज्जैन तथा आस पास के गांवों में दिये गये थे, अतएव बहुसंख्यक लोग दीक्षोत्सव में सम्मिलित हुए। जयपुर जोधपुर आदि के भी बहुत से भाई बहन पहुँच गये थे। नालछा से वैरागी जी के पिताजी तथा अन्य लोग भी आये और आ० शु० २ के दिन प्रातःकाल ६ १० बजे दीक्षा का कार्य सानन्द समाप्त हुआ। सेठ हीरालाल जी सा० ने स्थविर मुनि श्री से ठा० २ से चातुर्मास के लिये काफी आग्रह किया किन्तु २ ठाणों में अनुकूलता न होने के कारण चातुर्मास नहीं हो सका। यद्यपि सेठजी चारों महीने तक दो में तीसरा बनकर साथ देने को तैयार थे।

सं० २००० का उज्जैन चातुर्मास ....

खाचरोद से विहारकर नागदा जं० होते हुए, चातुर्मास के लिये उज्जैन पहुँचे और नमकमंडी के स्थानक में ठहरे। संघ में आचार्यश्री के चातुर्मास से बड़ा आनन्द और उत्साह था। श्रावक लोग धर्मध्यान भी बहुत लगन से करते थे। पर्युषण में जोधपुर जयपुर आदि से काफी लोग सेवा में आये हुए थे। व्याख्यान की व्यवस्था स्थानक में जगह कम होने से शान्ति भवन में की गई थी पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्र जी म० पानीभरा के कारण यहां भी दो-

महीने तक अस्वस्थ रहे। इस तरह यह २००० का चातुर्मास समाप्त हुआ।

चातुर्मास के अन्त में इन्दौर निवासी कन्हैयालाल जी भण्डारी की प्रार्थना और आग्रह से इन्दौर फरसने की स्वीकृति दी गई। अतः सभी सन्त यहां से विहारकर इन्दौर पधारे। इन्दौर में कुछ दिन विराजने से धर्म प्रचार अच्छा हुआ। वहां से विहारकर हातोद, बड़नगर आदि गांवों को फरसते हुए पुनः खाचरोद पधारे खाचरोद से जावरा, प्रतापगढ़, छोटी सादड़ी, बड़ी सादड़ी होते हुए कानोड़ पहुँचे। यहां मुनि श्री ज्ञानचंद जी म० की सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री इन्द्रमल जी म० विराजमान थे। संयोग से उनके साथ रहने का व धार्मिक प्रवचन करने का मौका मिला।

आचार्य श्री हस्तीमल जी म० ठा० ३ से कानोड़ छोड़कर मगलवाड़ पधारे थे। कानोड़ के प्रमुख भाइयों ने वहां पहुँच कर आचार्य श्री से अपना क्षेत्र फरसने की प्रार्थना की। इस पर आचार्य श्री भी कानोड़ पधारे। सब सन्तों का प्रेम पूर्वक यह मिलन उल्लेखनीय रहा। वहां से विहार कर खेरोदा पहुँचे। वहां पर उदयपुर के प्रमुख श्रावक केशवलालजी ताकड़िया, मदनसिहजी कावड़िया और विजयसिंहजी आदि उदयपुर फरसने की प्रार्थना लेकर उपस्थित हुए। आचार्य श्री ने स्थविर मुनि श्री सुजानमलजी म० से परामर्श करके यथासंभव क्षेत्र फरसने के भाव व्यक्त किए। खेरोदा से उदयपुर के लिए सब सन्तों ने विहार किया। रास्ते में जयपुर संघ के प्रमुख श्रावक गुलाबचन्दजी बोथरा,

मोतीचंन्दजी हीरावत, भौरीलाल जी मूसल, स्वरूपचंदजी चोरड़िया आदि गांवों में ढूढ़ते हुए एक गांव में मिले। जयपुर संघ का आग्रह था कि इस वर्ष का चातुर्मास जयपुर में हो। विशेष आग्रह होने से आचार्य श्री ने जयपुर चातुर्मास की विनती स्वीकार करली वहां से सब सन्त चैत्र वदि में उदयपुर पहुंचे और न्यात के नोहरे में विराजे। उदयपुर संघ आचार्य श्री का चातुर्मास जयपुर होना निश्चित जान कर खिन्न हुआ।

संवत २००१ का उदयपुर चातुर्मास....

उदयपुर में हम लोगों के पहुंचने पर मुनि श्री इन्द्रमल जी म० मुनि श्री मोतीलाल जी तथा विद्याप्रेमी मुनि श्री लालचन्द जी म० पधार गए। सब संत एक ही स्थान में ठहरे। प्रवचन आदि भी एक साथ होते थे। उदयपुर संघ ने स्थविर मुनि श्री सुजानमल जी म० पं० मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० मुनिश्री इन्द्रमलजी म० के शिष्य मुनि श्री मोतीलाल जी म० मुनि श्री लालचन्द जी म० आदि का सम्मिलित चातुर्मास अपने यहां कराने का विशेष आग्रह किया। इस पर बहुत विचार विनिमय के बाद आचार्य श्री के पास संन्तों की सहूलियत न होते हुए भी उदयपुर संघ की विनती को मान देकर स्थविर मुनि श्री का चातुर्मास उदयपुर के लिए मान्य कर लिया गया। यहां से विहार कर कपासन पधारे। वहां अक्षय तृतीया एक ही स्थान पर करके आचार्य श्री ने जयपुर की ओर विहार किया व स्थविर मुनि श्री ठा० ३ से मेवाड़ में ही विचरण करते रहे।

वहां से रेल मार्ग होते हुए नाथद्वारा पधारे और कुछ दिनों तक वहां विराजे। नाथद्वारा के भाईयों का धर्म प्रेम प्रशंसनीय है। यहां से चातुर्मास के लिए उदयपुर पधारे और वहां के विशाल पंचायती नोहरे में विराजे। स्वामी जी म० के साथ में मुनि श्री मोतीलाल जी म० और श्रीलालचन्द म० भी थे। सब भिन्न २ सम्प्रदाय के सन्त होते हुए भी ऐसे प्रेम के साथ रहे कि किसी दूसरे को अलग २ सम्प्रदाय वाले नहीं जंचते थे। प्रातः काल में पहले मुनि श्री मोतीलाल जी म० शास्त्र वांचते थे। बाद में मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० और अन्त में स्वामी जी म० व्याख्यान फरमाते थे। मध्याह्न में मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० भगवती सूत्र का वांचन करते। श्रावकों में रतनलाल जी मेहता, अजीतसिंह जी चपलोत और गुलाब बाई नियत श्रोता थे। ये तीनों थोकड़े व शास्त्रों के अच्छे जानकार तथा शास्त्र श्रवण में रस लेने वाले हैं। राजमलजी बाफणा जो शास्त्रों के विशेष जानकार थे, वे भी कभी २ शास्त्र श्रवण का लाभ लेते थे।

उदयपुर संघ का स्वागत, विदाई तथा दैनिक व्याख्यान परिषद् ये तीनों बातें अपनी विशेषता रखती हैं। नगर सेठ नन्दलाल जी बाफना, केशवलालजी ताकड़िया, कालूलाल जी छाजेड गेरीलाल जी खीवेसरा, कर्णसिंहजी और झूमरमल जी आदि यहां के प्रमुख श्रावक हैं। चातुर्मास में धर्म ध्यान अच्छा हुआ। इस प्रकार वि० सं० २००१ का यह उदयपुर चातुर्मास सानन्द समाप्त हुआ।

अजमेर की ओर . . . .

उदयपुर से विहार कर कोठारी जी की वाडी में पधारे। संघ ने सन्तों को बड़े ठाठबाट के साथ विदाई दी। भाई बहनों ने कई प्रकार के त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण किये। दूसरे दिन आयड पधारे। मुनि श्री मोतीलाल जी म० की अस्वस्थता के कारण यहां १५ दिनों तक विराजना पड़ा। यहां स्थानकवासियों के लगभग २० घर हैं। उदयपुर के नजदीक होने के कारण वहां के भाई बहन प्रतिदिन आते ही रहते हैं। मुनि श्री मोतीलाल जी म० के स्वस्थ होने हर यहां से विहार कर कपासन, हमीरगढ़, भीलवाड़ा आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए पोष वदी ६ को गुलाबपुरा पहुँचे और दूसरे दिन पार्श्व जयन्ती का व्याख्यान देकर विजयनगर पधारे और वहां से विहार कर बांदनवाड़ा पहुँचे। उसी दिन नानक-राम जी म० की सम्प्रदाय के स्थविरमुनि श्री पन्नालाल जी म० पहुँच गए थे। दोनों सन्तों का प्रेमपूर्वक मिलन हुआ। वहां से विहार कर अजमेर पधारे। उधर आचार्यश्री हस्तीमल जी म० भी जयपुर का चातुर्मास समाप्त करके स्वामी जी म० से पहले ही अजमेर पधार गए थे। सब सन्त कचहरी के मकान में विराजे। यहां पर सम्प्रदाय की परम तपस्विनी श्री राधाजी म० तथा महासती श्री छोगाजी म० कई वर्षों से स्थिरवास के रूप में विराजमान थीं। इन्हें कई वर्षों से मुनि श्री के दर्शन तथा सेवा की आकांक्षा थी। अतः कुछ समय तक सभी सन्त यहां विराजे। यहां से विहारकर तबीजी आदि क्षेत्रों को फरसते हुये

ब्यावर पधारे। वहां पर हवेली निवासी सेठ चान्दमल जी रतनलालजी नाहर के नोहरे में विराजे।

ब्यावर स्थानकवासी सम्प्रदाय का एक तीर्थ स्थान सा माना जाता है। यहां पर हर समय संत व सतियां विराजमान रहती हैं। पहले यहां एक जैन गुरुकुल था जो अपने ढंग का निराला था। यहां स्थानकवासी परम्परा के श्रावकों की संख्या भी पर्याप्त है। उस समय यहां आचार्य श्री खूबचन्द जी म० कुन्दन भवन में वृद्धावस्था के कारण स्थिरवास के रूप में विराजमान थे। आप के साथ पहले भी मन्दसौर में रहने का अवसर आया था। आपसे मिलने के लिए आचार्यश्री तथा स्वामीजी म० कुन्दन भवन में पधारे। उस समय वहां पर कोटा सम्प्रदाय के स्थविर मुनि श्री रामकुमारजी म० तथा जयमलजी म० की सम्प्रदाय के स्थविर मुनिश्री हजारीमलजी म० मुनिश्री ब्रजलालजी म० 'मधुकर' मुनिश्री मिश्रीलाल जी म० भी पधारे। जवाहरलाल जी म० के सम्प्रदाय के वयोवृद्ध मुनिश्री चौथमलजी म० तथा श्रीशोभालालजी म० आदि कई सन्त स्थिरवास के रूप में पहले से ही विराजमान थे। बाद में पं० मुनिश्री सिरेमलजी म० भी पधारे। सब सन्तों के साथ प्रेमपूर्वक मिलन हुआ। एक दिन पं० मुनि श्री सिरेमल जी म० से स्वामीजी ने एकान्त में कुछ बातें की और उनके हार्दिकभावों को समझ कर उन्हें अपनी बातें समझायी। पं० सिरेमलजी म० बहुत प्रसन्न हुए और बोले कि स्वामीजी! मैं आपकी भावना का आदर करता हूँ।

मारवाड की ओर....

इस प्रकार कुछ दिनों तक ब्यावर में विराजकर मारवाड़ के क्षेत्रों को फरसने के लिए सेंदड़ा, बर, बरांटिया, जैतारण, बिलाड़ा आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए पीपाड़ पधारे। मुनिश्री अमरचन्दजी म० और मुनिश्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० बिलाड़ा से रणसीगांव खेजड़ला होते हुए पीपाड़ पहुँचे और सब सन्त लाल उपाश्रय में विराजे। यहां पर जोधपुर संघ की ओर से बहुत से भाई और बहनों का एक बड़ा समूह जोधपुर क्षेत्र को फरसने की विनती करने के लिये उपस्थित हुआ। जिनकी संख्या कमसे कम १५०-२०० से कम नहीं थी। आचार्य श्री ने बड़े महाराज का अभिप्राय समझकर संघ की विनती मान्य करली। पीपाड़ से विहार कर सब संत रीयां पधारे। यहां पर कई बहनों ने अठाईतप करलिया था। अतः यहां आचार्य श्री ठा० ४ से विराजे और स्वामी जी म० ठा० २ से विशलपुर पालासनी, डाग्यांवास होते हुए बनाड़ पधार रहे थे; साथ में मुनिश्री लक्ष्मीचद्रजी म० थे। बनाड़ डांग्यावास से ६ मील दूर है। महीना चैत्र का था। रास्ते में आप को प्यास लग गई। आप धीरे २ चलते थे और मुनि श्री लक्ष्मी-चदजी म० आगे बढ़ गए। प्यास बढ़ जाने से आप इधर उधर जल या छाछ को खोजते हुए एक खेत में पधारे। खेत में एक विश्नोई भाई काम करता था। स्वामीजी ने उससे कहा भाई? तुम्हारे पास कुछ छाछ है? उसने उत्तर दिया "जी हां महाराज" और उसने बड़े भाव से मुनिश्री को छाछ वहरायी। आप वहां से

छाछ पीकर गांव में पधारे। इधर मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० को बहुत खोजने पर भी गांव में छाछ न मिली। केवल थोड़ासा पानी मिला। उस दिन जिस मन्दिर में ठहरे उसके पजारीन ने कहाकि महाराज यहां से चले जाइए मेरी आज्ञा ठहरने की नहीं है। उसे बहुत कुछ समझाने पर भी वह नहीं माना। अन्त में वहां से स्टेशन चले आये। वहां पर एक माल गाड़ी आई हुई थी जो पहुँचते ही निकल गई। स्टेशन मास्टर को जब जल के लिए कहा तो उसने उत्तर दिया कि हम शाम को आने वाली गाड़ी के इंजन का गर्म पानी ले लेंगे किन्तु गाड़ी आने पर वे लोग कार्य में व्यस्त रहने के कारण जल लेना भूल गए। अतः दोनों मुनिराजों को रात्रि में बिना जल के ही रहना पड़ा। प्रातः काल में आने वाली गाड़ी से स्टेशन मास्टर ने जल ले लिया था। वह जल सूर्योदय होने पर विहार के समय लिया और रास्ते में उसका प्रयोग किया।

जोधपुर में प्रवेश . . . .

वहां से आप महामन्दिर पहुँचे। वहां जोधपुर के भाई बहनों का आना जाना शुरू हो गया। कुछ दिन तक मुनिश्री महामन्दिर में विराजे। इधर जब आचार्यश्री रीयां से विहार कर जोधपुर पधार रहे थे—आप भी महामन्दिर से विहार कर सौजतियागेट के पास उनसे मिल गए। वहां से सब संत मूलसिंह की हवेली में पधारे और स्वागत में आये भांई बहनों को मगल पाठ सुनाया।

व्याख्यान प्रतिदिन आहोर ठाकुर की हवेली के विशाल प्रांगण में होने लगा। महाराष्ट्र का विहार करके बहुत दिनों के पश्चात्

आने के कारण श्रावक श्राविकाओं में भक्ति का उल्लास बहुत था। जोधपुर के तीन सम्प्रदाय के संयुक्त संघ का चातुर्मास के लिए आग्रह विशेष होने से मुनिश्री की सम्मति लेकर आचार्य श्री ने चातुर्मास करने की स्वीकृति देदी। यहां से विहार कर महामन्दिर होते हुए भोपालगढ़ पधारे। यहां पर महासती श्री धनकुंवरजी बहुत वर्षो से ठाणापति के रूप में विराजमान थी। उनको भी चिरकाल से संत दर्शन एवं सेवा की अभिलाषा थी। गर्मी का मौसम था अतः यहां पर शेष काल तक विराजे। ज्येष्ठ सुदी १४ को स्व० आचार्य श्री रतनचन्द्रजी म० की स्वर्गवास तिथि आ जाने के कारण भोपालगढ़ के संघ ने यह निश्चत किया था कि आचार्य श्री का शताब्दी महोत्सव विद्यालय के प्रांगण में मनाया जाय, अतः महोत्सव तक सब संत यहां पर विराजे और यहां से विहार कर चातुर्मास के लिए जोधपुर पधारे। इस वर्ष जोधपुर में एक ओर जयमलजी म० के सम्प्रदाय के स्थविर मुनिश्री चौथमलजी म० का चातुर्मास था और इधर स्वामीजी सहित आचार्यश्री का। मगर संतों की विवेकशीलता के कारण संघ में कोई विरोधी वातावरण न था और स्पर्धा से श्रावक श्राविकाओं में धर्म ध्यान की वृद्धि अच्छी रही। संत मूलसिंहजी की हवेली में रहते थे और प्रवचन आहोर ठा० के विशाल प्रांगण में होता था। प्रातःकाल प्रथम मुनि श्रीलक्ष्मीचन्दजी म० पश्चात् आचार्यश्री प्रवचन फरमाते और मध्याह्न में स्वामीजी ठहरने के स्थान में ही चौपाई फरमाते थे। आपका प्रवचन बड़ा जोशीला और असरकारक होता था। श्रोतागण

जिसे सुनकर झूमझूम उठते थे। आप तपस्या करने पर अधिक जोर देते। आपके विचार में तपस्या की भट्टी में ही कर्म मल जलाकर खाक बनाया जा सकता और जिससे जीव सर्वथा निर्मल एवं धवल बन सकता है। जैसे सोना आग में तपकर ही दमकने योग्य बनता वैसे तपाग्नि में तपकर ही जीव भी चमक उठता अतः आप कहा भी करते थे कि "तप वड़ो रे ससार में, जीव उज्ज्वल थायरे"।

प्रायः लोग अपने शरीर की सफाई, सजावट आदि में जितना अधिक ध्यान देते हैं उतना आत्मकल्याण के लिए नहीं। भीतर चाहे गंदगी भरी हो किन्तु बाहरी टीपटाप अच्छी रहनी चाहिए। स्वामीजी लोक की इस उलटी सूझ से असहमत थे। इस प्रसंग में आप यह दोहा प्रवचन में फरमाते कि—

या देही देवालनी, खायो निस्सर जाय।
या को ओही सार है, तप कर माल कढ़ाय।

अर्थात् यह देह एक दीवालिए की तरह है जो खाकर निकाल देती और फिर भूखी की भूखी ही बनी रहती है। चाहे इसे जितने भी रसों और पदार्थों से सींचो मगर यह अतृप्त ही रहेगी। सुबह खाओ शाम को फिर भूख, मीठा खाओ खट्टे की चाह। इस तरह यह सदा खाली की खाली ही रहेकी और एक दिन ऐसा भी आयेगा जब कि यह हजार मिन्नत करने पर पलभर के लिए भी नहीं रुकेगी। ऐसे क्षणभंगुर शरीर के लिए हाय हाय करना कहां की बुद्धिमानी है। अन्य जीवों के शरीर से तो मरने पर भी अनेक काम होते हैं किन्तु इस मानव शरीर का तो मरण के

बाद कोई भी उपयोग नहीं है सिवा इसके कि इसे जल्दी जला दिया जाय और वातावरण को विपाक्त होने से बचाया जाय। अतः इसका सार यही है कि तपस्या के द्वारा इससे मुक्ति रूप मोती हार ग्रहण करलें।

इस तरह आपके प्रवचन से प्रभावित होकर जोधपुर के कतिपय भाई बहनों ने तपस्या की झड़ी लगायी। किशोरमलजी लोढ़ा की धर्मपत्नी ने २१ करके फिर मासखमण किया। मोहनराजजी संकलेचा की धर्मपत्नी ने भी मासखमण किया। इसके अलावा सोहनराजजी भंसाली दहीखड़ा ने भी मासखमण किया। मिलापचन्दजी फोफलिया की धर्मपत्नी ने भी ४५ किए। एवं १५-११ और आठ आदि मिलकर इस वर्ष जोधपुर में गहरी तपस्याएं हुई जो कि आपकी ही तप प्रेरणा का परिणाम था।

लोढ़ा किशोरमलजी को आपके ही द्वारा धर्मप्रेरणा प्राप्त हुई। आज आपके सारे कुटुम्ब में धार्मिक लगन है, और आपके सुपुत्र कल्याणमलजी जो आंख के सफल डाक्टर हैं, सन्त सतियों की सेवा लगन से करते हैं। इस प्रकार सं० २००२ का चातुर्मास जोधपुर नगर में सानन्द समाप्त हुआ।

चातुर्मास में महासतीजी श्री तीजांजी, श्री अनोपकंवरजी, गोगाजी, आदि सतियां ठाणापति रूप से कई वर्षों से विराजमान थी। साथ श्री चदनकंवरजी श्री लाडकंवरजी, श्रीसरूपकंवरजी आदि कुलठाणा ७ से केवल चन्दजी सींधी के मकान में ठहरे। शायर कुवंर जी और मैनकुवंरजी को वैराग्य का रंग यहीं से आरम्भ होता है।

पूज्य श्री के उपदेश से स्त्री समाज में धार्मिक शिक्षा के लिए वर्द्ध-मान जैन कन्या पाठशाला स्थापित की गई, जिससे बालिकाओं तथा प्रौढ़ स्त्रियां आजभी धार्मिक शिक्षण ले रही हैं । बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों के लिए संघ की ओर से न्यात के नोहरे में रहने और भोजन की व्यवस्था की गई थी जो चम्पालालजी सींधी की देख रेख में चलती थी। अन्य भाइयों का भी अच्छा सहयोग था।

चातुर्मास के बाद विहार....

मिगसर वदी १ को बड़े समूह के साथ विहार कर कांकरिया भवन सरदारपुरा पधारे । विदाई में भाई बहनों ने त्याग प्रत्याख्यान किये।

वहां कुछ दिन विराजकर गांधी मैदान के पास रहने वाले भाई बहनों के विशेषाग्रह से हरखमलजी लोढ़ा के बगले में विराजे महताबचन्दजी महता आदि ने वहां के प्रांगण में व्याख्यान की व्यवस्था की थी। वहां से विहार कर एक दो दिन के लिये सोजतिया गेट के पास रीयां ठाकुर की हवेली में विराजे। वहां से विहार कर हुक्मराजजी मेहता व जसवंतराजजी मेहता आदि भाइयों के आग्रह होने से उनके बंगले पर पधारे। इन सब स्थानों में शहर के भाई बहनों का विशेष आवागमन रहता था। जिससे व्याख्यान में भी अच्छी उपस्थिति होजाती थी। यहां से आचार्यश्री नागौरियों का बेरा (मण्डोर) तिवरी मथानियां की तरफ पधार गये और गुरुदेव स्वामीजी म० दहीखड़ा आदि क्षेत्रों को फरसते हुए सीधे भोपालगढ़ पधार गये। वहां पर जैन रत्न विद्यालय का वार्षिक अधिवेशन का कार्यक्रम रक्खा

गया था । उस प्रसंग पर आचार्य श्री मथानिया बाथड़ी आदि चेत्रों को फरसते हुए भे.पालगढ़ पधारे । विद्यालय के उत्सव में इन्दौर के सेठ मन्नालालजी ठाकुरीया व जामनगर के देशभक्त राजमलजी ललवाणी एवं जोधपुर तथा आस पास के कई चेत्रों के भाई आये थे । कुछ दिनों तक सब सन्त यहीं विराजे । यहां से विहार कर रातकुड़िया, खांगटा, कौशाणा, रणसीगांव आदि चेत्रों को फरसते हुए प पाड़ पधारे और कई दिनों तक यहां विराजे ।

पीपाड़ से विहार कर ठा० ३ से आचार्य श्री रीयां पधारे और ठा० ३ से गुरुदेव पीपाड़ ही विराजते रहे । एक दिन पीपाड़ में मुनि श्री अमरचन्द जी म० गोचरी के लिये गये हुए थे । वापस आते समय एक बकरे ने जंघा में सींग घुसेड़ दिया । आपने उपाश्रय आकर उसमें तम्बाकू भरदी । दूसरे तीसरे दिन उसमें दुर्गन्ध आने लगी और विशेष पीड़ा होने लगी । आखिर डाक्टर का उपचार कराना पड़ा जिसमें डेढ़ महीना लग गया । उधर आचार्य श्री रीयां से विहार कर पालासणी पधारे और पिछले सन्तो की प्रतीक्षा करते हुए होली चातुर्मास वहीं किया । वहां से भी विहार कर आचार्य श्री पाली के आसपास पहुँच गये । मुनि श्री अमरचन्द जी म० के ठीक होने पर स्वामी जी म० के घुटने में वायु आजाने से कुछ दिन और रुकना पड़ा । उपचार से कुछ ठीक होने पर पीपाड़ से स्वामी जी रीयां पधारे और यहां तीन दिनों तक आंवला का सेवन किया । पथ्य पूर्ण होजाने पर तीन

दिनों के बाद पाली के लिये विहार कर दिया। किन्तु मार्ग में दो ढाई कोस चलने के बाद आपको सांस फूलने लगती और चलने में कष्ट होता था।

इस प्रकार बड़े कष्ट और लम्बे समय के बाद पाली पहुँचे। आचार्य श्री स्वामीजी के पहले ही पाली पहुँच गये थे। सब सन्त शान्ति जैन पाठशाला के भवन में ठहरे।

जोधपुर और पाली के श्रावकों की इच्छा थी कि आचार्य श्री गणेशीलाल जी म० तथा आचार्य श्री हस्तीमलजी म० दोनों आचार्यों का सम्मिलन पाली में हो। अतः पाली निवासी सेठ हस्तीमलजी सुराणा, जोधपुर निवासी विजयमलजी कुंभट तथा दौलत रूपचन्द जी भंडारी आदि ने पू० गणेशीलाल जी म० से बगड़ी में जाकर प्रार्थना की कि आप पाली पधारें। उन्होंने प्रार्थना स्वीकार करली और पाली पधारे। सभी सन्तों का प्रेमपूर्वक सम्मिलन हुआ तथा सभी एक ही स्थान में विराजे। सिरेमल जी कांठेड़ के कपड़ा मार्केट में दोनों आचार्यों का व्याख्यान होता था। व्याख्यान में अच्छी उपस्थिति होती थी। जोधपुर तथा आस पास के काफी लोग आये हुए थे।

भोपालगढ़ चातुर्मास ....

आचार्य सम्मिलन के इस सुखद प्रसंग पर भोपालगढ़ के श्रावक जोगीदासजी बाफणा, सूरजराजजी बोथरा आदि चातुर्मास की विनती के लिये आये और जोरदार आग्रह किया। इस पर आचार्य श्री ने स्वामीजी से परामर्श कर विनती स्वीकार करली।

शेषकाल पूर्ण होने पर यहां से विहार कर सोजत पधारे और न्यात के नोहरे में ठहरे। बाद में आचार्य श्री गणेशीलाल जी म० भी यहां पधार गये। इस तरह सब संतों का सोजत में भी मिलना होगया। यहां से विलाड़ा होते हुए पुनः पीपाड़ पधारे। पीपाड़ से आचार्य श्री दो सन्तों के साथ एक दिन पहले ही भोपालगढ़ के लिये विहार कर दिया था। दूसरे दिन स्वामी जी ने भी विहार किया। वर्षा अधिक होने के कारण सीधे रास्ते में पानी भर गया था अतः शाम को विहार कर जवासिया पधारे। जवासिया तक का दो मील का मार्ग भी बड़े कष्ट के साथ तय किया। वहां से विहार कर सालवा (पीपार रोड) स्टेशन पधारे। सालवा से प्रातः काल स्थविर मुनि श्री सुजानमल जी म० और मुनि श्री अमरचन्द जी म० ने अरटिया के लिए प्रस्थान किया पीछे से जल लेकर मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० भी रवाना हुए। स्थविर मुनि श्री ठा० २ से बड़े अरटिया चले गये और मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी मार्ग भूल जाने के कारण छोटे अरटिया चले गये। दूसरे दिन स्वामी जी म० वहां से विहार कर कूडी पहुँचे जहां आचार्य श्री विराजमान थे। कूडी से एक दिन पहले स्थविर मुनि श्री विहार करगये और दूसरे दिन सब सन्त विहार कर चातुर्मास के लिये भोपालगढ़ पहुँचे। संघ ने तथा जैन रत्न विद्यालय के छात्र तथा अध्यापकों ने बड़े स्वागतपूर्वक नगर प्रवेश कराया। खेजड़ा वाले उपाश्रय में सब सन्त विराजे। प्रातःकाल में पहले मुनि श्री ५ ।चन्द जी म० व्याख्यान देते और उनके पश्चात् आचार्य श्री

फरमाते । मध्याह्न में स्थविर मुनि श्री ब्रह्मदत्त चरित्र फरमाते । भाई बहनों की उपस्थिति दोनों समय काफी होती थी। लोगों ने धर्मध्यान अच्छा किया तथा दर्शनार्थी भी निरन्तर काफी संख्या में आते रहे जिनमें जोधपुर वालों की संख्या अधिक होती थी। पर्युषण में बाहर के लोगों की उपस्थिति अच्छी रही। व्याख्यान विद्यालय भवन में होता था। आचार्य श्री को ज्वर आजाने के कारण सुबह का व्याख्यान स्थविर मुनि श्री सुजानमल जी म० फरमाते थे। तपस्या दया की पचरंगी आदि धर्मध्यान काफी मात्रा में हुआ।

यहां मुनीन्द्र कुमार की दीक्षा में जोधपुर, जयपुर, नागौर, मेड़ता, पीपाड़ आदि अनेक स्थानों के श्रावक पहुँचे थे। इस दीक्षा महोत्सव में डेइनू के (भोपालगढ़) निवासी कालूराम जी बोथरा ने अतिथि सत्कार एवं दीक्षा के शुभ कार्य में अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग किया। यहां महासतीश्री धनकुंवरजी (बड़ी) ठाणा पति रूप से विराजमान थी, अतः उन्हें भी सेवा का अच्छा लाभ मिल गया। इस प्रकार वि० सं० २००३ का भोपालगढ़ चातुर्मास सानन्द समाप्त हुआ।

आचार्यश्री स्थली की ओर व स्वामीजी नागोर की ओर....

चातुर्मास समाप्त होने पर विहार कर जैन रत्न विद्यालय में पधारे। यहां से आचार्यश्री का विचार थली के गांवों को फरसने का होने से कूड़ी और हिरादेशर होते हुए कुड़छी धनेरी की ओर

पधार गए। स्थविर मुनि श्री ठा० ३ से नाड़सर वारणी, रजलाणी होते हुए हरसोलाव पधारे। भाइयों में धर्म की लगन अच्छी थी। लोगों के आग्रह से स्थविर मुनिश्री यहां शेष काल तक विराजे। व्याख्यान दोनों समय होता था। दया उपवासादि का रंग भी अच्छा रहा। यहां सेवक को लेकर आपस में कुछ विवाद था जो मुनिश्री के प्रभावोंत्पादक प्रवचन से मिटकर संम्प कायम हो गया। शेष काल पूरा करके वहां से नौखा, रूण, खजवाणा होते हुए मुंडवा पधारे। उधर थली को फरसकर आचार्यश्री हस्तीमलजी म० नागौर पहुँच गये थे। नागौर के कुछ भाई स्वामीजी की सेवा में मुंडवा पहुँचे और आप वहां से विहार कर नागौर पधारे वहां सब सन्तों का मिलन हुआ। सभी सन्त मुन्नीलालजी के नोहरे में विराजे। व्याख्यान ब्राह्मणों के न्यात के नोंहरे में होता था। मध्याह्न में स्थविर मुनिश्री ठहरने के स्थान में ही व्याख्यान फरमाते थे। इस अवसर पर बीकानेर संघ के कुछ प्रमुख श्रावक मुनिश्री की सेवा में वहां पधारने की विनती लेकर आए। भैंरोमलजी सुराणा आदि का काफी आग्रह था कि बीकानेर अवश्य फरसना चाहिये।

इधर वारणी निवासी रिड़मलचंदजी भण्डारी की दो लड़कियों की इच्छा कुछ दिनों से दीक्षा लेने की थी। उनके माता पिता तथा दादा दीक्षा वारणी में ही कराना चाहते थे अतः उनके दादा और किशोरमलजी मेहता माघ शु० ५ का मूहरत निश्चित करके आचार्य श्री और स्वामीजी की सेवा में नागौर आए और विशेष

आग्रह किया कि आपको इस दीक्षा के अवसर पर वारणी अवश्य पधारना होगा। इस पर उनकी विनती को मानकर थली के विहार को स्थगित करके गोगोलाव फरसकर पुनः नागौर होते हुए वारणी की ओर विहार कर दिए। मुंडवा और खजवाना होते हुए सब सन्त रूण पधारे। रूण से आचार्यश्री गारासनी असावरी होते हुए दीक्षा के दो दिन पूर्व वारणी पहुँचे तथा स्थविर मुनि नोखा, हरसोलाव और रजलाणी होते हुए दीक्षा के एक दिन पूर्व वारणी पधारे।

वारणी में दीक्षा महोत्सव ....

दीक्षा के प्रसंग में विभिन्न गांवों से एवं बाहर के लोग भी आए हुए थे। गांव यद्यपि छोटा था फिर भी लोगों का धर्म प्रेम सराहनोय था। यहां किसानों के तथा श्वेताम्बर तेरापथी भाइयों के भी घर हैं किन्तु सब का पारस्परिक प्रेम भाव अच्छा है। दूसरे दिन माघ शु० १३ को बड़े ठाठबाट के साथ दोनों बहनों की आचार्यश्री के द्वारा दीक्षा हो गई और दोनों को महासती जी श्रीबदनकुंवर के नेश्राय में की गई। दीक्षार्थिनी में एक का नाम शायरकुंवर और दूसरी का नाम सैनकुंवर जी जो बाल ब्रह्मचारिणी हैं। उनके माता पिता, दादा तथा कुटुम्बियों ने सहर्ष दीक्षा की आज्ञा दी और दीक्षा का खर्च भी स्वयं ने ही किया। दीक्षा के प्रसंग पर गांव के लोगों ने भी कई प्रकार के त्याग प्रत्याख्यान किए। कई किसानों ने बकरे भेड़ें आदि कसाईयों को देने का त्याग किया।

दीक्षा प्रसंगपर छ संत एवं वारह सतियांजी उपस्थित थे। महासती जी श्रीहरककुवंरजी भोपालगढ़ से पधारी थी। भोपालगढ़ विद्यालय के अध्यापक तथा छात्र भी आये थे। उन्होंने अपने धार्मिक संगीत आदि के द्वारा उपस्थित लोगों को आकर्षित किया। दर्शकों को भी वैरागिन वाई शायर कुवर की ओर से नारयलों की प्रभावना की गई थी। इस प्रकार यह दीक्षा महोत्सव सानन्द समाप्त हुआ। वाहर से आने वाले दर्शनार्थियों के लिए भोजन व्यवस्था भंडारी जी की तरफ से थी।

यहां से आचार्यश्री हरसोलाव और स्थविरमुनि भोपालगढ़ पधारे। वहां पर दोनों साध्वियों को स्थविरमुनिश्री ने वड़ी दीक्षा दी अर्थात् सामायिक चारित्र से छेदोपस्थापनीय चारित्रको अंगीकार कराया। वहां कुछ दिन विराजकर रातकुड़िया होते हुए खांगटा पधारे। यहां पर आचार्यश्री गोठन से पधारे तथा सभी सन्तों का मिलन हुआ। यहां से फिर खवासपुरा, पूरलू, गगराना होते हुए मेड़ता पहुँचे और उपाश्रय में ठहरे। आचार्यश्री भी लाम्वा, भंवाल आदि गांवों को फरसते हुए मेड़ता पधारे। फाल्गुन का महीना होने से होली चातुर्मास यहीं हुआ। जोधपुर के दर्शनार्थी भाइयों का तांता लगारहा। यहां से पांचरोलिया जड़ाऊ आदि गांवों को फरसते हुए पादू पहुँचे। इस वीच में जयपुर का संघ आगामी चातुर्मास की विनती लेकर उपस्थित हुआ। मगर अजमेर फरसे विना चातुर्मास स्वीकार नहीं करेंगे" ऐसा उत्तर दिया गया।

यहां से स्वामीजी स० ठा० ३ से रीयां, आलानियांवास, गोवि-

न्ड्गढ़ किशनपुरा होते हुए पुष्करराज पहुँचे और आचार्यश्री मेवड़ा थांवला आदि गांवों को फरसते हुए पुष्कर पहुँचे। यहां से सब संत अजमेर पधारे और ममैयों के नोहरे में विराजे। यहां पर महासतीश्री राधाजी, श्री छोगाजी आदि सतियां स्थिरवास के रूप में विराजमान थीं इसलिए अजमेर संघ और सतियों का आग्रह अजमेर चातुर्मास के लिए ही था। यद्यपि जयपुर और पाली दोनों संघों की विनती थी और दोनों संघों के सदस्य बहुत संख्या में आए हुए थे किन्तु उन्हें निराश लौटना पड़ा और अजमेर का चातुर्मास ही निश्चित रहा। यहां से सब संत विहार कर किशनगढ़ पधारे और दहलान में ठहरे। आचार्य श्री यहां कुछ दिन विराज कर जयपुर वालों के अत्याग्रह से जयपुर पधारे। स्थविर मुनिश्री को गर्मी के समय विहार में कष्ट होता था अतः वे वहीं विराजे और कल्प पूरा होने पर मदनगंज पधार गए तथा शेष काल पूरा किया। आचार्य श्री जयपुर फरसकर वापिस मदनगंज पधारे और वहां से विहारकर सभी सन्त "समीर भवन" में अजमेर पधारे। स्वामीजी के लिए इतना रास्ता भी कष्ट साध्य था।

अजमेर का चातुर्मास. . .

व्याख्यान पहले मुनिश्री लक्ष्मीचन्द जी म० बाद में आचार्य श्री तथा सब से अन्त में स्थविर मुनिश्री रामायण फरमाते थे। आचार्य श्री शास्त्र संशोधन कार्य में व्यस्त रहते तो स्थविर मुनिश्री ही उनके स्थान पर व्याख्यान फरमाते। दोपहर के समय स्थविर मुनि श्री के सान्निध्य में मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० शास्त्र एवं

जैन सिद्धांत के बोल संग्रह का बांचन करते जिसका लाभ महासती वर्ग तथा उपस्थित भाई बहन लेते थे। चातुर्मास में धर्म ध्यान भी अच्छा हुआ। जैन जैनेतर लोग अच्छी संख्या में उपस्थित होते थे। गणेशजी भगत को इसी चातुर्मास से धर्म में विशेष रुचिहुई। साथ २ अन्य अग्रवाल भाई भी धर्मकथा में रस लेते थे। उमराव-मलजी ढड्ढा, गणेशमलजी बोहरा, रेखराजजी दूधेड़िया व जीतमलजी सुराणा आदि की सेवाएं विशेषरूप से थीं। इस प्रकार सं० २००४ का यह चातुर्मास अजमेर में सानन्द समाप्त हुआ।

केसरगंज निवासी अभयमल जी सांड का विशेष आग्रह होने से विहारकर केसरगंज जादूघर पधारे और वहां कुछ दिनों तक विराजे। स्थविर मुनिश्री गर्मी के दिनों में जयपुर नहीं पधारे थे, अतः जयपुर संघ का विशेष आग्रह था कि अब आप वहां अवश्य पधारें। इसलिए यहां से विहारकर किशनगढ़ होते हुए मगसिर शुक्लपक्ष तक ठा० तीन के साथ जयपुर पहुँचे। कुछ दिन तक शहर के बाहर पूनमचन्द जी के बाग में विराजे फिर यहां से विहार कर कुछ दिन सुबोध जैन पाठशाला के भवन में तथा कुछ दिन लालभवन (चौड़ारास्ता) में विराजे।

पौष सुदी को जयपुर से विहार कर किशनगढ़, अजमेर, तबीजी, लीड़ी, खरवा, जेठाना होते हुए नागेलाव पधारे। इधर आचार्य श्री अजमेर मेरवाड़ा के गांव भीनाय, ठांठौती, गुलाबपुरा विजयनगर, मसूदा होते हुए ब्यावर पधारे। स्थविर मुनिश्री होली चातुर्मास नागेलाव मनाकर ब्यावर पधारे। सब सन्त ब्यावर में

मिल गए। यहां के संघ का अपने यहां चातुर्मास कराने के लिए कई वर्षों से आग्रह था। स्थविरमुनि ने स्व० श्री चन्दनमल जी म० के साथ सं० १६६३ में यहां चातुर्मास किया था। आचार्य श्री का आज तक कोई चातुर्मास यहां नहीं हुआ था। इधर पाली संघ भी दो तीन वर्षों से बराबर चातुर्मास की विनती चल रही थी। इस प्रसंग पर हस्तीमलजी सुराणा, सिरेमलजी कांठेड़, नथमलजी पगारिया, मूलचन्द जी सिरोया आदि ४०–५० श्रावक व्यावर उपस्थित हुए। यद्यपि पाली कई चातुर्मास होचुके थे और व्यावर काफी वर्षों से चातुर्मास नहीं हुआ था, अव्वानी जी आदि कई श्रावकों का विशेष आग्रह भी था अतः व्यावर चातुर्मास निश्चित हो गया और पाली निवासियों को इस बार भी निराश होना पड़ा।

पाली वालों की ओर से शेष काल के लिए विशेष आग्रह होने से उसकी स्वीकृत्ति इन्हें देदी गई। कुछ दिन तक व्यावर विराजकर पाली के लिए विहार किया। सैंदड़ा, बर, बरेटिया, झूठा, रायपुर होते हुए सोजत पधारे और सोजत से विहारकर पाली शान्ति-पाठशाला के भवन में पधारे।

गर्मी का मौसम था और भाइयों का विशेष आग्रह था, अतःवहीं विराजे। जोधपुर के भाई बहनों की उपस्थिति प्रतिदिन काफी संख्या में हुआ करती थी। लोगों में धर्म ध्यान की लगन अच्छी थी। हस्तीमलजी सुराणा की धर्मपत्नी ने पहले किसी चातुर्मास में अठाई की थी, उसका प्रीतिभोज भी उन्होंने इसी अवसर पर किया जिसमें वहां के समस्त जैन समाज आमन्त्रित था। इस प्रसंग पर

जोधपुर के लगभग २००-३०० भाईबहन भी उनके द्वारा विशेष तया आमन्त्रित किए गए थे। सुराणा जी यहां के उदारमना सेठ हैं, जो धार्मिक कार्यों में भी हजारों रुपये लगाते रहते हैं।

स्थविर मुनिश्री की वृद्धावस्था के कारण उन्हें चलने फिरने में काफी कष्ट होता था। जंगल जाकर लौटने में भी काफी तकलीफ महसूस होती थी। उनकी शारीरिक स्थिति को देखकर व्यावर पहुंचना असंभव प्रतीत होता था, फिर भी पाली से विहारकर शहर से बाहर कानमलजी सिघवी के मन्दिर में पधारे। वहां से बहुत प्रयत्न करने पर भी जब स्थविर मुनिश्री का विहार न हो सका तो आचार्य-श्री हस्तीमल जी म० ने ठा० ३ से व्यावर के लिए विहार किया और स्थविर मुनिश्री को २००५ में पाली ही विराजना पड़ा। आप शान्ति जैन पाठशाला में ठहरे। स्वामीजी के सान्निध्य में दोनों वक्त शास्त्र का वांचन होता था। प्रातःकाल स्थंडिल से निवृत्त होने पर तीनों सन्त एक स्थान पर विराज जाते। मुनिश्री लक्ष्मी-चन्द जी म० शास्त्र का वांचन करते और स्वाध्याय प्रेमी मुनि श्री अमरचन्द जी म० और स्वामी जी उन्हें ध्यान पूर्वक श्रवण करते। श्रद्धानिष्ठ सुज्ञ श्रावक हीरालालजी चोपड़ा दैनिक तिथिवार श्री भगवती का सार संग्रहीत करते। आपने प्रायःदो एक दिन छोड़कर चारों महिने भगवती सूत्र का श्रवण किया। शास्त्र प्रेमी श्रावक लालचन्दजी मूलचन्दजी कटारिया आदि भी प्रायःआते रहते थे। इस तरह सकारण मुनि श्री का यह पाली चातुर्मास सानन्द समाप्त हुआ।

पीपाड़ की ओर विहार....

मिगसर वदि १ के दिन रीयां पीपाड़ की तरफ विहार हुआ। नींवली होते हुए पालासणी पहुँचे। कुछ दिन यहां पर विराज कर मिंगसर कृष्णा अमावस्या को विसलपुर पहुँचे। जहां जोधपुर के कई प्रमुख श्रावक श्राविकाएं दर्शनार्थ आए। जिनमें चन्दनमलजी मुथा, सांवतमलजी लोढ़ा, सुकनराजजी सिंघी,लाभमलजी भण्डारी, ब्रह्माचन्दजी भंडारी, सरदारनाथ जी वकील, सेठ रंगरूपमलजी सुराणा, फतहनाथजी मोदी आदि प्रमुख थे। आप सबने स्वामीजी से जोधपुर फरसने तथा वहां स्थिरवास विराजने की प्रार्थना की किन्तु स्वामीजी म० ने फरमाया कि अभी सर्दी का समय है अतः कुछ दिन विहार करने के बाद यथावसर जोधपुर फरसने का विचार है।

पालासणी विसलपुर होते हुए सकुशल रीयां (पीपाड़) पधारे और कई दिनों तक पीपाड़ में विराजे। फिर वहां से विहार कर साथिन होते हुए भोपालगढ़ पधारे, जहां पर महासतीश्री धन-कुंवरजी कई वर्षों से ठाणापति रूप में विराजमानथीं। महासती जी सम्प्रदाय में लम्बेकाल से संयमकी साधना करने वाली एक विदुषी सती थी। आपने स्वामीजी को भोपालगढ़ में ही स्थिरवास विराजने के लिए आग्रह किया। साथ ही भोपालगढ़ संघ का भी ऐसा ही आग्रह था। किन्तु स्वामीजी ने दोनों का एक स्थान पर स्थिरवास करना उचित नहीं जान, इसे अस्वीकार कर दिया। कई दिन वहां पर विराजने के बाद जोधपुर की ओर विहार करने का

विचार किया। इसी बीच मेड़ता निवासी जोहरीमलजी ओस्तवाल का पत्र आया कि हमारे यहां आचार्य श्री हस्तीमलजी म० पधारे हैं और यहां से विहार कर शीघ्र ही भोपालगढ़ पधार रहे हैं। अतः स्वामीजी म० आगे की ओर विहार न कर वहीं विराजें। आखिर विहार स्थगित करना पड़ा।

कुछ समय के बाद आचार्य श्री हस्तीमल जी म० भोपालगढ़ पधार गए। दोनों महामुनिराजों का परस्पर मिलन एवं मधुरालाप हुआ। स्वामीजी म० ने ठा० ३ से जोधपुर की ओर विहार किया। अब अमरचन्दजी म० के बदले माणकमुनिजी साथ में हुए। फा० शु० ६ वा १० को महामन्दिर पधारे। यहां जयमल्लजी म० की सम्प्रदाय के मुनि श्री हजारीमलजी म० श्री वृजलालजी म०, 'मधुकर' मुनि श्री मिश्रीलालजी म० का स्नेह मिलन हुआ। महामन्दिर में एक दिन रहकर दसमी इग्यारस के दिन सरदारपुरा कांकरिया भवन में पधारे। बारस तेरस का व्याख्यान तो जहां ठहरे थे वहीं पर हुआ। चतुर्दशी व पूर्णमासी को विशेष संख्या होगी ऐसा विचार कर व्याख्यान के लिए श्रावकों ने सरदार हाई स्कूल निश्चित किया। अतः आपके दो व्याख्यान वहां पर हुए। होली का पर्व आजाने के कारण प्रथम व्याख्यान आपने होलिका के संबंध में फरमाया जिसका सार निम्न प्रकार हैः—

मनुष्य यदि भूल नहीं करे अथवा प्रमादवश हुई भूलों को सुधारले, तो उसे विविध उलझनों या प्रपंचों के चक्कर में भूलकर भी नहीं आना पड़े। किन्तु भूलवाली यह आदत जल्दी नहीं मिटती।

जैसे अभी हमारे सामने होलिकोत्सव है। इसमें मनुष्य बेभान बनकर गंदगी, कीचड़ और धूल को एक दूसरे पर फेंक कर उत्सव का आनन्दानुभव करेगा। किन्तु कीचड़ या धूल उड़ाने में कौनसा आनन्द है? दूसरों को धूल धुसरित् करने में कौनसा मजा है? इसका समाधान संभव ही कोई करना चाहेगा? यह एक तरह का संस्कार बन गया है, जो आसानी से छूटने वाला नहीं है। मानवों में ये गंदी आदत या कुसंस्कार कब और कैसे आए? इस सम्बन्ध की एक कथा ध्यान देने योग्य है।

किसी राज्य के एक बड़े नगर में एक परिवार रहता था। जिसमें होलिका नामकी एक कुमारी थी। माता-पिता की असावधानी या कुटेवों के कारण होलिका बचपन से ही बिगड़ने लग गयी। वह जैसी रूपवती और स्वस्थ शरीर वाली थी, वैसी ही व्यभिचारिणी भी बन गई। काम वासना के तीव्र उन्माद से वह अपने पड़ोस के वातावरण को कलुषित बनाए रहती थी। परिणामतः होलिका के पड़ोसी उसके कुटिल सम्पर्क से दूषित बनने लग गए। धीरे २ यह खबर राजा के पास पहुँची और उसने होलिका के परिवार को नगर से बाहर निकाल दिया। मगर होलिका की आदत फिर भी नहीं छूटी। नगर के विषय-प्रेमी एक २ कर उसके पास पहुँचने लग गए। जिनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ गई। हार कर राजा ने नागरिक सभ्यता और धर्म-रक्षा के नाम होलिका दहन का कठोर आदेश निकाला।

होलिका दहन के समय वहाँ के सम्भ्रान्त नागरिकों ने उसके

प्रति घृणात्मक भाव प्रदर्शन के लिए चिता पर धूल कीचड़ आदि फेंके। जलकर होलिका व्यन्तर देव की योनि में पैदा हुई और उस नगर के आस पास उपद्रव मचाने लगी। एक समय अपने शिष्य परिवार के साथ आचार्य भगवान् का वहां आगमन हुआ। वे बाहर उद्यान में ठहरे जहां होलिका जलाई गई थी और जहां ही उसका उग्र उपद्रव होता था। लोगों ने उन्हें समझाया कि यहां लोग होलिकोपद्रव से नाकोदम हैं, अत: आप यहां न ठहरें। मगर आचार्य किसी की बात नहीं मानकर, वहां ठहर गए और ज्ञान ध्यान व स्वाध्याय में तल्लीन हो गये। रात बीतने पर उपद्रव आरंभ हुआ। उपद्रव बढ़ते देख आचार्य ने कहा—होलिके! तुम यह क्या कर रही हो? यह सुनकर वह बोली कि मैं अपने वैरियों से बदला ले रही हूँ। इस पर आचार्य ने बताया कि एकबार की भूल पर न संभलने के कारण तो तुम्हें इतनी मुसीबतें उठानी पड़ीं और फिर भी भूलों से बाज नहीं आती हो। याद रक्खो कि जैसे कीचड़ से कीचड़ धोए नहीं जाते, वैसे भूलों से भी भूलों का समाधान नहीं होता। आत्म कल्याण के लिए भूलों को छोड़नी ही पहली और प्रमुख शर्त है। होलिका के दिल पर इस साधु-वचन का गहरा असर हुआ और पश्चात्ताप कर वह शुद्ध बनगई।

होलिका दहन से ही इस पर्व का प्रारम्भ है और बुरे आचरणों के प्रति घृणा एवं जुगुप्सा प्रदर्शन करना ही इसका उद्देश्य है किन्तु आज का इसका स्वरूप स्वयं घृणा और जुगुप्सा-मूलक बन गया है। होलिका ने तो आखिर अपनी भूलों को

स्वीकार कर जीवन की धारा बदल ली किन्तु क्या हम सब राह चलने वाले निरपराध लोगों पर कीचड़ उछालने की अपनी इस भद्दी भूल को नहीं छोड़ेंगे ? जिसकी कि जीवन कल्याण में अत्यधिक आवश्यकता है।

स्वामीजी के इस प्रवचन को सुनकर बहुत से भाई बहिनों ने कीचड़ न फेंकने, अश्लील गाली गलोज न देने व किसी का काला मुंह नहीं करने आदि के नियम लिये।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० भोपालगढ़ से विहार कर चैत्र शु० ५ को कांकरीया भवन सरदारपुरा (जोधपुर) पधारे। आप का सार्वजनिक प्रवचन कांकरीया भवन के प्रांगण में होता था। जिसकी व्यवस्था सायरचन्दजी कांकरिया पृथ्वीराजजी खींवसरा व हीरालालजी चोपड़ा आदि करते थे।

पाली व पीपाड़ संघ के श्रावक अपने यहां चातुर्मास की विनती हेतु आपकी सेवामें उपस्थित हुए। पूज्यश्री ने पाली के लिये चातुर्मास की स्वीकृति फरमाई और स्वामीजी म० सा० के लिए जोधपुर संघ की विनती होने से व विहार योग्य शारीरिक स्थिति नहीं होने से वहीं के लिए स्वीकृति फरमाई। यहां से विहार कर संत साथिन ठाकुर की हवेली में पधारे और वहां से सिंहपोल पधारे। आचार्य श्री कुछ दिन तक सिंहपोल विराजकर पीपाड़ के लिए विहार कर गये।

२००६ का चातुर्मास सिंहपोल में....

स्वामीजी म० के २००६ का चातुर्मास सिंहपोल (जोधपुर)

में हुआ। लोगों में धर्मध्यान की प्रवृत्ति अच्छी रही। पर्युषण में भाइयों में एक नवरंगी एवं कई पचरंगियां हुयीं। प्रत्येक महिनों में भाइयों में एक पचरंगी होती रहती थी। सुकनराजजी सींघी, सावंतमलजी लोढ़ा, ब्रह्माचन्दजी भंडारी, सोहनराजजी मुणोत, मगनराजजी मुणोत, छतरचन्दजी भंडारी आदि धर्मध्यान में विशेष भाग लेते थे।

चातुर्मास समाप्त होने पर स्वामीजी म० महामन्दिर पधारे आपके विराजने से यहां पर भी धार्मिक चहल पहल अच्छी रही। यहां १५ दिन बिराज कर सरदारपुरा कांकरिया भवन में पुनः पधार गये।

वकील सरदारनाथजी मोदी, फतहनाथजी मोदी, भभूतचन्दजी भंडारी, डाक्टर शिवनाथचन्दजी आदि भाइयों व बहिनों का अत्याग्रह होने से यहां १५ दिन ठहर कर गांधी चौगान के पास वकील हुक्मीचन्दजी के बंगले पर पधारे।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म० पाली चातुर्मास समाप्त करके सादडी, जालोर आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए फा० शु० १२ को गांधी चौगान (जोधपुर) जहां स्वामीजी म० विराज रहे थे पधार गये। कई दिनों तक आप का व्याख्यान यहां के प्रांगण में होता रहा। होली चातुर्मास सब संतों का यहीं पर ही हुआ। शहर के श्रावकों का अत्याग्रह होने से सब सन्त शील सप्तमी के पश्चात् सिंहपोल में पधारे और कुछ दिन यहां विराजकर सरदारपुरा में प्रागचन्दजी भंडारी के बंगले पर पधारे। यहां पर ज्ञानचन्द

जी महाराज की सम्प्रदाय के स्थविर मुनिश्री इन्द्रमलजी म० मुनिश्री मोतीलालजी म० मुनिश्री लालचन्दजी म० आदि सन्तों का प्रेमपूर्वक सम्मिलन हुआ। परस्पर में समाचारी आदि को लेकर प्रेमपूर्वक वार्तालाप हुआ। कुछ दिनों तक सब सन्त शामिल रहे। तत्पश्चात् पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० ने चैत्र शु० त्रयोदशी को महावीर जयंती का व्याख्यान देकर शाम को विहार कर दिया। पंडित मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० और श्री माणक मुनि आप के साथ थे। इधर वयोवृद्ध स्वामीजी की सेवा में मुनिश्री अमरचन्दजी म० एवं मुनिश्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० रहे।

जोधपुर से विहारकर पूज्यश्री सोजत पधारे जहां पंडित रत्न पूज्य श्री आनन्द ऋषि जी म० सा० के साथ प्रेम पूर्वक मिलन हुआ। संयोग से वहां मुनिश्री शोभमलजी म० साहब के साथ भी मिलने का सुअवसर मिला। कुछ दिन तक वहां विराजने के बाद सोजत रोड पधारे जहां अक्षय तृतीया के दिन जोधपुर से बाइयों ने आकर वर्षी तप का पारण किया। वहां से जैतारण निम्बाज कालू आदि क्षेत्रों को फरसते हुए मेड़ता पधारे और वहां से गोठन होते हुए भोपालगढ़ पहुँचे। पूज्यश्री ने भोपालगढ़ से पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० और श्री माणक मुनि को जोधपुर स्वामीजी की सेवा में भेज दिया और आप वहां से पीपाड़ पधारे।

मुनि श्री अमरचन्दजी म० सा० और मुनिश्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० जोधपुर से विहार कर रीयां पीपाड़ पधारे, जहां पूज्यश्री का चातुर्मास होने वाला था।

२००७ का चातुर्मास....

स्वामीजी का विक्रम सं० २००७ का चातुर्मास कांकरिया भवन सरदारपुरा में हुआ। व्याख्यान प्रतिदिन व्यासजी के नोहरे में होता था।

चातुर्मास शहर के बाहर होते हुए भी शहर से भाई बहनों का आगमन ठीक संख्या में होता था। चातुर्मास समाप्त होने के बाद भी कुछ दिनों तक तो स्वामीजी वहीं विराजे। फिर यहां से विहारकर पावटा विलमचन्दजी भंडारी के बंगले पर पधारे । यहां भी लोगों में धर्मध्यान की चहल-पहल ठीक रही । सूरजमलजी दूगड़ जो आपकी सेवा में प्रतिदिन संध्या को प्रतिक्रमण करने के लिए आते थे, उनके अत्याग्रह से मुथाजी के मन्दिर में पधारे जो जालोरी दरवाजे के बाहर एक विशाल और शान्त स्थान है । जहां पर कई मुनि और महासतियों की दीक्षाएं हो चुकी है। यहां पर भी शहर तथा महामन्दिर के भाई बहनों की व्याख्यान आदि में ठीक २ उपस्थिति हो जाती थी। सन्त आहार पानी शहर व महामन्दिर से लाते थे । महासतीजी श्री हुलासकंवर जी उस समय महामन्दिर में ही विराजते थे।

पुनः शहर में शुभागमन....

वर्द्धमान जैन कन्या पाठशाला की (सेवा भाव से पढ़ाने वाली) धार्मिक अध्यापिका सज्जनबाई एवं इन्द्रबाई तथा इन्द्रनाथ-जी मोदी आदि अन्य भाई बहनों का वर्धमान जैन कन्या पाठशाला

भवन में विराजने का आग्रह होने से मुथाजी के मन्दिर से विहार कर माघ सुदि में स्वामीजी वहां पधारे । तब तक पाठशाला की छात्राओं की व्यवस्था इन्द्रनाथजी सा० मोदी (न्यायाधीश उच्च न्यायालय राजस्थान) के नव निर्मित भवन में हुई। यहां से आप प्रतिदिन प्रातःकाल सोजतिया गेट से होकर थन्डिल के लिए शहर से बाहर आया जाया करते थे। चलने में कमजोर होने के कारण आप सूर्योदय होते ही थन्डिल के लिए अकेले निकल जाते थे और पं० लक्ष्मीचन्दजी म० प्रतिलेखन का कार्य निपटाकर बाद में पानी लेकर पीछे से आते और आप को निपटा-कर व्याख्यानादि के लिए आपके पहले ही लौट जाते थे।

एक दिन स्वर्गीय नवरतनमलजी महता की धर्मपत्नी की ओर से सामूहिक दयाव्रत कराया गया जिसमें बहुत से भाइयों ने भाग लिया। आप एक उदारमना माता हैं। आपकी ओर से वर्ध-मान जैन कन्या पाठशाला के ऊपरी भाग में एक बड़ा हाल बनाया गया है।

चैत्र में महावीर जयन्ती के प्रसंग आजाने से भाइयों के द्वारा आग्रह होने पर स्वामीजी महाराज ने एक प्रवचन ओसवालों के न्यात के नोहरे में फरमाया जिसका सार निम्न प्रकार है:—

आपने फरमायाकि जब संसार में पाप एवं अनाचारों की वृद्धि से मानवता पीड़ित होकर कराह उठती है, तब जगत को उससे बचाने के लिए, महापुरुषों का अवतार हुआ करता है। आज से २५०० वर्ष पहले भारत की वसुन्धरा धर्म के नाम पर होने वाली

हिंसा से रक्त रंजिता एवं कदाचारों की आवास भूमि बनी हुई थी। लाखों पशु यज्ञ एवं देवी देवताओं के नाम पर रोज ही बलि पड़ते तथा उनके ऊपर वर्ती जाने वाली क्रूरता को स्मरण कर हृदय सिहर उठता था। सामाजिक जीवन में भेद भाव और असमानता का अभूत पूर्व व्यवहार था। वेदोक्त हिंसा में रत रहने वाला ब्राह्मण-भी पूजनीय माना जाता एवं निर्मल हृदय शूद्र को घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता था। जाति भेद, वर्ग भेद और सामाजिक व्यवस्था भेद से देश की बड़ी बुरी दशा थी। कर्मकाण्ड के नाम पर सत्य धर्म का मखोल उड़ाया जाता तथा उसके विरुद्ध बोलने वालों को पद पद में लांछित और दलित होना पड़ता था। ऐसे दारुण समय में वैशाली के राजवंश में, भगवान् महावीर का, अन्धकार से ऊबे जन मानस में, आशा की सुनहली किरणों का संचार करने के लिए प्राची के भव्य भाल पर भगवान् भास्कर की तरह उदय हुआ। आपके पिता का नाम सिद्धार्थ एवं माता का नाम त्रिशला देवी था। जैसे कमल जल में पैदा होकर भी जल से अलग रहता है, वैसे भोग विलास भरे राजवंश में जन्म लेकर भी, आप उन सब से दूर ही बने रहे।

युवावस्था में कुल परम्परा के अनुसार एक अनिन्द्य सुन्दरी राजकुमारी से आपका विवाह भी कर दिया गया किन्तु आपका दिल सांसारिकता के मोह पंक एवं आकर्षण में नहीं उलझ पाया। कनक और कान्ता की कमनीयता आपके हृदय में कभी जड़ नहीं जमा पायी। आखिर एक दिन ऐसा भी आया जब आप राज पाट, धन-

दौलत, प्रिय-परिवार और ऐश-आराम आदि समस्त मायिक आकर्षणों को छोड़ आत्मसाधना के लिए अकेले घर से निकल पड़े। लगातार १२½ वर्षों तक आपने कठोर तपश्चर्या एवं आत्म-साधना की और अन्त में.......…वै० शु० १० को शुक्ल ध्यान के शुभ श्रेणी पर आरूढ़ होते ही केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया।

केवल ज्ञान प्राप्ति के बाद आपका ध्यान देश में फैली विषमता की ओर गया। आप गांव २ और नगर २ घूमकर हिंसा के विरूद्ध "अहिंसा परमो धर्म" का प्रचार करने लगे। अपनी तपःपूत वाणी के द्वारा आप यह सिद्ध करने में सफल हुए कि हिंसा में धर्म नहीं है, बल्कि पाप है। धर्माराधन के लिए तो भगवती अहिंसा की उपासना परमावश्यक है। यद्यपि इस प्रचार में आप को बहुधा कर्मकाण्डियों की भर्त्सना का शिकार होकर ऊंचा नीचा देखना पड़ता था किन्तु "वीर कभी अपने सिद्धान्त से पीछे नही हटते" और आप तो महावीर थे, फिर भला! पीछे कैसे रहते? आप के सदुपदेश का प्रभाव तत्कालीन जन मानस पर अच्छा पड़ा। साथ ही राजाओं के दिल पर भी आप के प्रभाव की अच्छी छाप पड़ी। मगध का राजा श्रेणिक आपका भक्त बन गया। बड़े २ ब्राह्मण विद्वान् भी आप के तर्क और प्रमाणों से हारकर झुक गए। इन्द्रभूति-गौतम जो आगे चलकर गणधर और आप के परम प्रिय पट्टधर तथा शिष्यों में अग्रगण्य हुए, ब्राह्मण-कुलोद्भव ही थे। ये ग्यारह प्रमुख शिष्य थे।

आपके सदुपदेश से समाज में समानता और भ्रातृभाव

की स्थापना हुई तथा मूक पशुओं का बलिदान धीमा पड़ गया। लोगों में अहिंसा के प्रति श्रद्धा और प्रीति जगी। नारी जीवन में भी एक नयी क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। वे पर्दा छोड़ खुले मैदान में आयीं और साध्वी बन जीवन कल्याण के मार्ग में तीव्रगति से बढ़ने लग गयीं। उनमें राजकुमारी चन्दनबाला प्रमुख थीं।

आपने "जन्मना जाति की जगह" कर्मों से जाति का प्रचार किया। फलतः जिसमें ऊंचे गुण पाए जाते, समाज में उसका मान बढ़ता और अधमवृत्ति वाले विप्रों का भी अनादर होता था। इस प्रकार जाति की जगह गुण पूजा का प्रतिष्ठापन कर आपने उस समय के जगत् का ही अमित उपकार नहीं किया वरन् भावी जगत् के लिये भी एक आदर्श मार्ग प्रशस्त कर गए।

भगवान् महावीर ने धर्म के मुख्य दो प्रकार बताए-जैसे- प्रथम श्रुत धर्म और दूसरा चारित्र धर्म। जिसमें-श्रुत धर्म ज्ञान-रूप होता है और चारित्र धर्म आचरण रूप। चारित्र धर्म के भी आपने दो भेद किए एक आगार धर्म और दूसरा अनगार धर्म। आगार धर्म गृहस्थों, संसारियों के लिए है। जिसमें देशतः अहिंसा सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की साधना करनी होती है। अनगार धर्म साधुओं के लिए है जिसमें उक्त पंच महाव्रत का सर्वथा पालन करना पड़ता है। इस तरह गृहस्थ और साधुओं की दो श्रेणियां बना आपने सबकी मान मर्यादा और आचरण की भी व्यवस्था करदी।

भगवान् महावीर का जगत् के प्रति असीम उपकार है।

आज जो साम्यवाद या समाजवाद का नारा लगाकर लोग आनन्द का अनुभव करते हैं, उस समतावाद के आदि संस्थापक भगवान् महावीर ही थे, जिन्होंने स्वेच्छा से राज्य का परित्याग कर लोक-हित में जीवन को अर्पण कर दिया। आज उनकी जन्मतिथि है— हम सब को इस पुण्य दिवस से प्रेरणा प्राप्त कर जीवन को उच्च एवं उदात्त बनाना चाहिए। धर्म में हिंसा का स्थान नहीं अहिंसा ही परम धर्म है, इस आर्पसत्य के उद्‌घोपक की यह जयन्ती हमारे जग जीवन को अहिंसामय बनावे, यही कामना एवं साधना हमारा कल्याण कर सकती है।

इसी अवसर पर मोतीमलजी भंडारी ने सपत्नीक ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण किया।

सहिष्णुता . . . .

सोजतिया गेट जोधपुर का एक ऐसा राजपथ है, जहां पर मोटर, साईकल, घोड़ागाड़ी आदि का आवागमन विशेप बना रहता है तथा कचहरी का मुख्य मार्ग होने से यातायात में भीड़ बनी रहती है। यहां यदि मनुष्य थोड़ा भी असावधान होकर चले तो दुर्घटना होने की अधिक संभावना बनी रहती है। एक दिन आप इधर से अकेले जा रहे थे। कचहरी की ओर से एक मोटर साईकल वाला बड़ी अन्धाधुन्धी से गाड़ी चलाता हुआ आ रहा था। संयोग से अपको उसकी टक्कर लग गई और आप मूर्छित होकर नीचे गिर गए। घुटने पर भी चोट आई। आपको नीचे गिरे हुए देखकर लोगों ने उस साइकल चालक को चालान

करना चाहा किन्तु आपने फरमाया की जो होनी थी सो तो हो गई। अब उसको सताने से क्या लाभ ! आप वहां से उठकर स्वर्णकार प्रतापमलजी वकील के बंगले पर गए और आइडीन लगा कर धीरे २ आगे बढ़े। किसी ने ठीक ही कहा है कि:—

"क्षमा बड़न को उचित है—ओछन को उत्पात"

एक समय आप थन्डिल (जंगल) से वापस लौट रहे थे। रास्ते में एक दुकानदार जो सिन्धी भाई था, बिड़ियों का टोकरा साफ कर रहा था। संयोग से उसमें एक बिच्छू निकल आया। देखते ही वह उसे मारने को तैयार हो गया। सहसा मुनिश्री की नजर उधर गई और उन्होंने उसे मारने से मना किया। सिन्धी मान गया और मुनिश्री ने कपड़े में उसे पकड़ निर्जन स्थान में लेजा कर छोड़ दिया। छोड़ते समय बिच्छू ने अपना कर्तव्य अदा कर डंक मारा, मगर आपने शान्त भाव से उसे सहन कर लिया। यह है महात्माओं का महात्मपन।

इस प्रकार आप वर्धमान जैन कन्या पाठशाला भवन में करीब ४ महिना विराजे। इन्द्रनाथजी मोदी प्रतिदिन आपके दर्शन एवं रविवार को व्याख्यान का लाभ लेते थे।

पुनः सिंहपोल में ....

ज्येष्ठ शु० त्रयोदशी को यहां से विहार कर सिंहपोल पधारे। क्योंकि चतुर्दशी को आचार्य श्री रतनचन्दजी म० की स्वर्गवास तिथि होने से बहुत से भाइयों ने दया उपवास आदि करने का

निश्चय किया था जिनके लिए विशालता के कारण यह स्थान अनुकूल पड़ता था। यहां कुछ दिन विराजकर फिर आप कांकरिया भवन सरदारपुरा पधार गए। वि० सं० २००८ का चातुर्मास यहीं पर हुआ। दहीखेड़ा निवासी सोहनराजजी भंसाली के ४५ उपवास करने से यहां लोगों में धार्मिक चहल पहल विशेष रूप से घनी रही। दयाव्रत पंचरंगी अखण्ड जाप प्रभावना इत्यादि धर्म कार्यों से चातुर्मास का रंग अच्छा बना रहा और इस प्रकार २००८ का स्वामी जी का यह चातुर्मास सरदारपुरा में सानन्द सम्पन्न हुआ। चातुर्मास में ठाणापति सतियों के सिवाय सती बदनकंवर जी लाडकंवर जी आदि विराजे। शास्त्र वाचना के लिये स्वामीजी म० की सेवा में आते जाते रहते थे। स्वर्गीय सेठ हेमराज जी डागा की धर्मपत्नी ने ३१ दिन की तपस्या की।

आचार्य श्री का आगमन ....

आचार्य श्री हस्तीमल जी म० वि० सं० २००८ का चातुर्मास मेड़ता में समाप्त कर भोपालगढ़ होते हुए फाल्गुन वदि में स्वामी जी के दर्शनार्थ कांकरिया भवन सरदार पुरा पधारे और यहां कई दिनों तक विराजे। वर्द्धमान जैन कन्या पाठशाला की अध्यापिकाएं सम्प्रदाय के प्रमुख श्रावक तथा श्राविकाओं के आग्रह विशेष से आचार्य श्री स्थविर मुनि श्री के साथ पाठशाला भवन में पधारे। यहां स्थानाभाव से व्याख्यान की व्यवस्था राव राजा उदयसिंह जी की हवेली में की गई। आचार्य श्री कुछ दिनों तक स्वामीजी के साथ यहां विराजे।

पुण्य विजय जी का मिलाप....

जैसलमेर का प्राचीन शास्त्र भण्डार भारतवर्ष का एक अच्छा संग्रहालय माना जाता है। जो बहुत वर्षों से अस्त व्यस्त पड़ा हुआ था, उसी का उद्धार कर मुनि श्री पुण्य विजय जी भेरुबाग सरदार-पुरा में आए हुए थे। इधर सह मंत्री श्री हस्तीमलजी म० कांकरिया भवन में स्वामी जी के साथ विराजमान थे। पुण्य विजय-जी स्वयं कांकरिया भवन में सन्तों से मिलने के लिए पधारे। शास्त्र सम्बन्धी विभिन्न बातें हुई। बाद में सहमंत्री जी और स्वामी जी म० दोनों साथ में भेरुबाग जहां पुण्यविजयजी ठहरे हुए थे, पधारे। स्वामी जी को नयी तथा पुरानी चीजों को देखने की बड़ी अभिलाषा रहती थी। पुण्यविजयजी जैसलमेर के भण्डार में रखी हुई कई प्राचीन श्री भगवती सूत्र ज्ञाता धर्म कथा आदि सूत्रों की फिल्में तैयार करके लाए थे, वे सब दिखलाई। स्वामी जी ने उन सबको देख कर प्रसन्नता प्रगट की।

सादडी साधु सम्मेलन की विचार गोष्ठी में शामिल होने के लिए आचार्य श्री हस्तीमलजी म० पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० व श्री माणक मुनि जी को साथ लेकर फा० शु ११ को यहां से अजमेर के लिए विहार किया और श्री अमरचन्द जी म० तथा श्री छोटे लक्ष्मीचन्द जी म० को स्वामी जी की सेवा में रखा। विभिन्न सम्प्रदायों के सन्त सादड़ी सम्मेलन के विचारार्थ अजमेर में एकत्रित हो रहे थे जिनमें आचार्य श्री गणेशी लाल जी म० पंजाब केशरी उपाध्याय श्री प्रेमचन्द जी म० उपाध्याय श्री अमर

चन्द जी म० परम स्थविर मुनि श्री पन्नालाल जी म० स्थविर मुनि श्री पूर्णमल जी म० पं० मुनि श्री प्यारचन्द जी म० आदि प्रमुख थे। सबकी राय में सादड़ी जाना एवं सामाजिक संगठन को मजबूत बनाने का रहा। सब सन्त अजमेर से ब्यावर पधारे और प्रेम पूर्वक रहे एवं एक ही स्थान पर व्याख्यान भी दिया। सन्त समागम से ब्यावर की जनता में काफी उमंग थी।

ब्यावर से कई सन्त सेंधड़ा सोजत, बगड़ी होते हुए सादड़ी पधारे किन्तु आचार्य श्री हस्तीमलजी म० देवगढ़ होते हुए देसुरी की नाल से सादड़ी पधारे। बृहत्साधु सम्मेलन वैशाख शु० ३ को होने वाला था, जिसके पहले सभी सन्त यहां पधार गए। नियत समय पर सम्मेलन हुआ और श्रीवर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणसंघ की स्थापना हुई।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म० ने बड़ी तीव्र गति से यह विहार किया। फा० शु० ११ को जोधपुर से विहार कर चैत्र कृष्ण ११ को अजमेर तक १२० मील दूरी को पार किया। सम्मेलन के बाद ही आप सादड़ी से विहारकर पाली होते हुए पुनः स्वामीजी की सेवा में जोधपुर पधारे। संघ ऐक्य के लिये आपने साम्प्रदायिक आचार्यपद का विलीनीकरण किया। श्रमण संघ की तरफ से आपको सहमन्त्री का पद दिया गया।

स्थविर मुनिश्री व० जैन कन्या पाठशाला से विहारकर पहले ही कांकरिया भवन में पधार गए थे। जयमलजी म० की सम्प्रदाय के मुनिश्री चौथमलजी म० शहर में इधकराजजी के मकान में

विराजते थे। सादड़ी सम्मेलन हो जाने से एक नया परिवर्तन उदय ले रहा था। जिसके लिए समाज की मनोभावना की शुद्धता आवश्यक थी। अतः सहमन्त्री श्री हस्तीमलजी म० व मुनिश्री चौथमलजी म० दोनों मुनिराजों के उपदेश से श्रावकों ने आन्तरिक क्लेश निपटा लिया। दोनों तरफ के श्रावकों ने परस्पर क्षमा याचना करके वातावरण को बिलकुल शान्त बना डाला। विरोधी दल वालों ने सहमन्त्री श्री हस्तीमलजी म० व स्वामीश्री सुजानमलजी म० से अपने किये हुए अपराधों के विषय में क्षमा याचना की।

मुनिश्री चौथमलजी म० के घुटने में एक विषैला फोड़ा होने से पहले आप शनिश्चर जी के स्थान में विराजते थे और स्थविर मुनिश्री कांकरिया भवन में थे। अतः दोनों महापुरुषों का परस्पर मिलन होजाता था। कभी मुनिश्री चौथमलजी म० कांकरिया भवन में पधार जाते तथा कभी स्वामीजी म० शनिश्चर जी के स्थान में पधार जाते। इस प्रकार सन्तों का प्रेम पूर्ण समागम हो जाता था।

सहमंत्रीजी म० का चातुर्मास के लिए नागोर प्रस्थान....

सहमन्त्री श्री हस्तीमल जी म० ने सादड़ी में ही नागोर संघ की चातुर्मास की विनती स्वीकार करली थी। अतः आप यहां से विहार कर महामन्दिर पधारे। उधर जोधपुर में मुनिश्री चौथमल जी म० ने विशेष पीड़ा के कारण संथारा स्वीकार कर लिया और

सहमन्त्रीश्री हस्तीमलजी म० को महान्दिर सन्देश भेज कर मिलने की इच्छा की। मंत्री श्री मध्याह्न में ही मुनिश्री की सेवा में पहुंचे। मुनिश्री चौथमलजी म० ने कहा कि जब तक मेरा संथारा न सीझे तब तक आपको विहार नहीं करना चाहिए। सहमन्त्रीजी ने सहर्ष इसे स्वीकार किया। एक दिन स्वामीजी म० भी शारीरिक अस्वस्थता की पर्वाह किए बिना सरदारपुरा से यहां दर्शन देने के लिए पधारे। आपका सथारा १३ दिनों तक चला। आषाढ़ सूद २ की रात को आप देवलोक पधार गये। इस तरह सहमन्त्री जी ने शास्त्र एवं आध्यात्मिक पदों को सुनाकर मुनिश्री की अन्तिम सेवा का लाभ लिया।

सहमन्त्रीजी म० ने स्थविरमुनिश्री की सेवा में पधार कर आहार पानी किया और शाम को उनका मांगलिक सुनकर नागोर चातुर्मास के लिए विहार कर दिया तथा १३–१४ को नागोर पहुँच गये।

सं० २००६ का चातुर्मास ....

जोधपुर संघ ने पजाब प्रान्तीय मन्त्री मुनिश्री शुक्लचन्दजी म० का चातुर्मास सादड़ी में ही निश्चित करा लिया था। अतः आप चातुर्मास के लिए सबसे पहले कांकरिया भवन सरदारपुरा पधारे, जहां स्थविर मुनिश्री विराजमान थे। सन्तों का पारस्परिक व्यवहार बड़ा हृदयग्राही रहा। जब शहर में जाने का समय आया, उस समय मंत्री मुनि श्री और संघ ने भी स्थविर मुनिश्री से आग्रह किया कि आप भी शहर में विराजें। इस पर स्वामीजी

ने फरमाया कि वृद्ध होने से शहर की घाटियां उतरने चढ़ने में मुझे कष्ट होता है। मंत्रीजी तथा श्रावकों का विशेष आग्रह रहा कि आप इच्छानुकूल ही वहां विराजें अन्यथा पुनः बाहर पधार सकते हैं। इस प्रकार विशेष आग्रह होने पर आप भी साथ में सिंहपोल पधारे।

सिंहपोल में पहला व्याख्यान पं० मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० सा० फरमाते थे। फिर मंत्री मुनिश्री का विशेष आग्रह होने से थोड़े समय के लिये स्वामीजी म० सा० भी फरमाते थे। अन्त में मंत्री मुनिश्री का सारगर्भित प्रवचन होता था मंत्री मुनिश्री शुक्लचन्दजी म० गुरुवत् स्वामीजी के प्रति आदर प्रगट करते रहे। स्वामीजी ५-७ दिनों के लिए शहर में गए थे किन्तु मंत्रीश्री का प्रेमपूर्ण व्यवहार देख कर आप भादवा सुद १२ तक वहां विराजे और १३ को पुनः कांकरियाभवन में पधार गए।

विहार के १-२ दिन पहले मंत्री मुनिश्री शुक्लचन्दजी म० स्वामीजी के दर्शनार्थ पधारे। पूर्णिमा को स्वामीजी भी सिंहपोल पधारे। अन्य संत तो बीच में भी आतेजाते थे। मिगसर वदी १ के दिन स्वामीजी ने पं० मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० तथा श्री माणक मुनिश्री को विहार में पहुँचाने के लिए भेजा। विहार काल में मन्त्री मुनिश्री ने अन्तिम सन्देश के रूप में हृदय ग्राही प्रवचन दिया। पं० मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० ने भी प्रसंगोचित भाषण दिया। इस चातुर्मास में संघ में बड़ी प्रभावना हुई। इस तरह स्वामीजी का २००६ का यह चातुर्मास सरदारपुरा एवं शहर

में सानन्द सम्पन्न हुआ। महासतीजी श्री धनकंवरजी म० ठा० ३ से तथा श्री अमरकंवरजी आदि सतियां चातुर्मास में विराजी।

सन्त समागम . . . .

पालनपुर का चातुर्मास समाप्त करके सोजत मन्त्रि मण्डल की बैठक में जाते हुए व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म० व कवि श्री अमरचन्दजी म० जोधपुर पधारे। कुछ दिनों तक आप सब यहां विराजे। संयोग से सहमन्त्री जी श्रीप्यारचन्दजी म० भी अपनी शिष्य मण्डली के साथ सिंहपोल में पधारे हुए थे। सब सन्तों का व्याख्यान सिंहपोल में होता था। स्वामीजी ने पं० मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० को आप सब की सेवा में भेजा। उस समय श्री मदनलालजी म० व कविजी म० ने फरमाया कि हमें यह नहीं मालूम था कि स्वामीजी सरदारपुरा में विराजते हैं, अन्यथा हम सब सीधे उनकी सेवा में ही उपस्थित होते। अब यहां से विहार कर उनकी सेवा में पहुँचेंगे। तदनुसार आप विहार कर कांकरिया भवन में पधारे। व्यासजी के नोहरे में दोनों महामुनियों ने व्याख्यान फरमाया। सब सन्तों का पारस्परिक व्यवहार बड़ा ही वात्सल्य पूर्ण बना रहा। सोजत सम्मेलन में पहुँचने की जल्दी होने से आप थोड़े ही समय तक यहां विराजे मगर आकांक्षा अधिक समय तक विराजने की मन में बनी रही। यहां से आप विहार कर बाल निकेतन पधारे। स्वामीजी म० भी वहां तक आपको पहुँचाने के लिए गए। सहमन्त्री श्री प्यार-चन्दजी म० तथा उनके सन्तों का भी आना जाना बना ही रहा।

चातुर्मास समाप्त होने के बाद कांकरिया भवन के मालिक घमंडीराम जी शायरमल जी की इच्छा हुई कि मकान के पास की जमीन जो सरकार से मिली है उसे मकान के अन्दर करलें तथा मकान में कुछ परिवर्तन करें अतः स्वामीजी यहां से विहारकर माघ सुदी अष्टमी को पुनः वर्द्धमान जैन कन्या पाठशाला में पधारे सहमंत्री श्री हस्तीमल जी म० नागोर का चातुर्मास समाप्त कर सोजत मंत्रि मंडल की बैठक में पधारे थे और वहां का कार्य समाप्त कर प्रधान मंत्री श्री आनन्दऋषि जी म० को साथ लेकर जोधपुर पधारते हुए महामन्दिर पधारे जहां से कि वे स्वामी जी की सेवा में पधारते। मगर स्वामी जी स्वयं उनके स्वागत के लिए सामने गए।

सब सन्त कन्या पाठशाला में ही विराजे। व्याख्यान प्रतिदिन पाली निवासी सेठ मुकनमल जी बालिया के मकान के प्रांगण में होता था। होली चातुर्मास का समय नजदीक था और पाठशाला का स्थान यहां से संकीर्ण था। अतःमोदी जी आदि का विराजने का आग्रह होते हुए भी यहां से सिंहपोल पधारे। होली चातुर्मास सब सन्तों का वहीं पर हुआ।

यहां से विहार कर कुछ दिनों तक घोड़ों का चौक में विराज कर फिर कांकरिया भवन सरदारपुरा पधारे। वहां पर मंत्री मुनि श्री मिश्रीमल जी म० मुनि श्री लाभचन्द जी म० मुनि श्री चौथ मल जी म० स्थविर मुनि श्री नारायण दास जी म० व उनके शिष्य मुनि श्री प्रतापमल जी म० आदि सन्तों का प्रेम सम्मेलन हो गया व्याख्यान व्यास जी के नोहरे में होता था।

यहां से प्रधान मंत्री श्री आनन्दऋषि जी म० ने पाली की ओर विहार किया। सह मंत्री श्री हस्तीमल जी म० ने इसवार स्वामी जी की सेवा में श्री रतन मुनि जी को रखकर श्री माणक मुनि जी को अपने साथ लिया। चातुर्मास के लिए सहमंत्री जी का पुनः आना निश्चित सा होगया था-अतः स्वाध्याय प्रेमी श्री अमरचन्द जी म० यहीं विराजे। सहमंत्री जी चैत्र सुदी ७ को यहां से विहार कर २-३ दिन सोजतिया गेट विराजे और वहां से महा-मन्दिर पधार गए। चैत्र शु० त्रयोदशी को महावीर जयन्ती का प्रवचन फरमा कर अजमेर की ओर विहार कर दिया। मंत्री मुनि श्री मिश्रीमल जी म० मुनि श्री लाभचन्दजी म० और श्री चौथमल जी म० यहां से विहार कर हीराचन्द जी भीखमचन्द जी के बंगले पधारे।

भूत पूर्व ऋषि सम्प्रदाय की महासतीजी सिरेकुंवर जी ठा० ४ से सोजत की बैठक से जोधपुर फरसने के लिए आए हुए थे जो कभी २ स्वामी जी की सेवा और दर्शन का लाभ लेते थे। भूतपूर्व अमर सिंह जी म० की सम्प्रदाय के स्थविर मुनि श्री नारायणदास जी म० और इनके शिष्य श्री प्रतापमलजी म० ठा० २ से आंख का इलाज कराने के लिए कांकरिया भवन में विराजे। आप सेठ विजय राज जी कांकरिया के मकान में विराजते थे। एक मकान होने के कारण सन्तों का आना जाना होता ही रहता था। तकलीफ के कारण श्री नारायण दास जी म० स्वामी जी की सेवा में आने जाने में असमर्थ थे, इसलिए स्वयं स्वामी जी म० उनके स्थान पर चले

जाते और परस्पर प्रेम पूर्वक वार्तालाप करते रहते। जिससे उनके हृदय में भी बड़ा सन्तोष रहा। स्थविर मुनिश्री नारायणदास जी म० को स्वामीजी म० ने फरमाया कि आप यहीं विराजे परन्तु महा मन्दिर संघ का आग्रह और वहां पर किसी का चातुर्मास न होने के कारण आपने वहां जाना निश्चय कर लिया। तदनुसार आषाढ़ सुदी १३ को आप विहार कर महामन्दिर पधारे। स्वामी जी म० ने अपने दोनों सन्तों को पहुँचाने के लिए भेजा। श्री रतनमुनि जी उनके भण्डोपकरण लेकर महामन्दिर तक पहुँचाने गए।

शूली की वेदना शूल में....

स्वामीजी म० को ज्योतिषशास्त्र पर विशेष श्रद्धा एवं विश्वास था। आप अपनी जन्मपत्री ज्योतिषियों को दिखाते रहते थे। जोधपुर के एक ज्योतिषी ने आपका चालू वर्ष निकाल रखा था। उनका कहना था कि यह वर्ष आपके लिए अच्छा नहीं है। उसमें भी वैशाख और जेठ का महिना तो और भी खराब है। वृद्धावस्था के कारण आपके घुटनों में हर समय दर्द रहता था जिसका कि समय २ पर आप उपचार किया करते थे। कभी घासलेट, कभी पेट्रोल और कभी दूसरी साधारण दवा का प्रयोग कर लिया करते थे। आप औषधियों के निमित्त गृहस्थों का पैसा खर्च नहीं कराते थे। एक दिन एक देशी वैद्य ने घुटनों पर एक लेप लगाने के लिए कहा। जिसको लाकर पं० मुनि श्री लक्ष्मी-चन्दजी म० ने एक-दो दिन लगाया। शेष सेठ घमण्डीरामजी के यहां रखा हुआ था। पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० शहर में

चन्दनमलजी मुथा के सुपुत्र रणछोड़मलजी को दर्शन देने के लिए गए जो कि बीमार थे। उधर घमण्डीरामजी की पत्नी ने उस लेप को तप्त तवे पर रखकर गर्म कर लिया। स्वामी जी स्वयं उनके घर पर पहुचे और उसको लाकर सारा का सारा दोनों घुटनों पर लगा दिया। शाम होते ही आपको विशेष पीड़ा होने लगी तो आपने उसको अपने हाथो से हटा दिया। दूसरे दिन जंगल से वापस लौटते समय घुटनों में होने वाली कुछ जलन को आपने जल से धोकर दूर करना चाहा। जलन तो क्या मिटी उल्टे धोए स्थानों में फफोले निकल आए और आपका चलना फिरना बिलकुल बन्द हो गया तथा असह्य पीड़ा होने लगी कम्पाउन्डर सिंघवी सम्पत चन्द जी के सुपुत्र उम्मेद मल जी का उपचार करने से करीव १५ दिनों के वाद आप कहीं स्वस्थ हो पाए। ज्योतिषी का कहना था कि-शूली की वेदना आपने शूल में सहली।

संयुक्त चातुर्मास ....

सोजत में श्रमण संघ के मंत्री मुनियों की कतिपय आवश्यक विषयों पर विचार विमर्श के लिए एक बैठक हुई थी। उसमें अनेक प्रस्तावों के साथ एक यह प्रस्ताव भी निश्चित किया गया कि श्रमण संघ की नींवं को सुदृढ़ बनाने के लिए इस वर्ष ६ मुनि राजों का संयुक्त चातुर्मास कहीं एक जगह होना चाहिए। इस प्रस्ताव पर जोधपुर संघ ने अपने यहां चातुर्मास कराने के लिए प्रयत्न शुरू किया। बहुत प्रयत्न के वाद उपाचार्य श्री गणेशी लाल जी म० प्रधान मंत्री श्री आनन्द ऋषि जी म० व्याख्यान वाचस्पति श्री

मदन लाल जी म० कवि श्री अमरचन्द जी म० सहमंत्री श्री हस्ती मल जी म० तथा पं० मुनि श्री समर्थमलजी म० आदि ६ मुनि राजों का जोधपुर में चातुमास निश्चय हुआ।

ये सब सन्त आषाढ़ सुदी २-३ तक विभिन्न दिशाओं से विहार कर महामन्दिर पहुँच गए। महामन्दिर से विहार कर सब सन्त एक साथ ही हीराचन्दजी भीखमचन्दजी के बंगले पधारे और वहां से विहार कर आषाढ़ सुदी १० को बड़े समूह के साथ चातुर्मास के लिए निश्चित स्थान सिंहपोल में पधारे। वहां से उपाचार्य श्री ११-१२ को स्वामी जी की सेवा में कांकरिया भवन पधारे और दिन भर वहीं विराजे। आपके विराजने से दिन भर प्रवचन धर्म चर्चा आदि से बड़ी चहल पहल रही। बाद में दूसरे सन्त भी पधारे। सह मंत्री श्री हस्ती मल जी म० क्षमापना करने के लिए महिने में दो बार पधारते थें।

श्रमण संघ के उपाचार्य एवं महारथियों से भी स्वामी जी ने सन्देश रूप में फरमाया कि आप सब सन्तों ने सादड़ी सम्मेलन में संघ ऐक्य के लिए सम्प्रदायों का विलीनीकरण किया सो तो अच्छा है किन्तु अब श्रमण संघ को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रयत्न-शील रहना चाहिए। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस संयुक्त चातुर्मास में श्रमण संघ की नींव को सब सन्त मिल कर मजबूत बनाने के लिए विचार विनिमय करेंगे।

इस चातुर्मास में मुनिश्री ने विशेष रूप से तपस्या की। श्रावण से भादवा सुदी पूनम तक एकान्तर किया एवं चार तेले

किए। चतुर्दशी का उपवास तो निरन्तर चलता ही रहता था। आप तपस्या पर जोर देते हुए कहा करते थे कि तपस्या ही एक ऐसा साधन है जो पुरातन पापकर्म को नष्ट करता है। कहा भी है कि "तवसा धुणइ पुराण पावगं" जैसे जल से वस्त्र एव शरीर का मल साफ हो जाता है; उसी प्रकार तपस्या से आत्मा के साथ लगे हुए कर्म रूपी मल साफ होकर आत्मा परम पवित्र बन जाती है। तपस्या करने के पीछे आपकी कौनसी आन्तरिक प्रेरणा थी, वह अज्ञेय है ?

साम्वत्सरिक क्षमापना करने के लिए उपाचार्य श्री एव सभी संत सरदारपुरा पधारे। कातिक सुदी १२.१३ को आपने पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० को श्रमण संघ के महारथियों की सेवा में भेजा और कहलाया कि चातुर्मास की समाप्ति पर सभी मुनिराजों को सरदारपुरा पधारना चाहिए। कार्तिक सुद पूनम को आप भी सिहपोल पधारे। वह दृश्य जनता के लिए आकर्षक एवं उल्लास-पूर्ण था। विहार के बाद सन्तगण बाल-निकेतन चले गए। केवल सहमन्त्री श्रीहस्तीमलजी म० शहर में रुके रहे। बाल निकेतन से सन्तवृन्द महामन्दिर पधार गए। कविश्रीअमरचन्दजी म० आपके सन्देश एवं भाई बहनों के आग्रह विशेष से महामन्दिर से सरदार-पुरा पधार कर दो व्याख्यान फरमाये। बाद में मंगसर वदी १० को श्री आनन्दऋषिजी म० कांकरिया भवन पधारे। सहमन्त्री श्री हस्तीमलजी म० छोटे लक्ष्मीचन्दजी म० के आपरेशन की वजह से शहर में रुके हुए थे। अतः आप भी ग्यारस को मुनिश्री

लक्ष्मीचन्दजी म० को लेकर वहां पधारे। छोटे मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी की निवास व्यवस्था घमण्डीरामजी के सुपुत्र लाला की बैठक में की, अन्य सन्त ऊपर के मकान में विराजे। पीछे से उपाचार्यश्री भी सरदारपुरा पधारे। कांकरिया भवन में स्थान की कमी के कारण आप शनिश्चरजी के स्थान पर विराजे। व्याख्यान कांकरिया भवन के प्रांगण में होता था जहांकि प्रतिदिन आप पधार जाते थे।

जिस समय श्रमण संघ के संत परमस्थविर पूर्णमलजी म० स्थविरमुनि श्री सुजानमलजी म० उपाचार्य श्रीगणेशीलाल जी म० प्रधान मन्त्री श्रीआनन्दऋषिजी म० सहमन्त्रीश्री हस्तीमलजी म० एक पाटे पर विराजमान होते तो समवशरण जैसा सुन्दर दृश्य उपस्थित होता था। आपके विराजने से जोधपुर तीर्थ भूमि सा बना हुआ था। सादड़ी एवं सोजत सम्मेलन में आप नहीं पधार सके किन्तु प्रमुख मुनिराजों का संयुक्त चातुर्मास जोधपुर में होने से आपको यहीं पर सम्मेलन का दृश्य देखने को मिल गया। कहावत भी है कि–"पुण्यवान के घर गंगा"।

शय्यातर का लाभ. . .

शास्त्र में शय्यातर के लाभ को परम लाभ माना है। सन्तों को ठहरने के लिए आज्ञा प्रदान करने वाला मकान मालिक शय्यातर कहलाता है। अन्नवस्त्रादि का लाभ तो कभी होता है तो कभी नहीं किन्तु मकान की आज्ञा देने वाला निरन्तर लाभ का अधिकारी है। सेठ घमण्डीरामजी ने अपना एक मकान इस श्रेष्ठ कार्य के लिए स्वतन्त्र कर रखा था। जब भी सन्त शहर के पास

पहुँच जाते थे तो उनको अपने मकान में ठहराने के लिए विशेप प्रयत्न करते रहते थे। संतों के पधारने पर अपने बड़े लड़के शायरचन्दजी को शय्यातर बना देते थे। क्योंकि उनका रसोई पानी पृथक् था। आपका मकान सर्दी, गर्मी वर्षा आदि सभी ऋतुओं में अनुकूल था। व्याख्यान, स्वाध्याय और ध्यान करने वाले संतों के लिए यह सर्वथा सुविधाजनक एवं उपयुक्त था। संतों के लिए सबसे बड़ी बात होती है परठाने की उसके लिए भी यह अनुकूल स्थान था। यहां पर कभी विशेप संख्या में सन्त आ जाते तो सेठ विजयराजजी के मकान के ऊपर विराजते। इस तरह विजयराजजी को भी शय्यातर का लाभ हो जाता।

अन्नट्ठं पगडं लभगं, भइज्ज सयणासणं।
उच्चार भूमि संपन्नं, इत्थीपसु विवज्जिय।

अर्थ—दूसरों के निमित्त बना हुआ सयन और आसन से युक्त और परठाने की भूमि से युक्त एवं स्त्री पशु आदि से रहित ऐसे स्थान को मुनि ग्रहण करें।

दशवैकालिक सूत्र अं० ८ गा० सं० ५२

दिनचर्या . . . .

आप नित्य प्रातःकाल थंडिल के लिए बहुत दूर जाया करते थे। अस्वस्थता की दशा में भी प्रायः आप अपने इस प्रिय नियम का पालन करते थे। प्रतिलेखन का कार्य निपट कर पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० पानी लाते और उसे लेकर आपकी सेवा में

पहुंच जाते । आप वहां से लौट कर कभी प्रत्याख्यान पाड़ कर कुछ ग्रहण करते अथवा पोरपी कर लेते ।

प्रवचन फरमाने में आप सदा निरालस रहा करते थे । आपका व्याख्यान सरल भाषा में सादगी पूर्ण एवं रोचक होता था। साधारण से साधारण आदमी भी जिसको आसानी से समझ सकता था। आप आचार्य श्री रतनचन्द्रजी म० आचार्य श्री जयमलजी म० पं० मुनि श्री कनीराम जी म० कवि भूषण श्री सुजान मल जी म० आदि आध्यात्मिक महापुरुषों के आध्यात्मिक पदों को बड़े प्रेम से सुनाया करते थे जिनमें त्याग वैराग्य एवं आत्मा को प्रेरणा देने वाले विचार होते थे । पद्य प्रवचन के समय आप तन्मय और आत्म विभोर हो जाते थे जो श्रोतावर्ग के आकर्षण को बढ़ाने वाला होता था ।

आहार आने पर आप आहार ग्रहण करते और थोड़े से विश्राम के बाद ठीक १२ बजे ध्यानस्थ हो जाते । मध्याह्न में पं मुनि श्री लक्ष्मीचंन्द जी म० सतियों को वांचना देते जिसको कि आप ध्यान पूर्वक श्रवण करते थे । २ से ३ बजे तक आपके पास बैठकर पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० शास्त्रों का वांचन करते जिसके सुनने वाले भाई बहनों की उपस्थिति ठीक २ हो जाती थी। लोढ़ा सावन्त मल जी सिंघी सुकनराज जी मास में १५ व १६ दया उपवास करने वाले थे । ब्रह्माचन्द जी छतरचन्दजी मगनमलजी ये निरन्तर रात्रि में स्थानक में संवर करने वाले श्रावक थे । अव्वाणी पुखराज जी गुलराज जी अवकाश के दिनों में पौषध दयाव्रत किया करते

थे। मावोमल जी लोढ़ा नौकरी से अवकाश प्राप्त होने पर स्वामी जी की सेवा में नित्य प्रातः व्याख्यान में एवं १२ से ४ बजे तक संगति में प्रायः उपस्थित हो ही जाते थे। लोढ़ाजी प्रवचन को मात्र श्रवण ही नहीं करते वरन् उसे हृदयंगम करने की भी कोशिश रखते थे।

स्वामी जी शाम को भी जंगल के लिए बाहर ही जाते। कभी साथ चलने वाले सन्त नहीं होते तो अकेले ही पधार जाते थे। आपके शरीर में प्रमाद एवं आलस्य का लेश मात्र भी नहीं था। शाम को प्रतिक्रमण, जप, शयन और रात्रि में जागरण—यही आपकी अपनी खास पद्धति थी। जहां भी आप विराजते वहां महिने में ४-५ दिनों को छोड़ कर शेष दिनों में दया, उपवास, आमिल, संवर आदि धर्म क्रियाएं होती ही रहती थीं। जोधपुर स्थिरवास के समय विजयराजजी कांकरिया सम्पतचन्द जी सिंघी धनराजजी सुराणां, कानमलजी नाहटा, भभूतचन्दजी भण्डारी, किशोरमल जी लोढ़ा धींगड़मलजी गिडिया आदि प्रमुख धर्म ध्यानी एवं संतसेवी श्रावक थे। इनमें से बहुतों ने महिने में ४, ७ व ६ दिनों तक दया उपवास करने के नियम ले रक्खे थे। इस तरह आपके विराजने से वहां धर्म ध्यान की चहलपहल बराबर बनी रहती थी। कांकरिया घ ंडीरामजी तथा उनके सुपुत्र सायरचन्दजी चतुर्दशी को व्रत किया करते थे।

मनोकामना ....

छोटे लक्ष्मीचन्द जी म० के शारीरिक कष्ट के कारण सहमंत्री

श्री हस्तीमल जी म० सा० जोधपुर में ही विराजमान थे। उनके स्वास्थ्य सुधार होने से वे अब आगे की ओर विहार करने का सोच रहे थे किन्तु स्वामी जी म० हर समय यही फरमाते कि अब मेरे लिए अधिक समय नहीं है। स्वामी जी सहमंत्री जी को बहुत प्रेम और सम्मान की दृष्टि से देखते थे। कोई किसी कार्य के लिये आपसे आकर पूछता तो आप यही फरमाते कि "पूज्यजी जाणें"।

इसी हार्दिक स्नेह के कारण आपको उनकी संभावित जुदाई खटकने जैसी लगती और वे विहार का विरोध करते थे। समय २ पर आप अपने प्रेमीजनों से कहा करते कि "मांरो चालणो फिरणों बन्द न होजाय तथा पूज्य जी लम्बो विहार कर पंजाब कानी न चले जांय" इस प्रकार शरीर का पंगु न हो जाना एवं पूज्य श्री का विहार न कर जाना ये दो कामनायें आपके अन्तर्मन में घर बनाये बैठी थीं। अन्तिम समय में एक दिन थण्डिल जाते समय आपने पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० को चेताया कि तुम पूज्य श्री से कहो कि वे यहां से विहार न करें और यह भी कहना कि मैं भी तो पू० शोभाचन्द जी म० के स्थिरवास विराजते समय ५ वर्ष तक जोधपुर में ही रहा था। अपने अन्त समय में पूज्य श्री का पास होना उनकी सबसे बड़ी कामना थी जो सुदैव से सफल भी हुई।

महायात्रा के मार्ग में....

माघ कृष्णा चतुर्दशी को आपने उपवास किया और थण्डिल

के लिये दूर भूमि की ओर चले। रेजीडेन्सी की सड़क से आगे पधारने पर पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० भी पानी लेकर पहुँच गये स्वामी जी अपने आवश्यक कृत्य से निवृत्त होकर मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० से बोले कि तुम जल्दी चले जाओ क्योंकि आज चतुर्दशी होने से भाई बहनों की संख्या विशेष होगी अतः चौगान में व्याख्यान की व्यवस्था कराना। मैं पीछे से आजाऊंगा। आदेश के अनुकूल मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी म० आगे बढ़े। चौगान में स्थान अनुकूल न होने के कारण, व्याख्यान पुरानी जगह में ही रक्खा गया।

पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० ने प्रवचन फरमाया पश्चात् सहमंत्री जी म० ने। इस तरह ११ बजे तक यह व्याख्यान चलता रहा। स्वामी जी अन्त तक एक आसन से पाट पर विराजे रहे। व्याख्यान के बाद १२ बजे का नित्य नियम किया। मध्याह्न में शास्त्र वांचन में विराजे। श्री जीवाभिगम सूत्र का वांचन चल रहा था और आप मनोयोग पूर्वक श्रवण कर रहे थे। करीब ३ बजे मुनि श्री ने वांचना बन्द की एक सूत्र का थोड़ा सा अंश शेष रहता था जिसको आपने उसी क्षण पूरा करवाया।

दिन में कौन २ आया और गया आदि बातों की आपने पूछं-ताछ की तथा सारा काम पूर्ववत् व्यवस्थित ढंग से करते रहे। भण्डारी विवेकचन्द जी के यहां से महाप्रभावी नवस्मरण की पुस्तक लाये थे जिसे तल्लीनता के साथ दिन के अन्तिम क्षण तक पढ़ते रहे। चौविहार उपवास था सायं प्रतिक्रमण किया एवं पक्खी की क्षमापना की।

रात के ६ बजे आपने अपने प्रिय शिष्य पं० मुनि श्री लक्ष्मी चन्द जी म० को शयन की आज्ञा दी। १० बजे रात में आपकी सन्निधि व सेवा में रहने वाले सन्त श्री माणक मुनि जी ने आकर क्षमापना की। स्मरण, भजन एवं नित्य पाठ करके रात्रि में ११ बजे के करीब आप शान्ति पूर्वक सो गये।

किसे पता था कि स्वामी जी का यह मिलन और शयन अब अन्तिम है। रात्रि में करीब ३॥ बजे सांस के गुर्राटे की आवाज आई, जिसे पास के जगे सत ने निद्रा का गुर्राटा समझा। थोड़ी ही देर में हिचकियां आने लगीं। प० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० ने सिर में हाथ लगाया और करुणार्द्र हृदय से महाराज! महाराज! आवाज दी। मगर महाराज तो अब यहां से नाता तोड़ दूसरे लोक की ओर प्रयाण कर रहे थे। श्री रतनमुनिजी ने जाकर सहमंत्रीजी म० को मालूम कराया। उन्होंने आकर नाड़ी देखी और अन्तिम काल समझ कर महामत्र, चार मंगल, चार शरणा व अठारह पाप आदि के आवश्यक पाठ सुनाये। करीब चार बजे सबकी आशा को धूमिल कर श्रमण-संघ के महास्थविर परमधाम पधार गये।

चतुर्दशी होने के कारण मुख्य २ श्रावक पौषध में थे, वे सब भी जाग्रत होगये और डा० कल्याणमल जी लोढा को बुलाया गया। उन्होंने आकर नाड़ी देखी और कहा अब इनमें स्वामी जी कहाने वाला चैतन्य-जीव नहीं है, केवल शव शेष है। इस प्रकार अन्तर्बाह्य निर्मल आचार विचार वाले इस महामानव ने बिना कुछ

चिर निद्रा में मग्न

स्वामी जी श्री सुजानमलजी म०

स्वर्गवास के पश्चात्

अर्थी में

क्लेश पाये, उपवास धारण किये, चतुर्दशी जैसी पवित्र तिथि में यह जीवन लीला समाप्त कर परलोक को प्रयाण कर दिया।

"कर्तव्य का पता मरण काल में चलता है।" इस कहावत के अनुकूल प्रबल पुण्य से बिना कहे ऐसा शुभ संयोग मिला कि पूज्यश्री भी अन्तिम सेवा में साथ रहे और शारीरिक स्थिति भी अन्तिम अवस्था तक निराबाध और कार्यक्षम बनी रही।

अन्तिम दर्शन और शवयात्रा.....

बिजली की तरह यह खबर पल भर में सर्वत्र फैल गई। जिस ने जहां सुना वह वहीं से दौड़ पड़ा। शहर महामन्दिर, सरदारपुरा सोजतिया गेट, नागौरी दरवाजा में रहने वाले भाई बहन झुन्ड के झुन्ड अन्तिम दर्शन और शवयात्रा में शामिल होने को उपस्थित होने लगे। आपके विराजने से जोधपुर एक तीर्थ धाम सा बना हुआ था और बराबर धार्मिक चहल पहल बनी रहती थी। अतएव आपके प्रेमी भक्त आपके निधन समाचार से बज्राघातवत् पीड़ित हुए। लोग आश्चर्य कर रहे थे और कह रहे थे कि कल ही हमने स्वामी जी के दर्शन किये, उनके मुखारविन्द से मांगलिक सुनी एवं धर्म चर्चायें की और आज उनका अचानक स्वर्गवास कैसे होगया। स्थविर मुनि श्री बक्तावरमल जी म० श्री चांदमल जी म० सूर्योदय होते ही कांकरिया भवन पहुँच गये। शहर में रहने वाली सतियां श्री अनोपकुंवरजी, श्री गोगाजी, श्री बदनकुंवर जी, श्री लाडकुंवर जी और श्री फूलकुंवर जी आदि प्रायः सभी सतियां पधार गयीं। शहर के जितने भी गणमान्य धर्मप्रेमी जन थे, सब एक एक कर

आगये और स्वामी जी का अन्तिम दर्शन कर साश्रुनयन आश्चर्य प्रगट करते कि मरण की गति भी विचित्र है। जो चन्द दिन पहले अपने उपदेश से लोगों को महालाभ प्रदान करते और प्रमादी को जागरूक और सचेष्ट करते थे, वे ही अभी महानिन्द्रा में सोये पड़े हैं और भक्तों की पुकार पर आंख नहीं खोलते। यह निश्चित है कि आयु के दलिक समाप्त होने व उसके साथ ही सांसों के तार टूटने पर कोई घड़ी-पल भी यहां नहीं रह सकता। कहावत भी है कि, तेल खूट बाती बुझी, होगया घोर अन्धार।

दाह क्रिया.....

जब सन्तों ने आपके शव को वोसराकर परिनिर्वाण कायोत्सर्ग किया। तत्पश्चात् श्रावकों ने अपनी क्रिया चालू की। प्रसिद्ध २ नगरों में तार व फोन के द्वारा आपके निधन की सूचना की गई। आपकी अर्थी को बड़े ही कलात्मक ढंग से सजाई गई। स्वर्ण मंडी पर जरी के दुपट्टे डालकर उसको रोचक और मनोरम बना खूब राजसी ठाठ में लोग श्मशान भूमि की ओर चले। आगे २ राजकीय बैन्ड अपनी स्वर लहरियों से वातावरण को सजीव बनाये चल रहा था और साथ में हजारों नरनारियों का भाव भींगा काफिला, यद्यपि स्वामी जी म० जरावस्था में दिवंगत बने थे किन्तु जोधपुर के लोगों का आपके प्रति चिरवास-जन्य जो आकर्षण और स्नेह-सना-प्रेम था वह आंखों से अश्रु बनकर ढुलक रहा था। सभी स्वामी जी के गुणों और विशेषताओं का वर्णन करते शोक सन्तप्त मानस से श्मशान भूमि की ओर धीरे २ पांव उठाते चल रहे थे।

सब में एक आन्तरिक उदासी और खोयापन का सा भाव प्रति-
'बिम्बित हो रहा था।

अर्थी के आगे २ पैसों की उछाल हो रही थी। स्वामी जी के निधन प्रसंग पर दान पुण्य के लिए करीबन १५०० रुपये इकट्ठे हुए थे जिनमें से कुछ तो उछाल में व अर्थी में खर्च हुए शेष दया दान खाते में लगा दिया गया।

श्मशान भूमि में चन्दन की चिता पर स्वामी जी का शव रक्खा गया जिसके अन्तिम दर्शन के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। विधिपूर्वक चिता जलाई गई और देखते ही देखते चिता ज्वाला बनकर धधक उठी और ऊपर की ओर लपटें उठने लगीं तथा भस्म बना दिया, स्वामी जी के औदारिक शरीर को। लोग उसकी मधुर स्मृति को दिल में बसाये श्मशान से अपने २ घरों को लौट चले।

वस्तुतः सन्तों का मरण भी एक महोत्सव ही होता है।

दीपावली

२६ । १० । ५६

उपसंहार

स्वामीजीम० का जीवन एक आदर्श जीवन था। किशोरावस्था से लेकर मरण पर्यन्त मन, वचन व शरीर से आपने किसी का भी अहित नहीं सोचा और न सांसारिक आकर्षणों के वशवर्ती बन कर मानवीय मान मर्यादा का ही भान भुलाया। कमल जैसे पानी में रह कर भी उससे अलग रहता है, वैसे आप संसार में रहते हुए भी, संसार से सर्वथा परे थे। आपका हृदय शारदीय नभ की तरह निर्मल और स्वच्छ था। हित की कड़वी बात कहने में भी आप जरा भी हिचकते नहीं थे और जिसे उचित समझते, उसे निस्संकोच प्रगट कर देते थे। यही कारण था कि भक्त जन आप को बावाजी, स्वामीजी आदि विविध नामों से सम्बोधित करते थे।

व्याख्यान देने की रुचि आप में निसर्ग से प्राप्त थी। स्तवन, भजन, लावनी, चौपाई आदि के कहने में आपको अपूर्व आनन्द आता था और इन प्रसंगों पर आप अन्तर से झूम झूम उठते एवं श्रोता वृन्द को भी झुमा देते थे। लोक भाषा में गभीर भावों को हृदयंगम कराने की कला में आप प्रवीण थे। आपकी मद मुस्कान, मंद स्वर संलाप तथा प्रसन्नताभरी भाव भंगिमा दर्शकों पर जादू सा असर डालती थी।

आपकी दिनचर्या और कार्य पद्धति प्रमाद से बिल्कुल अछूती थी। परिणत वय में स्थूल शरीर होते हुए भी आप आवश्यक काम को प्रसन्नता से पूर्ण किये विना विश्राम का नाम नहीं लेते थें। अगाध पांडित्य और शास्त्राभ्यास के विना भी आपकी आचार संहिता साधु और सराहनीय थी, तपस्या

करने में आपको सर्वाधिक आनन्द प्राप्त होता यही कारण था कि आप तपस्या पर बहुत जोर देते थे। आश्विन और चैत्र के ६ दिनों की आयंबिल साधना के साथ २ वर्ष में और भी कितने व्रतोपवास आप कर लिया करते थे।

आप दृढ लगन, उत्साही और परम-सेवाभावी संत थे। अन्तिम अवस्था तक आहार पानी लाने में आप कभी प्रमाद युक्त नहीं बने। यों तो सभी संतों के प्रति आपके हृदय में प्रेम पूर्ण स्थान था किन्तु अपने एकमात्र सुशिष्य पं० मुनि श्री लक्ष्मी-चन्द जी म० को आप हार्दिक प्यार करते थे। आपके ही सौजन्य और अनुकम्पा से पं० मुनि को यह ज्ञान ध्यान प्राप्त हो पाया। आपकी मिलन सारिता और सभाषण चातुरी का आदर निस्सन्देह सबको करना पड़ता था। वस्तुतः स्वामी जी एक ऐसी विभूति थे जिनकी याद और अभाव चिर दिनों तक श्रद्धालु भक्तों के खटकने योग्य बनी रहेंगे।

जोधपुर संघ ने स्वामी जी की जो अन्तिम सेवा की है, वह इतिहास के पृष्ठ पर सदा संस्मरणीय रहेगी। यद्यपि जोधपुर संघ के लिए यह कोई नयी बात नहीं क्योंकि इसके पहले भी पू० श्री दुर्गादास जी म० पू० श्री रत्नचन्द्र जी म० और पू० श्री शोभाचन्द जी म० आदि ज्योतिर्धर संत एवं सतियों की सेवा का सुअवसर उसे मिलता रहा है फिर भी स्वामी जी की सेवा में भी संघ ने कुछ कमी नहीं रखी। कांकरिया परिवार का तो कहना ही क्या जिसने स्वामी जी की सेवा में अपने निवास स्थान को धर्मशाला के रूप में परिणत कर दिया था।

दीपावली ३१-१०-५६

आपने कुल ६० चातुर्मास किये जो निम्नानुसार हैं—

जोधपुर १८, जयपुर ७, पाली ७, पीपाड ५, अजमेर ४, भोपालगढ़ ३, ब्यावर २, नागोर २, अहमदनगर २, उदयपुर २, रतलाम १, उज्जैन १, लासलगांव १, गुलेदगढ़ १, रायपुर १, सतारा १' रीया १, किशनगढ़ १, कुल ६० ।

पृ० ३ में—संशोधन

१–हरकचन्द जी आपके नाना और जवाहरमल जी श्रावणसुखा आपके मामा होते थे ।

२–भूरालालजी पटणी आपके भतीजे थे ।

३–कन्हैयालाल जी पटनी जिन्होंने आपको दीक्षा की अनुमति दी, आपके काका के बेटे भाई थे ।